Entrepreneurship MINDSET

शिक्षक निर्देशिका

कक्षा 12

Entrepreneurship MINDSET

एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट

शिक्षक निर्देशिका
(कक्षा 12)

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली -110024

ISBN: 978-93-93667-37-3

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

दिसम्बर 2021

3500 (प्रतियाँ)

प्रकाशित: राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

मुद्रित: चंदू प्रेस, नई दिल्ली–110092

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002
Email : msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. Dy CM/2021/258
Date : 09/11/2021

सन्देश

हम दिल्ली शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। इसी दिशा में 2019 में हमने एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम लॉन्च किया था। यह पाठ्यक्रम देश की शिक्षा के इतिहास में सबसे बड़े सुधारों में से एक है। देश ही नहीं, पूरी दुनिया में एंत्रप्रेन्योरशिप को लेकर इतना बड़ा प्रयोग कभी नहीं हुआ है। मुझे बेहद ख़ुशी है कि इस प्रयोग से हम सबने बहुत कुछ सीखा है। इस पाठ्यक्रम तथा 25000 अध्यापकों की मदद से रोज़ाना 6 लाख विद्यार्थी कक्षाओं में एंत्रप्रेन्योरशिप का अभ्यास कर रहे हैं। दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में इस पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों,अध्यापकों व प्रधानाचार्यों आदि का फ़ीडबैक भी शामिल किया जाए ।

एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम से देश की सबसे बड़ी समस्याओं का समाधान होगा। एक है बेरोज़गारी और दूसरी कमज़ोर अर्थव्यवस्था । देश की बेरोज़गारी दूर करने का एंत्रप्रेन्योरशिप ही एकमात्र कारगर और स्थाई तरीका है । जो युवा एंत्रप्रेन्योरशिप कार्यक्रम के बाद अपना ख़ुद का रोज़गार स्थापित करेंगे वे अपने लिए और दूसरों के लिए भी रोज़गार पैदा करेंगे । एंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का फ़ायदा उन युवाओं को भी होगा जो नौकरी की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं । जो युवा नौकरियाँ करते हैं उनमें ज़्यादातर दो प्रकार के होते हैं – एक वे जो नौकरियों के पीछे भागते हैं और दूसरे वे जिनके पीछे नौकरियाँ भागती हैं। जो युवा नौकरियों के पीछे भागते हैं, उनके पास योग्यता के तौर पर डिग्री तो होती है परन्तु एंत्रप्रेन्योर माइंडसेट का अभाव होता है। और यह गुण जिन युवाओं में होता है वे नौकरी को भी इसी माइंडसेट से अपनाते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। एम्प्लॉयर्स भी ऐसे ही वर्कर्स को सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं । इस पाठ्यक्रम की मदद से हमारे विद्यार्थी नौकरियों में भी अपार सफलता प्राप्त करेंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है ।

ईएमसी के अन्य महत्त्वपूर्ण भागों के साथ बिज़नेस ब्लास्टर्स 11वीं और 12वीं कक्षा के लिए ईएमसी का एक व्यावहारिक हिस्सा है। इससे हमारे छात्रों को टीम में काम करने, विचार-मंथन करने और सामाजिक चुनौतियों या व्यावसायिक अवसरों की पहचान करने, व्यावसायिक योजनाएँ तैयार करने और उनके विचारों को उनके आसपास लागू करने का अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रधानाचार्यों, अभिभावकों और विभाग के अधिकारियों को इस नवीन पहल के प्रति उत्साह दर्शाने और इसे लागू करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। इस अभ्यास को जारी रखने के लिए बधाई और शुभकामनाएँ ।

(मनीष सिसोदिया)

J8L6Z8

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

आज के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को किसी खास विषय में दक्षता हासिल करने के अलावा उन गुणों और जीवन कौशलों की भी आवश्यकता होती है जो भविष्य में उपयोगी हों और उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करें। शिक्षा प्रणाली के भविष्य और अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, हम वर्षों से ज़मीनी स्तर पर नवीन सुधारों की शुरूआत करके दिल्ली सरकार के स्कूलों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। स्कूलों में हैप्पीनेस पाठ्यक्रम की शुरूआत के साथ, एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में सुधारों की श्रृंखला में एक और क़दम जोड़ता है। इस पाठ्यक्रम की पाठ्य सामग्री 24 विद्यालयों में पायलट अध्ययन के साथ विद्यालयों में क्रियान्वित की गई। इस वर्ष भी इसे आगे बढ़ाते हुए, हम आशा करते हैं कि इससे विद्यार्थियों के एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट में बदलाव आएगा और वे चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए मज़बूती से तैयार हो सकेंगे।

शिक्षा प्रणाली से जुड़े रहने के कारण हमारा हमेशा से यही प्रयास रहता है कि विद्यार्थियों का समग्र रूप से विकास हो और वे समाज का उपयोगी हिस्सा साबित हों। हमें विश्वास है कि हमारे प्रयास अच्छे परिणामों में दिखाई देंगे। मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में सेकेंडरी एवं सीनियर सेकेंडरी स्तर पर एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम की कक्षाओं में हमें नया अनुभव मिला और बहुत कुछ सीखा।

बिज़निस ब्लास्टर्स प्रोजेक्ट ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के लिए ईएमसी का एक व्यावहारिक घटक है, जहाँविद्यार्थी seed money के साथ टीम में काम करने के लिए और वास्तविक जीवन में एन्त्रप्रेन्योरशिपमाइन्डसेट को लागू करके लाभ कमाने अथवा किसी सामाजिक समस्या को हल करने की ओर अग्रसर होते हैं।

टेक्नोलॉजी में तेजी से आए बदलाव के साथ हम समझ सकते हैं कि छात्रों के बीच एन्त्रप्रेन्योरशिपमाइन्डसेट को विकसित करना और उनकी क्षमताओं को पहचानना एक बड़ा उद्देश्यहै। शिक्षा के उद्देश्य को पूरी संवेदनशीलता और स्पष्टता से समझते हुए शिक्षा विभाग इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है।

हमने एक मज़बूत और समृद्ध समाज के निर्माण की दिशा में अपनी यात्रा शुरू की है। शिक्षा के क्षेत्र में इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए मैं अपने सभी छात्रों, शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को बधाई देता हूँ।

एच. राजेश प्रसाद

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel. : +91-11-24331356, Fax: +91-11-24332426
E-mail: dir12scert@gmail.com

Date : 1/11/2021

D.O. No. : 10(1)/DIR Corr/DPB/124

संदेश

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं है बल्कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में बुद्धि और कौशल का समग्र विकास करना है, जिससे वे जीवन में एक सफल और उम्दा इंसान बन सकें। शिक्षा के इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए 2019 में दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय के आदेश पर एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच विकसित की जा सके। विद्यार्थियों को बड़ा सोचने, नया रचने, योजना बनाने और उसे क्रियान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके ताकि वे जीवन में आने वाली हर चुनौती का दृढ़ता व साहस के साथ सामना कर सकें। वे आशावान, उत्साही, आत्मविश्वासी, समर्पित, आत्मप्रेरित व आत्मनिर्भर बन सकें।

निरंतर बदलती तकनीक के दौर में आज हमारे विद्यार्थियों को ऐसे गुणों, मूल्यों व कौशलों की आवश्यकता है जिनके बल पर वे न केवल अपने लिए नए रास्ते बना सकें बल्कि देश की उन्नति में भी सहायक बन सकें। चूँकि एस.सी.ई.आर.टी.में हम भविष्य की माँगों को समझते हैं, इसलिए EMC पारंपरिक शैक्षिक उपकरणों और शैक्षिक प्रणाली में बदलाव लाने वाला एक क्रांतिकारी क़दम है। इस पाठ्यक्रम की सबसे विशिष्ट बात यह है कि इसे अवलोकन और फ़ीडबैक के आधार पर पूर्णतया वैज्ञानिक तरीके से बनाने का प्रयास किया गया है। सभी विद्यालयों में लागू करने से पूर्व 24 विद्यालयों में इसका पायलट अध्ययन किया गया था।

ईएमसी के अंदर कई बेहतरीन घटकों में से एक बिज़निस ब्लास्टर्स 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह ईएमसी का एक ऐसा प्रोजेक्ट है जिसमें विद्यार्थी अवसर को पहचानेंगे, टीम के साथ मिलकर बजट बनाएँगे और अपने आइडियाज़ को लागू करेंगे। विद्यार्थी इसमें या तो कोई बिज़निस प्रोजेक्ट कर सकते हैं या किसी सामाजिक समस्या को हल करके प्रभावशाली बदलाव ला सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम को दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में लाने की पहल करने का श्रेय हमारे माननीय शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया को जाता है। वे भारत के प्रत्येक बच्चे को अपनी सोच और क्षमताओं को विकसित कर जीवन में आगे बढ़ता देखना चाहते हैं, ताकि हम सब मिलकर एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

आओ, हम सब मिलकर इस प्रयास को जारी रखें और अपने विद्यार्थियों में उत्साह और साहस का संचार करें।

रजनीश सिंह

Dr. Nahar Singh
Joint Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel. : +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date :

D.O. No. F.11(2)JDB/Acad/m/KSC/SCERT/2020/1

संदेश

हर रोज़ बदलती टेक्नॉलजी के दौर में आज हमारे बच्चों को ऐसे कौशल की आवश्यकता है जिनकी मदद से वे अपने लिए नए रास्ते बना सकें। अपनी उन्नति के साथ-साथ देश की प्रगति में सहायक हो सकें।

विद्यार्थी विषयों के ज्ञान के साथ उन कुशलताओं को भी प्राप्त कर सकें जो जीवन में उन्हें आगे ले जाने वाली हैं। वे आशावान, उत्साही, आत्मविश्वास से भरपूर, समर्पित, आत्मप्रेरित तथा आत्मनिर्भर बन सकें।

इसी उद्देश्य के साथ वर्ष 2019 में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जो विद्यार्थियों की सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक हुआ। इस पाठ्यक्रम के ज़रिए विद्यार्थी बड़ा सोचने, नया रचने, योजना बनाने व उस पर काम करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। वे यह भी सीखते हैं कि जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना साहस के साथ कैसे कर सकेंगे। यह पाठ्यक्रम शिक्षा जगत में क्रांति लाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम 24 विद्यालयों में पायलट करने के बाद ही सभी विद्यालयों में लागू किया गया था। पाठ्यक्रम के अवलोकन एवं उस पर आए फ़ीडबैक के आधार पर इसे पूर्णतया वैज्ञानिक तरीके से विकसित करने का प्रयत्न किया गया, और यही इसकी ख़ूबसूरती है।

इस पाठ्यक्रम को दिल्ली के सरकारी विद्यालयों में लाने की पहल करने वाले माननीय शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया की सोच यह रही है कि प्रत्येक बच्चा अनुभव के ज़रिए अपनी क्षमताओं के बारे में जाने, इनको विकसित करे और जीवन में आगे बढ़े।

आइए, हम सब मिलकर इस प्रयास को जारी रखते हुए अपने विद्यार्थियों में उत्साह और साहस का संचार करें।

डॉ. नाहर सिंह

प्रस्तावना

एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम (ईएमसी) तैयार करना और लागू करना मेरी ईएमसी टीम के लिए एक चुनौतीपूर्ण अनुभव रहा है। 2019 में शुरू किए गए इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हम उन सभी संभावनाओं को तलाशने की कोशिश कर रहे हैं जो हमारे छात्रों को उद्यमशीलता के अवसरों की पहचान करके और उनसे लाभ उठाकर व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास की तलाश करने में सक्षम बनाती हैं। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हमारी शिक्षा प्रणाली प्रत्येक छात्र को अपनी आंतरिक क्षमता के साथ-साथ अपनी प्रतिभा को पहचानने एवं उसे मजबूत करने और नए कौशल विकसित करने के लिए सक्षम बनाए । छात्रों को भी अपने व्यक्तित्व को निखारने में सक्षम बनाने, और मानवीय मूल्यों और सकारात्मक मानसिकता के साथ समृद्धि का मार्ग तैयार करने में समर्थ करे। एससीईआरटी ने ईएमसी के ज़रिए इन वांछनीय परिवर्तनों को शामिल करने का प्रयास किया है।

इस प्रक्रिया में हमने तमाम विषयों (themes) एवं उनसे संबंधित क्षमताओं की पहचान की, और उन्हें एक क्रम में रखा, ताकि 9 से 12 वीं कक्षा तक के विद्यार्थी इन क्षमताओं को एक निश्चित क्रम में पहचान सकें और उन्हें आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर सकें। EMC में 6 विभिन्न परस्पर संबंधित घटक हैं - माइंडफुलनेस, स्टूडेंट स्पेशल क्लास, बिज़निस ब्लास्टर्स, लाइव एंत्रप्रन्योर इंटरएक्शन, करियर एक्सप्लोरेशन और थीमैटिक यूनिट्स। प्रत्येक इकाई में छात्रों को प्रेरित करने के लिए एक सफल उद्यमी की कहानी है और विद्यार्थियों को विभिन्न उद्यमशील क्षमताओं के बारे में 'करके सीखने के लिए' 2-3 गतिविधियाँ हैं। पाठ्यक्रम को सरल भाषा में लिखा गया है, जिससे सभी के लिए सामग्री को आत्मसात करना और उसका अभ्यास करना आसान हो गया है।

2019 में पाठ्यक्रम को 24 स्कूलों में पायलट किया गया था और शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, पर्यवेक्षकों (आब्ज़र्वर्स) और अधिकारियों के फ़ीडबैक को पाठ्यक्रम को बेहतरीन बनाने और वैज्ञानिक तरीके से आगे बढ़ाने के लिए शामिल किया गया था। 2019-20 में कक्षा 9-10 और 11-12 के छात्रों के लिए क्रमशः 2 ईएमसी मैनुअल तैयार किए गए थे। शिक्षकों, विद्यार्थियों और अधिकारियों के फ़ीडबैक के आधार पर हमने 4 मैनुअल विकसित किए हैं; प्रत्येक कक्षा के लिए एक। माइक्रो रिसर्च प्रोजेक्ट में सुधार किया गया है और इसे करियर एक्सप्लोरेशन के रूप में दिया गया है। फ़ील्ड प्रोजेक्ट को बिज़निस ब्लास्टर के रूप में दिया जा रहा है और कक्षा 9-12 के लिए अलग-अलग मैनुअल भी तैयार किए गए हैं।

कोविड लॉकडाउन के दौरान, हमने काम को आगे बढ़ाने के लिए, उसे आगे बढ़ाने के साथ-साथ उसे मज़बूत करने के लिए ईएमसी को डिजिटलाइज़ किया। हमने ईएमसी वर्कशीट और वीडियो के रूप में विद्यार्थियों के साथ गतिविधियों को ऑनलाइन साझा करना शुरू किया; विद्यार्थियों ने गतिविधियां घर पर स्वयं कीं और उनमें अपने परिवारों को भी शामिल किया। एससीईआरटी के यू-ट्यूब चैनल पर जाने-माने उद्यमियों के साथ एलईआई सत्र आयोजित किए गए। सभी की प्रतिक्रिया अभूतपूर्व रही है।

बिज़निस ब्लास्टर्स कार्यक्रम कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है। शिक्षा निदेशालय ने विद्यार्थियों को उनके बिज़निस आइडिया पर काम करने, अवसर की पहचान करने, टीम के साथ बजट तैयार करने और आइडिया को लागू करने के लिए सीड मनी (seed money) प्रदान की है। विद्यार्थियों के पास या तो एक व्यावसायिक परियोजना हो सकती है, या वे स्थायी परिवर्तन के लिए किसी सामाजिक समस्या को प्रभावी तरीके से हल कर सकते हैं।

मैं इस पाठ्यक्रम पर उत्साहपूर्वक साथ-साथ काम करने के लिए सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और अपने सहयोगियों की आभारी हूँ। मैं उनके काम और इस प्रोजेक्ट की सफलता की कामना करती हूँ।

डॉ. सपना यादव
परियोजना निदेशक, ई.एम.सी.

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का उद्गम एवं विकास...

ईएमसी 9-12 कक्षाओं के विद्यार्थियों के अन्दर एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट को विकसित करते हुए, उन्हें अपने करियर-पथ की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार करता है एवं चिंतन के साथ-साथ अनुभवात्मक शिक्षा को नियोजित करता है। यह देखा गया है कि ईएमसी के संपर्क में आने वाले विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी संप्रेषक बन गए हैं, वे जोखिम और नई चुनौतियों का सामना करते हैं और अपने करियर विकल्पों के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं।

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम का लॉन्च फरवरी 2019 में हुआ था। इसके दूसरे संस्करण V2 पर मुझे खुशी और गर्व है कि मैं EMC फ्रेमवर्क के लॉन्च से लेकर वर्तमान स्वरुप तक इसके विकास क्रम को नीचे प्रस्तुत कर रही हूँ। यह क्रमिक विकास एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट के उसी अभ्यास को दर्शाता है जिस माइंडसेट को हमारे विद्यार्थियों में विकसित करना EMC का उद्देश्य है।

अप्रैल-मई 2019

वैज्ञानिक रूप से पायलट EMC संस्करण V1

EMC पायलट के लिए विभिन्न प्रकार के 24 स्कूल्स को चुना गया था। 9-12 वीं तक के पायलट स्कूलों से 300 कक्षाओं के संभावित ईएमसी टीचर्स को छोटे-छोटे समूह में पूरे दिन का अनुभवात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रत्येक EMC शिक्षक को 4 सप्ताह के दौरान अपनी-अपनी कक्षा में परिचय नामक गतिविधियाँ और एक थीमेटिक यूनिट करवानी थी। प्रत्येक थीमेटिक यूनिट को इस प्रकार वितरित किया गया था ताकि उन्हें हर प्रकार के स्कूल में करवाया जा सके। प्रत्येक विद्यालय में 2 मेंटर्स के हिसाब से 50 मेंटर टीचर्स को पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। जिसका फ़ीडबैक प्रत्येक सप्ताह लिया जाता था।

जून-जुलाई 2019

फीडबैक शामिल करते हुए 1000 से अधिक विद्यालयों में V1 लॉन्च किया गया

पायलट के दौरान मिले फीडबैक को संकलित करके उन पर चर्चा की गई थी। इसीके आधार पर फैसिलिटेटर मैनुअल के डिज़ाइन और उसकी सामग्री; दोनों को संशोधित किया गया।

शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों के साथ-साथ स्कूल-प्रमुखों के लिए अनुभवात्मक प्रशिक्षण(Experiential Trainings) आयोजित किया गया ताकि उन्हें पता चल सके कि ईएमसी में क्या और क्यों है।

सामूहिक ओरिएंटेशन के दौरान सभी ईएमसी टीचर्स को उनके 'फैसिलिटेटर मैनुअल' उपलब्ध कराये गए। इसके अलावा, मैंटर टीचर्स को गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया ताकि वे टीचर्स को छोटे-छोटे बैच में एक घंटे का ईएमसी ओरिएंटेशन दे सकें।

जुलाई-दिसंबर 2019

स्कूलों में EMC संस्करण V1 मॉनिटर किया गया।

1,000+ स्कूलों में यह नया पाठ्यक्रम शुरू करने के बाद, इसके ज़मीनी क्रियान्वयन का निरीक्षण करना ज़रूरी था। ज़िला और ज़ोनल कोऑर्डिनेटर्स एवं इनसे जुड़े मैंटर टीचर्स के साथ एक व्यवस्था स्थापित की गई। उनकी अवलोकन और फीडबैक का विश्लेषण और दस्तावेज़ीकरण किया गया था। इसके अलावा, एक तृतीय पक्ष (थर्ड पार्टी) स्वतंत्र अनुसंधान दल (IDInsight) ने यादृच्छिक (रैनडम) रूप से चुने गए 60 स्कूलों में 'व्यवस्थित प्रक्रिया मूल्यांकन अध्ययन' आयोजित किया, जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों और एचओएस का साक्षात्कार लिया गया। इससे हमें उनकी विस्तृत रिपोर्ट और उनकी संस्तुतियां प्राप्त हुई।

जनवरी-मार्च 2020

ईएमसी संस्करण V2 में फीडबैक शामिल किए गए

ज़मीनी फीडबैक और 'प्रक्रिया मूल्यांकन अध्ययन' की सिफारिशों के आधार पर, ईएमसी में कई उच्च-स्तरीय सुधार लागू किए गए -

- "ईएमसी क्या है?" इसके बारे में सरल एवं सिलसिलेवार संदेश
- सीखने के परिणामों और यूनिट्स की संरचना पर स्पष्टता
- EMC यूनिट्स का आकर्षक डिज़ाइन
- यूनिट्स का छोटा आकार, कक्षावार कम यूनिट्स
- विद्यार्थियों द्वारा संचालित सत्रों पर अधिक स्पष्टता
- 'करियर–एक्सप्लोरेशन' के लिए विस्तृत निर्देश (जिसे पहले माइक्रो रिसर्च प्रोजेक्ट' कहा जाता था।)

अप्रैल 2020

संस्करण V2 का ऑनलाइन परीक्षण

चूँकि लॉकडाउन के कारण स्कूलों में पायलटिंग नहीं की जा सकती थी, हमने ईएमसी टीचर्स द्वारा थीमेटिक यूनिट्स के विस्तृत ऑनलाइन परीक्षण को नियोजित किया ताकि क) समझने में स्पष्टता और आसानी हो, ख) कक्षाओं में लागू करने की क्षमता और ग) कहानियों, गतिविधियों और यूनिट्स से जुड़े उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के 114 टीचर्स और मैंटर टीचर्स ने विश्लेषण की प्रक्रिया में भाग लिया। निर्धारित दिशा-निर्देशों का उपयोग करते हुए प्रत्येक यूनिट्स का 3 अलग-अलग शिक्षकों के साथ परीक्षण किया गया था। उनके फीडबैक पर चर्चा की गई और उनके सुझावों को शामिल किया गया।

मई-जून 2020

ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण

यह सुनिश्चित करने के लिए कि टीचर्स और ईएमसी कोऑर्डिनेटर्स ईएमसी क्या, क्यों, और कैसे को समान रूप से समझते हैं, एक 'ऑनलाइन कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम' (OCBP)विकसित किया गया। इसमें प्रासंगिक सवालों के साथ अनेक छोटे-छोटे एनिमेटेड वीडियो शामिल थे जिनमें वक्ता द्वारा वर्णन भी किया जा रहा था। प्रशिक्षण के लिए 20,781 शिक्षकों ने नामांकन किया, जिनमें से 18,423 शिक्षकों (89%) ने प्रशिक्षण पूरा किया।

अप्रैल 2020 - फरवरी 2021

कोविड-19 के दौरान डिजिटल ईएमसी

अप्रैल 2020 - जून 2020
डिजिटल ईएमसी गतिविधियाँ

विद्यार्थियों को ईएमसी की थीम्स पर आधारित पोस्टर और 2 मिनट के वीडियोज़ लगातार आकर्षक गतिविधियाँ के साथ भेजे गए। कुछ विद्यार्थियों ने गतिविधियों को घर पर स्वयं किया और कुछ ने परिवार के सदस्यों के साथ। व्हाट्सएप के माध्यम से उन्होंने अपने शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजीं। डिजिटल ईएमसी वीडियो को 4,70,000 से ज़्यादा बार देखा गया और सैकड़ों शिक्षकों ने गर्व से अपने विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को साझा किया।

मई - जुलाई 2020
ईएमसी ऑनलाइन बूटकैंप

एन्त्रप्रन्योरशिप माइंडसेट को आगे बढ़ाने के लिए आठ संगठनों के सहयोग से एक 'ऑनलाइन समर बूटकैंप' का आयोजन किया गया। विभिन्न इंटरनेट चुनौतियों के बावजूद, 14 बैचों में 250 विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से इसमें भाग लिया। समूहों में प्रोजेक्ट्स प्रस्तुतियों के अलावा, प्रतिभागियों के लिए अपने अनुभव साझा करने के लिए एक प्रसारण कार्यक्रम (ब्रॉडकास्ट इवैंट) का आयोजन किया गया था। इसने आत्मविश्वासपूर्ण संचार (communication), रिस्क लेने और नई चुनौतीपूर्ण चीजों को आजमाने की उनकी क्षमता के पर्याप्त प्रमाण दिए।

अगस्त 2020 – फरवरी 2021
घरों पर ईएमसी वर्कशीट

जब शिक्षा निदेशालय ने सभी विद्यार्थियों को वर्कशीट भेजना शुरू किया, तो उनमें साप्ताहिक ईएमसी वर्कशीट भी शामिल की गई। V2 की गतिविधियों को घर पर करने के लिए उपयुक्त रूप से बनाया गया था। विद्यार्थियों ने पूरे की गई वर्कशीट अपने शिक्षकों के साथ साझा कीं। इस प्रक्रिया ने शिक्षकों को विद्यार्थियों पर ईएमसी के प्रभाव को समझने में मदद की। हमने 400 विद्यार्थियों के साथ "इंटरएक्टिव-वर्कशीट" का भी संचालन किया जिसके बहुत उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए।

अगस्त 2020 - फरवरी 2021
ऑनलाइन एलईआई (लाइव एंटरप्रेन्योर इंटरेक्शन)

2019-20 में कक्षाओं में 900 से ज़्यादा एलईआई के बाद, कोविड महामारी के दौरान एलईआई को डिजिटल कर दिया गया। अनेक एन्त्रप्रन्योर ऑनलाइन उपलब्ध थे, इसलिए हमने 'ज़ूम' पर विद्यार्थियों के साथ ऐसी 16 चर्चाओं का आयोजन किया। इन्हें यू-ट्यूब पर देख रहे कई हजार छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रसारित किया गया। हमने चर्चाओं के महत्वपूर्ण क्षणों को हाईलाइट करते हुए छोटे वीडियोज़ भी प्रकाशित किए। इन वीडियोज़ को यू-ट्यूब पर 4 लाख से ज़्यादा दर्शक यानी 'व्यूज़' मिल चुके हैं।

'बिजनेस ब्लास्टर्स' कार्यक्रम महामारी लॉकडाउन के दौरान SoSE खिचड़ीपुर के 40 विद्यार्थियों के साथ पायलट किए जाने के बाद, दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में सितंबर 2021 में कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी एन्त्रप्रन्योरियल स्किल विकसित करें और भविष्य में हमारे देश के विकास को सुनिश्चित करने के लिए नौकरी देने वाले बनें। 'बिजनेस ब्लास्टर्स' प्रोग्राम के तहत, प्रत्येक इच्छुक विद्यार्थी को एक नए बिजनेस आइडिया को लागू करने या पहले से मौजूद आइडिया को नए तरीके से लागू करने के लिए 2000/- रुपए की राशि (सीड मनी) मिलेगी। विद्यार्थी अपने नवाचार को आजमाने के लिए व्यक्तिगत रूप से या टीमों में काम कर सकते हैं। उन्हें ईएमसी वेबसाइट पर अपने नियमित खाते बनाए रखने की भी आवश्यकता होगी। अंत में एक 'एक्सपो-टाइप' प्रदर्शनी होगी, और सर्वोत्तम आइडियाज़ वाले विद्यार्थियों को बिना किसी प्रतियोगी परीक्षा के डीटीयू, एनएसयूटी, आईजीडीटीयूडब्ल्यू, जीजीएसआईपीयू जैसे शीर्ष विश्वविद्यालयों में सीधे प्रवेश मिलेगा। सभी ज़िलों में लगभग 90% पंजीकरण के साथ इस कार्यक्रम को उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है।

डॉ. सपना यादव
परियोजना निदेशक, ई.एम.सी.

विषयसूची Table of Contents

क्रम सं.	विवरण (Description)	पृष्ठ सं.
1	एन्त्रप्रेन्योर कौन है ? Who is an Entrepreneur?	1-6
2	EMC के मुख्य अंग Components of EMC	7-12
	विषयगत इकाइयाँ Thematic Units	
यूनिट-1	सहयोग Collaboration	13-21
यूनिट-2	जोखिम उठाना Take Risks	22-31
यूनिट-3	प्रभाव तथा जिम्मेदारी Impact and Responsibility	32-42
यूनिट-4	स्वयं की समझ Understanding Self	43-52
यूनिट-5	योजना बनाकर काम करना Plan and Execute	53-62
यूनिट-6	विश्लेषण करके सीखना Analyze and Learn	63-72
	अन्य घटक Other Components	
C-1	माइंडफुलनेस Mindfulness	73-78
C-2	स्टूडेंट स्पेशल Student Specials	79-84
C-3	करियर एक्सप्लोरेशन Career Exploration	85-92
C-4	उद्यमियों के साथ संवाद Live Entrepreneur Interactions	93
C-5	बिजनिस ब्लास्टर्स Busines Blasters	94

एन्त्रप्रेन्योर कौन है ?
Who is an Entrepreneur?

R2H3I4

जब भी हम कोई काम करते हैं तो हमारे काम करने के तरीके को दो तरह से देखा जा सकता है -

- ट्रेडिशनल माइंडसेट यानी परंपरागत सोच के साथ, किसी तरह का जोखिम उठाए बिना काम करना।
- एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी किसी बड़ी सोच के साथ, जोखिम उठाने की मानसिकता के साथ काम करना।

विद्यार्थियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी उद्यमशील सोच विकसित करने के लिए औपचारिक स्कूल शिक्षा की संरचना में ही अवसर विकसित करना हमारे देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक नवाचार है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में आगे बढ़ने से पहले हमें यह समझ लेना ज़रूरी है कि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है? आइए निम्न सवालों के द्वारा समझते हैं एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है-

एक एन्त्रप्रेन्योर और बिज़निस मैन में क्या अंतर है?

"सभी एन्त्रप्रेन्योर व्यापारी होते हैं लेकिन सभी व्यापारी एन्त्रप्रेन्योर नहीं होते।"

कुछ व्यापारियों में कुछ अलग प्रतिभा, कुछ अलग गुण होते हैं जो उन्हें एन्त्रप्रेन्योर की श्रेणी में खड़ा करते हैं। ये गुण क्या होते हैं, कौन-सी प्रतिभा किसी व्यापारी को एन्त्रप्रेन्योर की श्रेणी में खड़ा करती है? इस पर हम आगे विस्तार से बात करेंगे लेकिन पहले एक सामान्य व्यापारी और एक एन्त्रप्रेन्योर के बीच काम करने के तरीके के अंतर को समझने की कोशिश करते हैं -

- एक सामान्य व्यापारी किसी पुराने प्रचलित बिज़निस को उसके पुराने तौर-तरीकों से ही करने की कोशिश करता है और उसीसे मुनाफ़ा कमाने की कोशिश करता है। उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह जिस सामान या आइडिया का बिज़निस कर रहा है, वह उसका अपना है या किसी अन्य व्यक्ति का। जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर जिस सामान या आइडिया का बिज़निस करता है, वह स्वयं उसका निर्माता या रचयिता होता है। एन्त्रप्रेन्योर पुराने बिज़निस या आइडिया पर भी काम करता है तो पुराने तौर-तरीकों की जगह उसमें सुधार करते हुए व नए सिरे से जोखिम उठाते हुए उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करता है।
- एक सामान्य व्यापारी अपना काम मुनाफ़े को लक्ष्य बनाकर करता है जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर अपना लक्ष्य मुनाफ़े के साथ-साथ बदलाव को भी बनाता है। बदलाव का यह लक्ष्य बिज़निस करने के तौर-तरीकों से लेकर, आम लोगों के जीवन जुड़ी समस्याओं का हल निकालने तक, किसी में भी हो सकता है। बहुत बार एन्त्रप्रेन्योर विश्व की बड़ी समस्याओं में बदलाव करने का भी लक्ष्य बनाते हैं, जिसका उनमें एक जुनून होता है। ज़ाहिर है अपना पूरा तन-मन-धन निवेश करते वक्त मुनाफ़ा भी उसका एक लक्ष्य होता है। लेकिन वह एकमात्र लक्ष्य नहीं होता।

इसे एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं। मान लीजिए आपके पड़ोस में कोई व्यक्ति सब्ज़ी की नई दुकान खोलता है, तो इसमें न तो सब्ज़ी कोई नया सामान है और न ही सब्ज़ी की दुकान खोलना कोई नया आइडिया है। अगर यह व्यक्ति सब्ज़ी खरीदने वाले ग्राहकों की समस्या को समझते हुए (मसलन अच्छी पैकिंग में या

सब्ज़ी काटकर बेचना या फिर होम डिलीवरी आदि) उसका समाधान करने के विचार से अपना काम शुरू करता है तो निश्चित रूप से वह सामान्य बिज़निस मैन नहीं, बल्कि एक एन्त्रप्रेन्योर कहलाएगा। यह करने के लिए उसे कई तरह के जोखिम उठाने पड़ सकते हैं, जैसे किसी नई मशीन में निवेश करना या दुकान में अधिक संख्या में काम करने वाले लोग रखना। इन आर्थिक जोखिमों के अलावा यह भी खतरा हो सकता है कि उसका आइडिया काम न करे और उसे नुकसान भी हो जाए। पर इन सबके बावजूद भी, अगर वह यह काम करने का निर्णय लेता है तो वह एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ काम करने वाला व्यक्ति कहलाएगा।

इसे एक और उदाहरण से समझते हैं। मान लीजिए कोई व्यक्ति एक लोकप्रिय पिज़्ज़ा (pizza) कंपनी की फ्रैंचाइजी लेकर रेस्टोरेंट खोलता है। अगर वह अपना रेस्टोरेंट कनॉट प्लेस में खोलता है जहाँ पर पहले से ही हज़ारों लोग रोज़ाना खाना खाने के लिए आते हैं तो वह एक ट्रेडिशनल माइंडसेट के साथ काम करने वाला बिज़निस मैन होगा। अगर वह कनॉट प्लेस में ही एक नए तरीके से तैयार, नए स्वाद के पिज़्ज़ा की अपनी ब्रॉंड शुरू करता है, वह एन्त्रप्रेन्योर कहलाएगा। लोग उसे पसंद करेंगे या नहीं, इस जोखिम के बावजूद, विश्लेषण करके वह लोगों को एक नए तरीके का स्वाद देने के अपने जुनून पर तन-मन-धन लगाकर काम करता है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बड़ा विषय है, लेकिन ऊपर दिए गए दो उदाहरण मोटे तौर पर ट्रेडिशनल माइंडसेट और एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट (परंपरागत सोच और उद्यमशील सोच) के बीच अंतर समझने में हमें मदद कर सकते हैं। एक ट्रेडिशनल माइंडसेट का व्यापारी अपने व्यापार में घाटे के डर से कोई जोखिम नहीं लेता। अगर लेता भी है तो बहुत नापतोल कर ही लेता है। जबकि एक एन्त्रप्रेन्योर की पूरी सोच ही किसी समस्या के समाधान के लिए कुछ नया करके देखने के जोखिम पर आधारित होती है। एक सामान्य व्यापारी हमेशा दूसरे व्यापारी के साथ आगे बढ़ने की प्रतियोगिता में शामिल रहता है लेकिन एक एन्त्रप्रेन्योर खुद के साथ भी प्रतियोगिता में रहता है। वह हमेशा अपने वर्तमान से आगे बढ़कर बेहतर कुछ करना चाहता है।

यहाँ इस तथ्य को समझ लेना ज़रूरी है, कि एन्त्रप्रेन्योर और बिज़निस मैन के बीच कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है। उपरोक्त अंतर को समझते हुए कहीं हम मन में यह धारणा न बना लें कि ट्रेडिशनल बिज़निस मैन के मुकाबले एन्त्रप्रेन्योर होना कोई बहुत बड़ी बात है। समाज में ट्रेडिशनल बिज़निस मैन की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी एन्त्रप्रेन्योर की। एक एन्त्रप्रेन्योर किसी नए सामान्य विचार पर काम करके उससे आगे बढ़ जाता है और ट्रेडिशनल बिज़निस मैन उच्च विचार या सामान के व्यापार को आगे चलाने में भूमिका निभाता है। दोनों ही समाज के लिए आवश्यक हैं क्योंकि दोनों अलग-अलग तरीकों से समाज में योगदान देते हैं।

एन्त्रप्रेन्योर कौन होता है, और कौन नहीं होता है?

ऊपर दिए गए संदर्भ के आधार पर अब हम कह सकते हैं कि एन्त्रप्रेन्योर वह व्यक्ति होता है जो नए तौर-तरीकों के साथ अपना व्यापार करता है। उसके व्यापार करने के पीछे एक सोच होती है, एक विज़न होता है। अपने व्यापार के ज़रिए वह लोगों के जीवन पर प्रभाव डालता है, उनकी समस्या का समाधान उपलब्ध करवाता है। वह कुछ नया करते हुए असफल होने के विचार से नहीं डरता बल्कि जोखिम उठाते हुए सफल होने की कोशिश करता है। अगर उसका कोई प्रयास या योजना सफल नहीं भी होती है तब भी वह अपने बड़े उद्देश्य को ध्यान

ध्यान में रखते हुए, नुकसान उठाते हुए भी नए सिरे से सफल होने के प्रयास में लगा रहता है।

हम किसी ऐसे व्यक्ति को, जो भले ही अपना व्यापार करता हो और अपने व्यापार में सफल भी हो, एन्त्रप्रेन्योर नहीं कहेंगे जिसके लिए काम करने का उद्देश्य केवल आजीविका चलाने या मुनाफ़ा कमाने तक सीमित रहता है और अपनी या लोगों की समस्याओं का समाधान खोजना उसकी मुख्य प्रेरणा नहीं होती। वह असफलताओं से डरता है और छोटी-मोटी असफलताओं से निराश होकर अपनी महत्त्वपूर्ण और महत्त्वाकांक्षी योजनाओं तक को छोड़ देता है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट और एन्त्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा में क्या अंतर है?

एन्त्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है - विद्यार्थियों को व्यापार के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा देना। जैसे नफ़ा-नुकसान का हिसाब-किताब रखना, व्यापार को बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनाना, मार्केटिंग, कस्टमर सर्विस इत्यादि।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है - विद्यार्थियों के अंदर कुछ नया करने या नए तरीके से करने की सोच पैदा करना। उनके अंदर समस्याओं और चुनौतियों के नए समाधान खोजने की जिज्ञासा पैदा करना और उस समाधान पर काम करने का आत्मविश्वास पैदा करना, असफलताओं और चुनौतियों के बावजूद अपने उद्देश्य पर डटे रहने की हिम्मत पैदा करना और हमेशा नया सीखते रहने की जिज्ञासा के साथ नेतृत्व के गुण विकसित करना।

हम एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में उन गुणों का विकास करेंगे जिससे वे जो भी करें एक एन्त्रप्रेन्योर की तरह करें।

एन्त्रप्रेन्योर होने और एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट वाले व्यक्ति होने में क्या अंतर है?

अभी तक यह स्पष्ट हो गया है कि एन्त्रप्रेन्योर होने का अर्थ है - एक ऐसा व्यक्ति जो अपना व्यापार करता है लेकिन नई सोच, नए तरीके के साथ जोखिम उठाते हुए। जबकि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से तात्पर्य व्यक्ति के सोचने और जीने के तरीके से है, भले ही वह कोई व्यापार करता हो या फिर कोई नौकरी या अन्य काम करता हो।

यह ज़रूरी है कि हर एन्त्रप्रेन्योर में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट होगा, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त हर व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योर ही होगा।

किस आधार पर कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त है या नहीं?

किसी व्यक्ति के एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त होने की पहचान उसके सोचने और काम करने के तरीके से ही हो सकती है। भले ही व्यक्ति कोई नौकरी करता हो या व्यापार करता हो, अगर वह काम करने से पहले नए सिरे से सोचने और नए तरीके अपनाने का अभ्यास करता है, अपनी सोच और अपने नए तरीकों के प्रति आत्मविश्वास से भरा रहता है, उनके असफल होने से डरता नहीं है। समस्याओं और चुनौतियों का समाधान खोजना और उन पर काम करना उसे प्रेरित करता है, और उसके काम करने का तरीका लोगों के जीवन को प्रभावित करता है, उनकी समस्याओं को कम करता है या उन्हें कुछ नया उपलब्ध कराता है।

इस पाठ्यक्रम में हमने बहुत-से ऐसे व्यापारियों की कहानी शामिल की हैं जिन्होंने अपनी सोच और अपने काम के दम पर न सिर्फ़ अपने जीवन में सफलता हासिल की है बल्कि लोगों को बहुत-कुछ नया और उपयोगी दिया है। वे सब सफल व्यापारी होने के साथ-साथ एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यापारी भी हैं। इन सबने जब नया सोचना या नया काम करना शुरू किया तो उस वक़्त इनकी सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। बहुत लोगों के पास अनुभव या बहुत पैसा भी नहीं था लेकिन फिर भी अपने आत्मविश्वास और सोच के दम पर आज वे सफल एन्त्रप्रेन्योर हैं।

एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति में और एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति में क्या अंतर है?

कई बार हम देखते हैं कि बहुत-से लोग एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के अभाव में अपने हालात से आगे सोच नहीं पाते, रिस्क लेने से डरते हैं और इसीलिए अपनी क्षमता तथा प्रतिभा से कम नौकरी या व्यापार से ही संतोष कर लेते हैं। एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति के पास डिग्री या डिप्लोमा हो सकते हैं, अच्छी नौकरी हो सकती है या सफल व्यापार भी हो सकता है लेकिन यह भी संभव है कि वह अपनी प्रतिभा को ठीक से समझ न पाया हो या तलाश कर पाने के बावजूद उसके अनुरूप कार्य या सफलता प्राप्त न कर पाया हो।

वहीं एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपनी प्रतिभा को तथा अपने व्यक्तित्व के मज़बूत पक्षों को पहचानता है। वह कुछ नया करने के लिए असफलता के डर से घबराता नहीं है। वह विश्लेषण पर आधारित निर्णय ले सकता है। वह परिस्थिति के अनुसार अपने में बदलाव लाने को तैयार होता है, समस्याओं से परेशान होने की बजाए गहन सोच से, सहयोग लेकर, अपने लिए नए अवसर बना लेने का विश्वास रखता है, जैसा कि हम शिव नादर की कहानी पढ़कर जानेंगे। एक एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपने करियर में सफलता के साथ ईमानदारी और नैतिकता का भी ध्यान रखता है।

क्या एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बिज़निस मैन में ही होना चाहिए या फिर नौकरी करने वाले व्यक्ति के लिए भी इसकी कोई उपयोगिता है?

अब तक की बातचीत से हमने जो समझा है, वह सिर्फ़ व्यापारियों पर लागू नहीं होता। एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट नौकरी पेशा लोगों के लिए भी उतना ही ज़रूरी है। इसे समझने के लिए व्यापारियों के साथ कुछ ऐसे लोगों के उदाहरण को भी समझते हैं जो किसी कंपनी या सरकार में नौकरी करते हुए भी एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ कार्य करते हैं। वे अपना काम पूरी लगन के साथ रचनात्मकता तथा सहयोग से करते हैं। टीम को अपनी ताकत बनाकर उसे प्रोत्साहित करते हैं। वे उसी कार्य व्यवस्था में कुछ नया तथा सफलतापूर्ण कर पाते हैं जिसमें अन्य लोग बाधाओं तथा सीमाओं (Limitations) की समस्याओं में उलझकर रह जाते हैं। वे सीमाओं से परेशान होने की बजाय उनमें हल निकालते हैं। इस तरह वे अपने काम से लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं।

दिल्ली में ही इसका सबसे बड़ा उदाहरण मेट्रो मैन श्रीधरन हैं, जिनका ज़िक्र हमारे इस पाठ्यक्रम में आगे है। वे व्यापारी नहीं थे लेकिन उनकी नई सोच, काम करने के नए तरीके और हिम्मत ने ऐसा काम करके दिखा दिया जो कोई और इंजीनियर शायद कभी सोच भी न सका हो।

हमारे आसपास ऐसे बहुत-से उदाहरण हैं जैसे कोई आई. ए. एस. अधिकारी अपने एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपने विभाग का हुलिया ही बदल देता है और लोगों की समस्याएँ अचानक गायब ही हो जाती हैं। अनेक कंपनियों में भी कई लोग विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर हैं जो एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपनी कंपनी को कहाँ का कहाँ पहुँचा देते हैं।

हम अपने शिक्षा विभाग में ही देख सकते हैं जहाँ बहुत सारे शिक्षक या विद्यालय-प्रमुख पढ़ाने या स्कूल चलाने में अपने एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत ऐसा काम करते हैं जिससे न सिर्फ़ उनके विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिलती है बल्कि उनके काम करने की सोच और तरीके से अन्य शिक्षकों और विद्यालय-प्रमुखों को भी प्रेरणा मिलती है।

ऐसे कुछ लोगों को याद करते हुए हम सोच सकते हैं कि ये कौन लोग होते हैं, ये कैसे काम करते हैं? क्यों उनका काम आज भी लोग याद करते हैं और उनसे प्रेरणा लेते हैं?

अगर हम गहराई से पड़ताल करेंगे तो देखेंगे कि ऐसे लोगों ने पढ़ाने में, स्कूल चलाने में न सिर्फ़ नए तरीके अपनाए बल्कि जोखिम भी उठाए होंगे। हो सकता है उन्होंने पाठ्यक्रम से बाहर या परंपराओं से अलग हटकर बच्चों को पढ़ाने की कोशिश की हो जिससे बच्चों को उनके विषय बेहतर समझ में आने लगे हों। उन्होंने सीमितताओं से परेशान होने की बजाय गहन सोच तथा रचनात्मकता का प्रयोग करते हुए उनके हल निकाले हों। जोखिम उठाना, समस्या का हल निकालना, रचनात्मकता से कार्य करना - ये सब एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के गुण हैं और हर कार्य-क्षेत्र में उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण हैं- चाहे वह नौकरी हो या कोई अन्य व्यवसाय।

एक नौकरी करने वाले व्यक्ति के काम करने के तरीके को किन परिस्थितियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की श्रेणी में रखा जा सकता है?

जब किसी कार्य-व्यवस्था में कुछ लोग कार्य न कर पाएँ परंतु वहीं कोई अन्य व्यक्ति कार्य को प्रभावशाली रूप से कर दे, कुछ लोग सीमाओं तथा समस्याओं में बँधकर रह जाएँ, वहीं अन्य लोग उनमें रचनात्मक हल निकालकर, अपने साथ अपनी टीम की भी क्षमताओं को संगठित रूप से प्रयोग करके सफल हों तो हम मान सकते हैं कि नौकरी करने वाले व्यक्ति एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के तरीके से कार्य करते हैं।

इसका एक उदाहरण हमने श्री० ई० श्रीधरन के रूप में जाना। उन्होंने कोंकण रेलवे तथा मेट्रो रेल में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट का प्रयोग करते हुए कार्य में आने वाली बाधाओं का पूर्वानुमान करते हुए उन्हें दूर करने के हल निकाले तथा कार्य को निर्धारित समय सीमा से पहले पूरा किया।

हम अन्य क्षेत्रों से भी उदाहरण देख सकते हैं। जब किसी पिछड़े ज़िले में एक आई. ए. एस. महिला अफ़सर वहाँ के सरकारी अस्पताल की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए वहीं अपने बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेती है, तब वह जोखिम उठाती है। पर उसके बदले में वह पूरे ज़िले के लोगों का विश्वास सरकारी तंत्र में मज़बूत करती है। वह यह जोखिम बिना सोचे-समझे नहीं उठाती। इसके पीछे दूरदर्शिता के साथ कई महीनों की मेहनत भी होती है। पब्लिक हेल्थ सिस्टम में विश्वास के अभाव की समस्या को समझना और उसके लिए बिल्कुल नया, जोखिम भरा क़दम उठाना-एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से ही संभव है।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट किसी भी कार्य-क्षेत्र में बाधाओं से ऊपर उठकर कार्य करने के तरीके को प्रभावशाली बनाकर सफलता को सुनिश्चित करता है। इसीलिए दिल्ली सरकार शिक्षा विभाग की ओर से यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विकसित करने के लिए कक्षा चलाई जाएँ जिससे कि वे अपने जीने के तरीके में ही एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट को सम्मिलित कर पाएँ।

EMC के मुख्य अंग
Main Components of EMC

B6Q1M9

जैसा कि "एन्त्रप्रेन्योर कौन है?" प्रकरण में हमने देखा, एन्त्रप्रेन्योर (उद्यमी) की तरह सोचना व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ हमारे निजी जीवन में भी काम आ सकता है। निराशा का डटकर सामना करना, अपनी रुचियों को जानना और उन्हें निखारना, कुछ नया करने का साहस करना, ये सभी क्षमताएँ एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से सीखकर हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को भी ज़्यादा सकारात्मक होकर जी सकते हैं।

एन्त्रप्रेन्योरियल (उद्यमशील) क्षमताओं के इस विस्तृत दायरे को ध्यान में रखकर ही एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम की रचना की गई है, जिससे कि विद्यार्थी भविष्य के लिए अपने चुने हुए व्यवसायों और निजी जीवन, दोनों में ही सफल हो सकें।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट के लिए 7 मुख्य क्षमताओं को विकसित करना ज़रूरी है

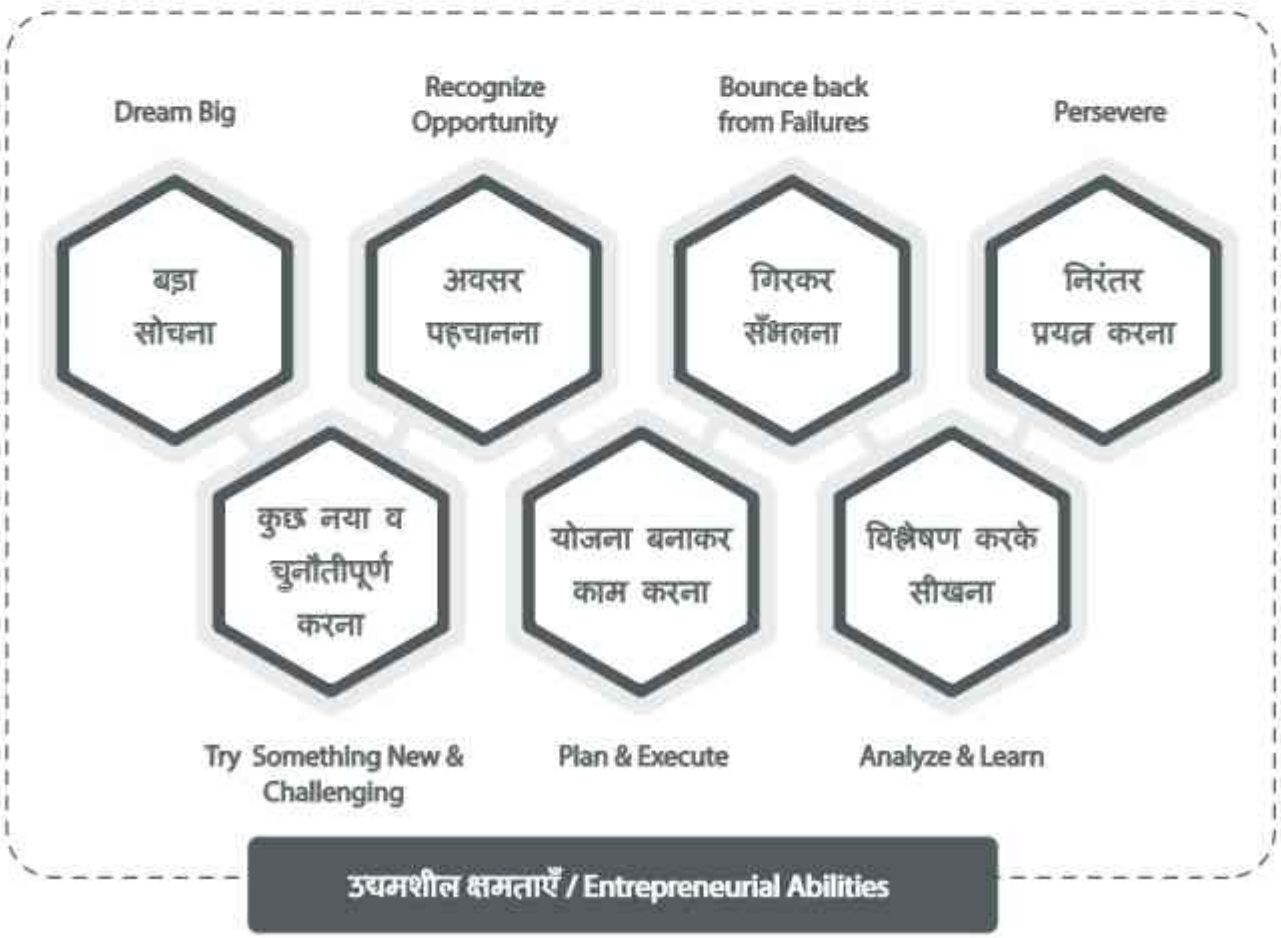

उद्यमशील क्षमताओं को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम इनसे जुड़ी हुई मूलभूत क्षमताओं एवं गुणों पर काम करें। उदाहरण स्वरुप देखें तो-

- कुछ नया और चुनौतीपूर्ण करने में आत्मविश्वास होना और अपने अंदर छिपे डरों का सामना करना बहुत ज़रूरी है।
- अवसर पहचानने के लिए बारीकी से अवलोकन करना, समानुभूति के साथ परिस्थिति को समझना, और गहन सोच से विश्लेषण करके हल निकालना आवश्यक है।

इसी तरह एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के लिए ज़रूरी क्षमताएँ एवं गुण निम्न सूची में दिए गए हैं जिन्हें पाठ्यक्रम के विभिन्न अंगों द्वारा विद्यार्थी अनुभव करके सीखेंगे

मूलभूत क्षमताएँ / Foundational Abilities		प्रमुख गुण / Key Qualities	
Critical Thinking	गहन सोच	Creativity	सृजनात्मकता
Communication	संचार	Curiosity	उत्सुकता
Collaboration, Teamwork	सहयोग, टीम वर्क	Empathy	समानुभूति
Decision Making	निर्णय लेना	Joyfulness	ख़ुशी
Drive / Adapt to Change	बदलाव लाना/अपनाना	Manage Fears	डर का सामना
Ideate	विचार मंथन	Mindfulness	सचेतनता
Integrity & Ethics	ईमानदारी व नैतिकता	Observation	अवलोकन
Problem Solving	समस्या सुलझाना	Self Awareness	स्वयं को जानना
Reflect, Analyze	चिंतन, विश्लेषण	Self Confidence	आत्मविश्वास

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम कैसे सिखाया जाएगा?

प्रक्रिया

जैसे कि आपने क्षमताओं एवं गुणों की सूची को देखकर समझा है, यह ज़रूरी है कि विद्यार्थी इन्हें अनुभव करके सीखें न कि सिर्फ़ पाठ्यपुस्तक पढ़कर। **जब तक विद्यार्थियों को इन क्षमताओं का अभ्यास करने के मौके नहीं मिलेंगे, तब तक उनके लिए ये क्षमताएँ सूचना के स्तर पर ही रहेंगी। विद्यार्थी इन्हें अपने जीवन से जोड़कर देख पाएँ और अपने भविष्य में इनका इस्तेमाल कर पाएँ, इसके लिए इस पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से अनुभव से सीखने (expereintial) की शैली में बनाया गया है।**

EMC के लिए प्रतिदिन समय-सारणी (time table) में एक पीरियड निर्धारित किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन क्षमताओं को अगर आदत में बदलना है तो इसके लिए नियमित अभ्यास की ज़रूरत होगी।

अनुभव से सीखने के विभिन्न आयाम हो सकते हैं। इसे विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहरी दुनिया से जुड़कर, दोनों ही तरह से सीख सकते हैं। ध्यान सिर्फ़ इस बात का रखा जाना चाहिए कि दोनों ही संदर्भों में विद्यार्थियों को स्वयं कुछ करके देखने के मौके मिलें। वे सिर्फ़ सुनकर या देखकर न सीखें। अनुभव से सीखने में 2 प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण हैं-

अनुभव (Expereince) - खुद करके देखना - व्यक्तिगत रूप से या अपने साथियों के साथ मिलकर गतिविधि करना, उसके बारे में सवाल पूछना, खुद करके जवाब ढूँढना और अपनी समझ बढ़ाना।

चिंतन (Reflection) - अनुभव के बारे में सोचना - गतिविधि कर लेने के बाद उस अनुभव से जो सीखा, अपने अवलोकन, सवाल आदि के बारे में चिंतन करना और उनके आधार पर नए अनुभवों के लिए खुद को तैयार करना।

इन दोनों के अलावा इस पाठ्यक्रम में **विद्यार्थी दूसरों से प्रेरणा लेकर भी सीखेंगे।** जैसे कि उद्यमियों की कहानियाँ सुनना और उनसे मिलकर उनकी यात्रा को गहराई से समझना।

उदाहरण

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी

- **उद्यमियों का इंटरव्यू लेकर** उनकी यात्रा को समझेंगे और साथ ही साथ अपने आत्मविश्वास, संचार, और नए लोगों से बात करने में लगने वाले डर आदि क्षमताओं पर काम करेंगे। यह स्वयं अनुभव करने और प्रेरणा से सीखने - दोनों का माध्यम है।
- **मैनुअल (manual) में दी गई गतिविधियों को स्वयं करके प्रॉब्लम सोल्विंग** (problem solving), क्रिटिकल थिंकिंग (critical thinking), पहल करना (taking initiative) आदि क्षमताओं को विकसित करेंगे।

इंटरव्यू और गतिविधि कर लेने के बाद विद्यार्थी अपने साथियों के साथ मिलकर अपने अनुभव पर चिंतन करेंगे, जिससे उन्हें अपनी क्षमताओं, अपनी रुचियों, स्वयं के बारे में सकारात्मक और सुधारने योग्य बिंदुओं की वास्तविक जानकारी मिलेगी।

अनुभव और चिंतन, ये दोनों प्रक्रियाएँ अनुभव से सीखने के लिए ज़रूरी हैं। सिर्फ़ करके देख लेना अनुभव से सीखने के लिए काफ़ी नहीं है। विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहर, दोनों ही जगह कुछ गतिविधियाँ करेंगे और फिर उस अनुभव के बारे में चिंतन करके न सिर्फ़ उद्यमशील क्षमताओं को समझेंगे बल्कि उन क्षमताओं का जीवन में उपयोग करना भी सीखेंगे। अनुभव से सीखने का सबसे बड़ा फ़ायदा ये है कि ये हमारे विद्यार्थियों में निरंतर सीखते रहने की क्षमता विकसित करेगा।

मुख्य अंग

इस पाठ्यक्रम के छह मुख्य अंग हैं जिन्हें विद्यार्थियों को एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से जुड़े विभिन्न अनुभव देने की दृष्टि से बनाया गया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इन सभी प्रक्रियाओं में विद्यार्थी स्वयं कुछ करके और फिर चिंतन करके सीखेंगे। इनमें से कुछ प्रक्रियाएँ कक्षा में संचालित होंगी और कुछ कक्षा से बाहर। कुछ में शिक्षक गतिविधि का संचालन करेंगे और कुछ में विद्यार्थी स्वयं ज़िम्मेवारी लेंगे। इन सभी अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी इस मैनुअल में दी गई है।

उद्देश्य	कब करना है	शिक्षक की भूमिका	विद्यार्थियों की भूमिका
माइंडफुलनेस (Mindfulness)			
वर्तमान के प्रति सजग रहकर मन और मस्तिष्क को शांत और केन्द्रित करने के लिए	दैनिक EMC पीरियड में शुरू के 3-5 मिनट माइंडफुल चेक-इन और अंत के 1-2 मिनट साइलेंट चेक-आउट हर महीने के पहले सोमवार को EMC पीरियड में	दैनिक माइंडफुल चेक-इन और साइलेंट चेक-आउट करवाना हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस की गतिविधि करवाना	माइंडफुलनेस की गतिविधियों में भाग लेना
थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units)			
विद्यार्थियों को गतिविधियों और प्रेरक कहानियों के द्वारा एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की क्षमताओं की जानकारी देने के लिए	दैनिक EMC पीरियड में	मैनुअल में दी गई गतिविधियाँ और कहानियाँ फ़ैसिलिटेट करना	समूह में गतिविधियाँ करना, कहानियाँ सुनना और उनपर चिंतन एवं चर्चा करना
स्टूडेंट स्पेशल (Student Specials)			
नियमित अभ्यास और साथियों के फ़ीडबैक से संचार और आत्मविश्वास से संबंधित क्षमताओं को विकसित करना	हर शनिवार के EMC पीरियड में या फ्री पीरियड में	शुरू में एक-दो बार इस प्रक्रिया को समझने और करने में विद्यार्थियों की सहायता करना	तैयारी करके प्रभावी संचार की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करते हुए विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाना

उद्देश्य	कब करना है	शिक्षक की भूमिका	विद्यार्थियों की भूमिका
उद्यमियों के साथ संवाद (Live Entrepreneur Interactions)			
उद्यमियों से रूबरू होकर उनकी यात्रा को समझना और काम के विकल्पों के बारे में जानना।	स्कूल प्रशासन उद्यमियों की सुविधा अनुसार योजना बनाएगा।	उद्यमी का परिचय करवाना और उनके साथ बातचीत का संचालन करना।	उद्यमियों को सुनना और बेझिझक अपने सवाल उनसे पूछना।
कैरियर एक्स्प्लोरेशन (Career Exploration)			
अलग-अलग उद्यमियों और नौकरी करनेवालों का इंटरव्यू लेकर उनकी यात्रा को समझना और काम के विकल्पों के बारे में जानना।	हर महीने एक इंटरव्यू। हर महीने के आखिरी सोमवार और मंगलवार को EMC पीरियड में कुछ विद्यार्थी इंटरव्यू का अनुभव कक्षा में साझा करेंगे।	मैनुअल में दी गई जानकारी के आधार पर इस प्रक्रिया के उद्देश्य समझने और करने में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना।	अपनी रुचि के अनुसार उद्यमियों और अन्य नौकरी करने वाले व्यक्तियों को ढूँढना और तैयारी करके उनका इंटरव्यू लेना और फिर कक्षा के सामने अपने विचार साझा करना।
बिज़नेस ब्लास्टर्स (Business Blasters)			
एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की क्षमताओं का वास्तविक जीवन में इस्तेमाल करना।	बिज़नेस ब्लास्टर्स (Business Blasters) कब और कैसे करवाना है, उसकी सूचना स्कूल प्रशासन को दी जाएगी।	मैनुअल में दी गई जानकारी के आधार पर इस प्रक्रिया के उद्देश्य समझने और करने में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना।	दी गई राशि का आर्थिक या सामाजिक रूप से प्रभावी प्रोजेक्ट करने में उपयोग करना।

थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units) की संरचना

थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units) की रचना करने के पीछे उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को सभी उद्यमशील क्षमताओं को व्यवस्थित तरीके से समझने और अभ्यास करने का मौका मिले। इन यूनिट्स में मुख्यतः गतिविधियों और कहानियों का प्रयोग किया गया है जो इस मैनुअल में संकलित हैं। इनमें एक ओर जहाँ गतिविधियाँ विद्यार्थियों को क्षमताओं के प्रत्यक्ष अनुभव का मौका देती हैं, वहीं दूसरी ओर कहानियाँ उन्हें प्रेरित करने की दृष्टि से शामिल की गई हैं। इन्हें समझने के लिए निम्न बिन्दु महत्त्वपूर्ण हैं-

एक यूनिट की संरचना-

- हर यूनिट उद्यमशीलता की एक विशिष्ट क्षमता और उससे जुड़ी मूलभूत क्षमताओं और गुणों पर केंद्रित है।
- हर यूनिट की शुरूआत में शिक्षक की अपनी समझ के लिए उस क्षमता के महत्त्व और उससे जुड़ी अन्य बातों का उल्लेख किया गया है।
- हर यूनिट में विद्यार्थियों के साथ शुरूआत करने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें शिक्षक ज़रूर इस्तेमाल करें।
- हर यूनिट में 2 गतिविधियाँ और एक कहानी है। (कुछ अपवादों को छोड़कर)

हर गतिविधि/कहानी की संरचना-

- हर गतिविधि/कहानी एक खास क्षमता से जुड़ी है जिसके आधार पर उसके बारे में चिंतन के लिए प्रश्न दिए गए हैं।
- हर गतिविधि/कहानी की शुरूआत परिचय से होती है जिसे शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ।
- हर गतिविधि/कहानी 4 चरणों में बँटी हुई है, जिन्हें नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। जो भी भाग हाईलाइटिड (highlighted) होगा, उस चरण के निर्देश वहाँ दिए गए होंगे।

कैसे करें

इस चरण में गतिविधि करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को निर्देश देते हुए उनसे गतिविधि करवाएँ।

चिंतन एवं चर्चा

इस चरण में गतिविधि कर लेने के बाद के चिंतन के प्रश्न दिए गए हैं, जिन्हें फ़ैसिलिटेटर को विद्यार्थियों के साथ साझा करना है। फ़ैसिलिटेटर ये प्रश्न बोर्ड पर क्रम से लिखकर या बोलकर विद्यार्थियों से बात सकते हैं।

सीखें साथियों के साथ

इस चरण में विद्यार्थी चिंतन एवं चर्चा के दौरान निकाले गए निष्कर्ष/समझ/सवालों आदि को पूरी कक्षा के साथ साझा करेंगे।

साझा करें

इस आख़िरी चरण में शिक्षक गतिविधि/कहानी का सार विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँगे।

यूनिट 1 सहयोग
Collaboration

V7C7S6

फ़ैसिलिटेटर के लिए

किसी भी कार्यक्रम को सफलतापूर्वक करने में आपसी सहयोग का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इससे उस काम में न केवल विभिन्न आयामों को जोड़ सकते हैं, बल्कि इससे उसके विविध पहलुओं को भी उजागर किया जा सकता है। अपनी क्षमताओं के अनुसार एक-दूसरे का सहयोग किसी असंभव काम को संभव बनाने में मदद कर सकता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

विद्यार्थी सक्रिय रूप से विचार करने एवं निर्णय लेने में समझौता और दृढ़ता का योगदान समझेंगे। इसके लिए हम निम्न क्षमताओं को केंद्र में रखेंगे:

1. समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना
2. सहयोग में विविधता (diversity) का महत्व समझना
3. स्वयं और समूह में निर्णय लेना

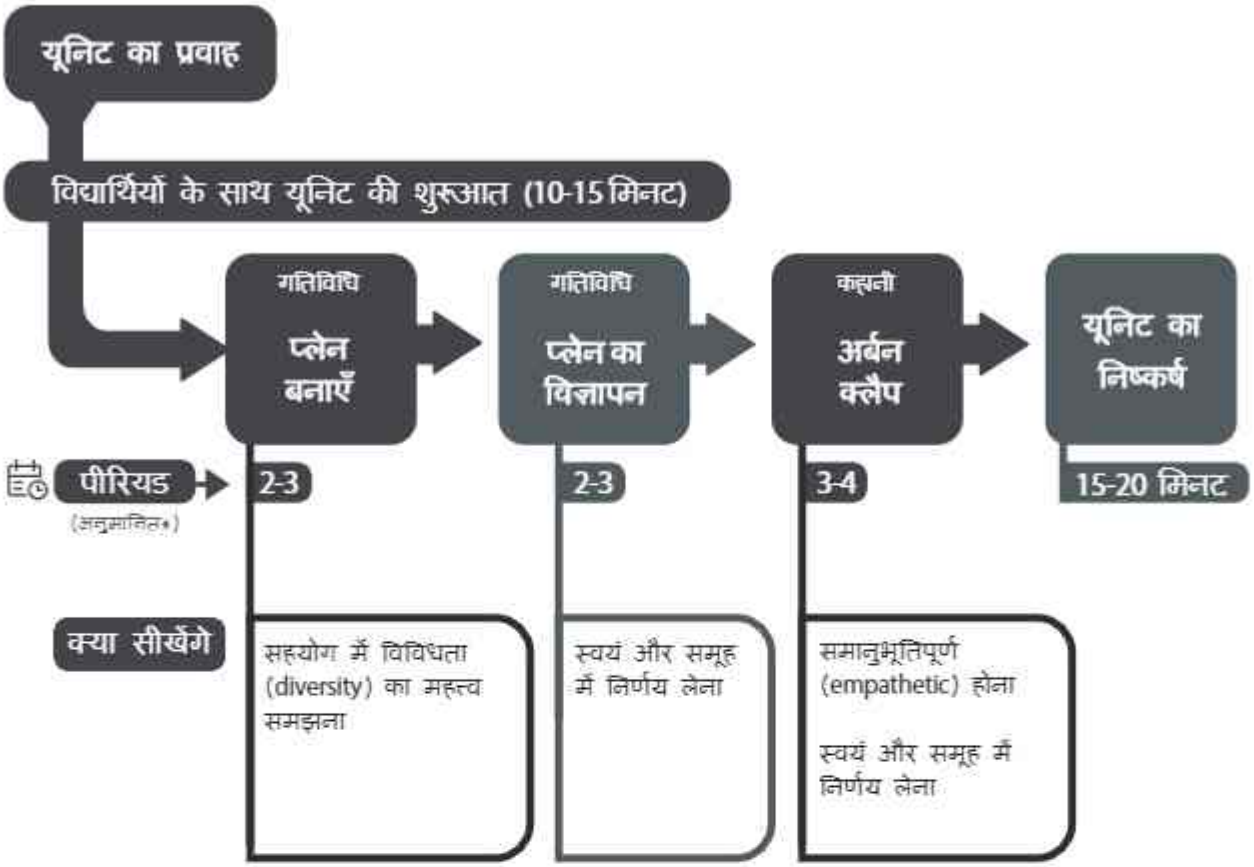

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ासिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

शुरूआत में दी गई बातचीत को आधार बनाकर यूनिट की शुरूआत की जा सकती है।

- किसी भी एक आयोजन में अलग-अलग कामों को अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।
- सभी की बेहतरीन कोशिश से ही पूरे आयोजन को सफल बनाया जाता है।
- क्षमताओं के आधार पर जब काम सौंपे जाते हैं तो बेहतरीन परिणाम देखने को मिलते हैं।

1.1 गतिविधि | प्लेन बनाएँ

परिचय

किसी काम को बेहतर करने के लिए सामूहिक सहयोग की विशेष भूमिका होती है। इस सहयोग को हम अपने निजी जीवन में भी महसूस करते हैं। कई बार किसी विद्यार्थी को एक विषय में कुछ मुश्किल आती है तो दूसरे विद्यार्थी को किसी दूसरे विषय में। ऐसे में एक-दूसरे के साथ से आपस में मिलकर समझने से दोनों ही विषय की मुश्किलें दूर हो सकती हैं। पेपर प्लेन गतिविधि में हम ऐसे ही सहयोग के साथ आगे बढ़ते हैं।

सामूहिक कार्य: 3-3 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- सहयोग में विविधता (diversity) का महत्त्व समझना

सामग्री | पेपर, पेंसिल, तरह-तरह के रंग
(सामग्री उचित मात्रा में हो ताकि सभी टीम को मिलना सुनिश्चित किया जा सके।)

फ़ैसिलिटेटर नोट

- गतिविधि आरंभ करने से पहले विद्यार्थियों को उद्देश्य न बताया जाए।
- इस गतिविधि में विद्यार्थियों में ऊर्जा का स्तर अधिक होगा। इसके लिए व्यवस्था को बनाए रखना ज़रूरी होगा।
- प्लेन उड़ाए जाने के लिए ज़रूरत के हिसाब से बड़ा कमरा या खुले स्थान का प्रयोग किया जा सकता है।
- सभी के प्रयासों को सराहा जाए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- कक्षा के सभी विद्यार्थियों की 3-3 की टीम बनायी जाए।
- विद्यार्थियों को कुछ कागज़ दिए जाएँगे जिनसे हर टीम को एक प्लेन(विमान) बनाना है।
- एक ऐसा प्लेन जो दिखने में खूबसूरत हो और ज़्यादा दूरी तय कर पाए।
- टीम के दो विद्यार्थी पेपर प्लेन बनाएँगे, तीसरा विद्यार्थी उसमें रंग भरेगा।
  - प्लेन बनाने वाले दोनों विद्यार्थी प्लेन बनाने के लिए सिर्फ़ अपने एक-एक हाथ का ही प्रयोग करेंगे। दूसरे हाथ को दोनों अपनी पीठ से सटाकर रखेंगे।
  - टीम का तीसरा विद्यार्थी उपलब्ध रंगों और अन्य संसाधनों का उपयोग करके प्लेन में रंग भरेगा। प्लेन बनाने वाले विद्यार्थी प्लेन को रंगने में या सजाने में कोई मदद नहीं करेंगे।
- टीम के सदस्य अपना नाम प्लेन पर लिखें ताकि पहचान हो सके।
- इस गतिविधि के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा ।
- प्लेन बन जाने के बाद सभी टीम एक-एक कर अपने प्लेन को उड़ाकर दिखाएँगी। फ़ैसिलिटेटर हर टीम के प्लेन की दूरी नोट करेगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपनी-अपनी टीम में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करेंगे -

- एक हाथ से प्लेन बनाने पर आपको क्या-क्या चुनौतियाँ सामने आईं?
- इस गतिविधि को टीम के अंदर एक-दूसरे के सहयोग से करना कितना आसान या मुश्किल रहा? विस्तार से बताएँ।
- बेहतरीन प्लेन बनाने के लिए, दूसरों की क़ाबिलियत का इस्तेमाल हम कैसे कर पाए?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपनी-अपनी टीम में चर्चा करने के बाद, हर टीम से एक विद्यार्थी अपनी चर्चा के मुख्य बिंदुओं को सबके साथ साझा करेगा। इस गतिविधि के ज़रिए दूसरों को समझते हुए, आपसी सहयोग से बेहतर किए जाने वाले कामों पर चर्चा होगी।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने अनुभव करके देखा है कि कम संसाधन और सीमित दायरे में बेहतरीन काम कैसे किया जाता है। हमने यह भी समझा है कि सहयोग का क्या महत्त्व है और इसके ज़रिए कितने बेहतरीन परिणाम देखने को मिलते हैं। साथ ही हम ये भी समझ पाए कि टीम में हर व्यक्ति की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

1.2 गतिविधि | प्लेन का विज्ञापन

परिचय

पिछली गतिविधि में टीम के तीनों सदस्यों ने मिलकर एक पेपर प्लेन तैयार किया, उसे खूबसूरत बनाया और उड़ाकर दिखाया। इस गतिविधि में सभी टीम अपने प्लेन के बेहतर होने की योजना और रणनीति पर चर्चा करते हुए प्रचार के लिए एक विज्ञापन तैयार करेंगी।

सामूहिक कार्य: 3-3 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे
- स्वयं और समूह में निर्णय लेना

सामग्री | चार्ट पेपर, स्केच, रंगीन पेंसिल

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि के लिए टीम वही रहेंगी जो पहली गतिविधि में थीं।
- विज्ञापन के लिए विद्यार्थी किसी भी रूप (form) का चुनाव कर सकते हैं।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

पिछली गतिविधि के दौरान खूबसूरत प्लेन तैयार हो जाने के बाद उसे उड़ाकर दिखाया गया। हर टीम इस गतिविधि में प्लेन की विशेषताओं को दिखाते हुए एक विज्ञापन बनाएगी।

- प्रत्येक टीम अपने प्लेन को गुणों के आधार पर बेहतर बताने के लिए विज्ञापन तैयार करेगी।
  - विज्ञापन का कोई भी रूप (form) हो सकता है। जैसे कोई संक्षिप्त रोल प्ले, स्पीच या नोटिस इत्यादि।
- विज्ञापन में प्लेन के रचनात्मक होने व ज़्यादा दूरी तक उड़ने को केंद्र में रखा जाएगा।
- प्रत्येक टीम एक-एक करके अपने बनाए गए विज्ञापन की प्रस्तुति कक्षा के सामने करेगी।
- प्रत्येक टीम एक-दूसरे के विज्ञापन को ध्यान से देखेगी और समझेगी।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपनी-अपनी टीम में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करेंगे -

- टीम में साथियों के साथ एक विज्ञापन बनाना किस तरह आसान या चुनौतीपूर्ण रहा?
- दूसरी टीम के विज्ञापनों को देखकर अपने बनाए विज्ञापन में कुछ बदलाव की ज़रूरत महसूस हुई? विस्तार से बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपनी-अपनी टीम में चर्चा करने के बाद, हर टीम से एक विद्यार्थी चर्चा के मुख्य बिंदुओं को सबके साथ साझा करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

किए गए किसी भी कार्य में सहयोग को और बेहतर कैसे किया जा सकता है? स्वयं को समझते हुए, कार्य से जुड़े अन्य व्यक्तियों की क्षमताओं के साथ विविधता की सराहना काम को बेहतर बनाती है। इस गतिविधि में हम न केवल अपने काम के बारे में अपने साथियों को बताते हैं, बल्कि आकर्षक एवं व्यावसायिक तरीके से विज्ञापन बनाते हुए एक-दूसरे के गुणों को भी सामने रखते हैं।

1.3 कहानी | अर्बन क्लैप

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने टीम में होने वाले सहयोग का अवलोकन किया। अब हम एक ऐसी कहानी सुनेंगे जिसमें दैनिक जीवन की घटनाओं का ध्यान से अवलोकन करके उन्हें मुनाफ़ा देने वाले अवसर में बदला गया। वे कौन-सी घटनाएँ थीं और उनसे क्या अवसर बने, आइए जानते हैं इस कहानी में।

3-4 पीरियड

क्या सीखेंगे
- समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना
- स्वयं और समूह में निर्णय लेना

भूमिका

आज के समय में हमारा जीवन बहुत व्यस्त हो चुका है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हम अपनी सुविधाएँ जुटाते हुए तरह-तरह की परेशानियों का सामना करते हैं। अब सोचिए कि भरी गर्मी में अचानक आपके घर की बिजली चली जाए या कोई नल ख़राब हो जाए। ऐसी स्थिति में इनको ठीक करने के लिए कई बार बहुत ढूँढने पर ही इलेक्ट्रीशियन या प्लम्बर मिलते हैं। ऐसे में अगर हमें कोई विश्वसनीय कारीगर आसानी से उपलब्ध हो जाए तो कितना अच्छा हो? इन्हीं बातों को देखते हुए कुछ दोस्तों ने मिलकर एक ऐप को बनाया, जिसने बहुत सारे लोगों का जीवन आसान कर दिया।

कहानी

अभिराज भाल और वरुण खेतान दोनों सहपाठी थे। पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद दोनों ने विदेश में नौकरी की। खुद की कंपनी बनाने की इच्छा के चलते दोनों वापस भारत आए। उन दोनों ने 'सिनेमा बॉक्स' नाम की एक ऐप बनाई। परन्तु इसे सिर्फ 6 महीने में ही उन्हें बंद करना पड़ा क्योंकि 'सिनेमा बॉक्स' के आइडिया का कोई वास्तविक आधार नहीं था। इस सबसे सीखकर उन्होंने अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों और एक-दूसरे के सहयोग के आधार पर एक दूसरा ही विचार सोचा। यही समय था जब अभिराज को बहन की शादी के लिए विश्वसनीय फ़ोटोग्राफ़र, डेकोरेटर, कैटरर आदि सेवाओं के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ी। उन्होंने देखा कि एक विश्वसनीय प्लंबर, कारपेंटर, फ़ोटोग्राफ़र, योगा-ट्रेनर आदि को ढूँढना एक आम समस्या है। इन्हें खोजने में काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है और समय भी ख़राब होता है। एक तरफ़ तो इस तरह की सेवा देने वालों को समय पर काम नहीं मिलता और दूसरी तरफ़ सेवा की ज़रूरत होने पर कुशल कारीगर न मिलने से लोग काफ़ी परेशान रहते हैं। इन सभी परेशानियों में अभिराज और वरुण को कुछ करने का अवसर दिखा। तब उन्होंने राघव चंद्रा के साथ मिलकर एक ऑनलाइन सर्विस देने वाली कंपनी की शुरुआत की, इन्होंने ग्राहक और कामगार दोनों को आपस में जोड़ा। अर्बन क्लैप (जिसे अब अर्बन कंपनी के नाम से जाना जाता है।) की स्थापना 2014 में हुई थी।

तीनों ने मार्केट का सर्वे करके संभावित ग्राहकों की ज़रूरत व ख़र्च करने की क्षमता को भी समझा। उन्होंने उनकी अपेक्षाओं को विस्तार से जाना। दूसरी ओर क्वालिटी सेवाएँ देने के लिए कामगारों की ट्रेनिंग की ज़रूरत को भी समझा। अधिकतर कामगारों को पढ़ना- लिखना और स्मार्ट फ़ोन चलाना नहीं आता था। इसके लिए

वे सभी प्रकार के कामगारों, जैसे – प्लंबर, कारपेंटर, एलेक्ट्रिशीयन, फ़ोटोग्राफ़र, क्लीनर, पेंटर, ब्यूटिशियन आदि से मिले। उन्हें संगठित करते हुए तथा आपसी सहयोग एवं समझबूझ के साथ कंपनी के साथ मिलकर काम करने के लिए राजी किया। उनकी टीम बनाकर उन्हें आवश्यकतानुसार ट्रैनिंग दी।

दूसरी ओर वे ग्राहकों को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर लाने में जुट गए। कंपनी की मार्केटिंग के लिए बहुत अधिक पूँजी की आवश्यकता थी। इन्होंने अपनी योजना बहुत-सी कंपनियों के मालिकों को समझाई। इसीके चलते फ़्लिपकार्ट, टाटा जैसे बड़े-बड़े निवेशक इस कंपनी में पैसा लगाने को प्रेरित हुए। उन्होंने एक ऐप (App) डवलप की। ग्राहकों को ऐप की जानकारी देने के लिए एक अभियान चलाया, जिसकी लाइनें/पंक्तियाँ थीं "अब नहीं खोजने पड़ेंगे प्लंबर-कारपेंटर, हर ज़रूरत पूरी करेगा अर्बन-क्लैप।" संभावित ग्राहकों से बातचीत करके इन्होंने यह भी देखा कि लोग अच्छी सेवाएँ भी लेना चाहते हैं और दाम भी किफ़ायती चाहते हैं। इसे समझते हुए उन्होंने कम दामों में अच्छी सेवाएँ देने की गारंटी देते हुए ग्राहकों को अपनी ऐप व वेबसाइट प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया।

इस तरह अर्बन क्लैप ने इंडिया के इस असंगठित सेवा क्षेत्र को सर्विस मार्केट में तब्दील कर दिया। दिल्ली से शुरु हुई इस कंपनी ने अब देश के 18 बड़े शहरों में और दुनिया के 3 देशों - संयुक्त अरब अमिरात, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर - में प्रवेश कर लिया है।

ग्राहक, उनकी माँगों और समस्याओं को समझने के लिए कंपनी नियमित तौर पर अपने सिस्टम के डाटा का ध्यान से विश्लेषण करती थी। उन्होंने देखा कि ब्यूटिशियन की माँग ज़्यादा थी किंतु ग्राहक सेवा से इतने संतुष्ट नहीं थे। ग्राहकों से संपर्क करके उन्होंने समझा कि ग्राहक समय की बचत के लिए घर पर सेवा पसंद करते थे। वे एक अनुभवी ब्यूटिशियन की अपेक्षा रखते थे जो समय पर आए और ब्रांडेड उत्पादों का इस्तेमाल करे। इन आवश्यकताओं को समझते हुए 'अर्बन क्लैप' ने अपने ब्यूटिशियन पार्टनर्स को बिना शुल्क बेहतरीन ट्रेनिंग देना शुरु किया। उनको अच्छी ब्रांड के ब्यूटी उत्पाद दिए और उन्हें अपने घर के 5 किलोमीटर तक ही अपॉइंटमेंट देना शुरु किया ताकि वे अपने घर की ज़िम्मेदारी सँभालते हुए भी समय पर पहुँच सकें। इन बदलावों के बाद अर्बन क्लैप की ब्यूटिशियन सेवा की माँग में कई गुना बढ़ोतरी हो गई।

आज इस कंपनी के साथ सभी प्रकार के पेशेवर लोग जुड़े हैं - ब्यूटिशियन से लेकर मसाज थिरेपिस्ट और प्लंबर, कारपेंटर से लेकर क्लीनर तक। सभी के सहयोग से चलने वाली इस कंपनी को प्रतिदिन 40000 - 50000 आर्डर मिलते हैं। इनके कामगार बहुत खुश हैं। कंपनी के पास 25000 से अधिक कामगार काम कर रहे हैं। आज यह कंपनी विज्ञापन में बेहतर क्वालिटी सर्विस देने का दावा कर अपने ग्राहकों को जोड़ती है और तीस लाख से अधिक संतुष्ट ग्राहक इस कंपनी के साथ जुड़े हुए हैं ।

कंपनी की टीम ने ग्राहकों की ज़रूरत के अनुसार बेहतरीन सेवा देने की हर संभव कोशिश की। कामगारों की सुविधाओं का भी ध्यान रखते हुए आपसी सहयोग से अर्बन क्लैप एक मिसाल बनी।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- अर्बन क्लैप में एक-दूसरे की परिस्थितियों को समझते हुए किस तरह का सहयोग अपनाया गया?
- अर्बन क्लैप ने अपनी ब्यूटिशियन सेवा में क्या-क्या बदलाव किया और क्यों?
- कंपनी-कामगार-ग्राहक के आपसी सहयोग को आप किस तरह देखते हैं?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

अर्बन क्लैप के अंदर होने वाले काम के ज़रिए हमने जाना कि किस तरह कंपनी के अंदर एक-दूसरे के सहयोग से कंपनी-कामगार-ग्राहक का समन्वय (coordination) एवं संबंध मज़बूत किया गया। ज़रूरत के चलते तमाम तरह की ट्रेनिंग के साथ-साथ कंपनी ने ग्राहक एवं कामगार दोनों की परिस्थितियों को समझा। यही वजह रही कि इससे न केवल कामगार खुश रहे बल्कि ग्राहकों को भी संतुष्ट किया गया।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- समूह में किए जाने वाले कार्यों में विविधता हमारे लिए किस तरह लाभकारी होती है? विस्तार से बताएँ।
- टीम में निर्णय लेना और सहमति पर आना क्यों ज़रूरी है? क्या आप अपने दैनिक जीवन से कोई उदाहरण दे सकते है?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

हमारे आसपास जो कुछ भी होता है या नया बनता है, उसमें विभिन्न तरह के लोगों का योगदान होता है। एक-दूसरे के सहयोग से मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से किया जा सकता है। फ़ील्ड प्रोजेक्ट में इस तरह का सहयोग न केवल हमारे काम को एक उछाल देता है बल्कि इस ओर भी ध्यान दिलाता है कि उस काम में विभिन्नता एवं नवीनता हो।

यूनिट 2 जोखिम उठाना
Take Risks

G5U7U1

फ़ैसिलिटेटर के लिए

कुछ लोग नया या अलग करते हुए रिस्क लेने से बचते हैं और कुछ लोग रिस्क से बिल्कुल नहीं डरते। ऐसा क्यों होता है? आइए इसे समझते हैं:

रिस्क न लेने के कारण	चुनौतियाँ, अपूर्ण तैयारी, अनिश्चितताएँ, विपरीत परिणामों की संभावना
रिस्क लेने के कारण	कार्य में रुचि, अच्छे परिणाम की आशा, लीक से हटकर कुछ करने की इच्छा

यदि अनुमानित लाभ रिस्क से अधिक है तो लोग रिस्क लेने के लिए तैयार हो जाते हैं - यानी कि वे अनिश्चितताओं (uncertainities) व होने वाले प्रतिकूल परिणामों का सामना करने के लिए भी अपने आपको तैयार कर लेते हैं। जो बार-बार बड़ा रिस्क लेने की क्षमता रखते हैं, उन्हें कभी-कभी उसका लाभ भी बड़ा ही मिलता है। और जो बिल्कुल रिस्क नहीं लेते और सुरक्षित होकर चलना चाहते हैं, वे कई बार अच्छे अवसर खो देते हैं। रिस्क लेने की सबकी अपनी-अपनी क्षमता होती है। जब हम रिस्क का सही तरह से आकलन करना सीख जाते हैं तो उसके साथ हमारी रिस्क लेने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट के माध्यम से विद्यार्थी रिस्क लेने का डर और रिस्क ले पाने के कारणों को गतिविधियों तथा एक प्रेरक कहानी के माध्यम से समझेंगे। ऐसा करने से वे निम्न क्षमताओं का विकास करेंगे:

1. अनिश्चितताओं तथा लाभ की तुलना करके रिस्क का आकलन करना
2. कार्य से जुड़ी अनिश्चितताओं से आगे बढ़कर रिस्क लेना

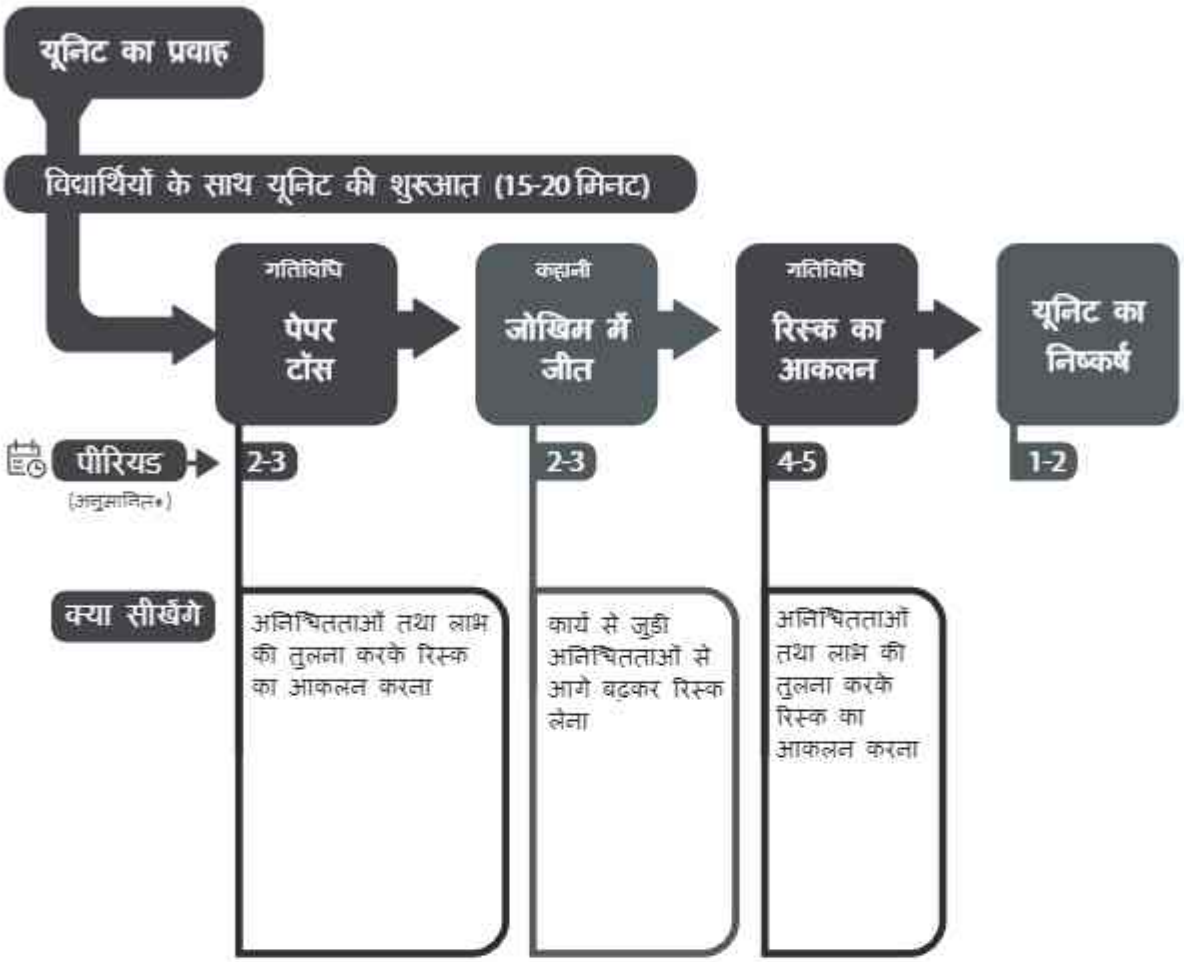

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ेसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

परिचय में दिए गए संवाद का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों के साथ इस यूनिट की शुरूआत की जा सकती है। संवाद के बाद विद्यार्थियों से निम्न प्रश्नों पर चर्चा की जा सकती है:

- क्या आपने कभी कोई जोखिम भरा या रिस्क वाला कार्य किया है? उदाहरण के साथ बताइए।
- आपने वह रिस्क क्यों लिया?
- क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि आपने किसी कार्य के लिए रिस्क लेने का सोचा पर लिया नहीं? ऐसा क्यों हुआ?

इस यूनिट में सीखेंगे कि हम रिस्क क्यों लेते हैं और किन बातों का ध्यान रखने से हमारी रिस्क लेने की क्षमता बढ़ती है।

2.1 गतिविधि | पेपर टॉस

परिचय

क्या केवल कागज़ की गेंद के खेल से भी रिस्क को समझा जा सकता है? आइए इस गतिविधि के माध्यम से अनुभव करते हैं।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अनिश्चितताओं तथा लाभ की तुलना करके रिस्क का आकलन करना

सामग्री | पुराने समाचार-पत्र (हर समूह के लिए समान संख्या में)

फ़ैसिलिटेटर नोट

गतिविधि के बाद सभी समूहों के प्रयासों की सराहना करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

शुरुआत

- बोर्ड पर एक 1 फुट चौड़ा गोला बनाएँ।
- समाचार-पत्र से एक 3 - 4 इंच मोटी गेंद बनाएँ जिसे दूर से बोर्ड के गोले पर फेंका जा सके।
- बोर्ड से निम्न दूरियों पर लाइन खींच दीजिए और अंक बता दीजिए:
  - 5 क़दम पर (10 अंक)
  - 10 क़दम पर (25 अंक)
  - 15 क़दम पर (50 अंक)
- अंक केवल तभी मिलेंगे जब गेंद बोर्ड पर बनाए गए गोले के भीतर लगे।

प्रक्रिया

- विद्यार्थियों के 5 - 6 के समूह बनाएँ।
- समूह के सदस्य आपस में चर्चा करके निर्णय करेंगे कि वे कौन-से अवसर में किस लाइन से गेंद को फेंकना चाहते हैं। हर समूह को 3 अवसर मिलेंगे। अंक केवल तभी मिलेंगे जब गेंद बोर्ड पर बनाए गए गोले के भीतर लगे। सभी का अधिकतम अंक प्राप्त करने का प्रयास रहेगा।
  - गतिविधि आरंभ करने से पहले एक अवसर अभ्यास के लिए दिया जा सकता है।
- एक-एक करके हर समूह तीन प्रयास करेगा।
- हर समूह की तीन बारी आ जाने के बाद उनके कुल अंकों की गणना करें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- आपके लिए किसका महत्त्व ज़्यादा था - गेंद को गोले तक पहुँचाना या अधिकतम अंक पाना? क्यों?
- इस खेल में जीतने के लिए क्या ज़रूरी था?
- आपने इस गतिविधि में अपनी रिस्क लेने की क्षमता के बारे में क्या समझा? हम अपनी दिनचर्या में रिस्क कब, कैसे और क्यों लेते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

अपने समूहों में चर्चा कर लेने के बाद हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में हुई चर्चा को संक्षेप में पूरी कक्षा को बताएगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

किसी भी चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए उसके साथ जुड़े कुछ रिस्क भी होते हैं। कभी-कभी एक ही काम में अलग-अलग तरह के रिस्क हो सकते हैं। लेकिन उन चुनौतियों के बारे में हमारी समझ, रिस्क को कम कर सकती है और हमें अपने उद्देश्य तक पहुँचने में हमारी मदद करती है। इस तरह बिना सोचे-समझे लिए जाने वाले रिस्क को एक सोचा समझा रिस्क बनाया जा सकता है।

2.2 कहानी | जोखिम में जीत

परिचय

सरिता सर्वरिया ने एक बडा रिस्क लेते हुए अपना खुद का काम शुरू किया। वे जोखिम कैसे उठा पाईं और क्या काम करती हैं - आइए जानते हैं इस कहानी के माध्यम से।

क्या सीखेंगे **2-3 पीरियड**

- कार्य से जुड़ी अनिश्चितताओं से आगे बढ़कर रिस्क लेना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को कहानी सुनाने से पहले नीचे दिया गया संवाद सुनाएँ। यदि संभव हो तो कुछ विद्यार्थी संवाद का अभिनय भी कर सकते हैं।
- यदि विद्यार्थी कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं तो उन्हें ऐसा करने का अवसर तथा समय दें।

भूमिका

जैस्मिन अपने घर से स्कूल जाने वाली पहली सदस्य है। वह घर में कविता पाठ का अभ्यास कर रही है और उसके मम्मी, पापा, भाई, बहन, दादा, दादी सुन रहे हैं। वह इन पंक्तियों को बार-बार सुनाती है-

Two roads diverged in a wood, and I—
I took the one less traveled by,
And that has made all the difference.

पापा: जैस्मिन! यह कविता तो बहुत अच्छी लग रही है पर हमें यह तो बताओ कि इसका मतलब है क्या?

जैस्मिन: पापा, इसके लिए मैं एक कहानी सुनाती हूँ।

भाई, बहन: कहानी! अरे वाह! सुनाओ न!

कहानी

यह कहानी है सरिता सर्वरिया की। उन्होंने 21 वर्ष की आयु में अपना प्रोफ़ेशनल सफ़र होटल इंडस्ट्री के साथ शुरू किया। उन्होंने 5 साल बहुत ही लगन के साथ काम किया। अपने काम के लिए उन्हें अवॉर्ड भी मिला। एक बार काम के सिलसिले में उन्हें लंदन जाने का मौका मिला। जिस होटल में वह ठहरी थीं उसकी साफ़-सफ़ाई देखकर तो वह चकित ही रह गईं। वहाँ के स्टाफ़ से बात करने पर पता चला कि ये काम वहाँ पर हाउसकीपिंग कंपनियाँ करती हैं। उन्होंने सोचा हमारे देश में अभी हाउसकीपिंग कंपनियों का चलन नहीं है, यदि वे इस तरह का कुछ अपना काम शुरू करें तो बहुत आगे जाया जा सकता है, बहुत लाभ भी हो सकता है।

लंदन से दिल्ली लौटते ही उन्होंने बॉस से हाउसकीपिंग का अपना व्यवसाय करने की इच्छा बताई। बॉस ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि, "ये काम आसान बिल्कुल नहीं है। अच्छी ख़ासी नौकरी है, क्यों छोड़ना चाहती हो?" जब जान-पहचान के लोगों को पता चला कि वह अपनी हाउसकीपिंग कंपनी खोलने के बारे में सोच रही हैं तो उन्होंने भी उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की और कहने लगे, "अब तू सफ़ाई का काम करेगी?" रिश्तेदार तो सब कुछ छुड़वाकर शादी करवाने को तैयार थे।

एक तरफ़ ये सब बातें चल रही थीं, दूसरी तरफ़ सरिता लगातार अपने काम के बारे में सोच रही थीं- क्या उनके साथ काम करने वाले लोग ईमानदारी से काम करेंगे? क्या क्लाइंट्स उनका कॉन्सेप्ट समझकर उनकी कंपनी को कॉन्ट्रैक्ट देंगे? इस तरह की ढेरों अनिश्चितताएँ थीं। और सबसे बड़ा जोखिम था लगी-लगाई अच्छी नौकरी को छोड़ने का। वे बार-बार सोचतीं कि इस काम को करूँ या न करूँ? पर उन्हें विश्वास था कि यदि वे इस काम को कर पाईं तो बहुत कुछ बदल जाएगा। वह एक सफल व्यवसायी बन सकती हैं और अच्छी आय अर्जित कर सकती हैं। लोगों को रोज़गार दे पाएँगी और हाउसकीपिंग व्यवसाय में नाम भी कमा पाएँगी। रिस्क और परिणाम दोनों को उन्होंने काफ़ी तोला और ठान लिया कि करके देखते हैं, जो होगा - देखा जाएगा।

आखिरकार उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। फिर वे काम की तलाश में एक ऑफ़िस से दूसरे ऑफिस जाने लगीं। कई बार कड़ी मेहनत के बाद वे जब शाम को बैठतीं तो निराश होकर सोचने लग जातीं कि उन्हें कोई कॉन्ट्रैक्ट मिलेगा या नहीं? दो महीने के बाद उन्हें एक महिला डिज़ाइनर द्वारा पहला काम मिला। 3000 ₹ के कॉन्ट्रैक्ट में उन्होंने 300 ₹ कमाए। अपनी पहली कमाई उन्हें बहुत कीमती लगी और गर्व का भी अनुभव हुआ। इसी प्रकार छोटे-छोटे काम करते हुए वे आगे बढ़ने लगीं।

सन् 1992-93 में उन्हें पंजाब नेशनल बैंक की कनॉट प्लेस की शाखा में काम करने का अवसर मिला। पान की पीक से भरी दीवारों और शौचालयों की हालत बेहद खराब थी। काम केवल शनिवार और रविवार को ही करना था। जब काम समाप्त हुआ तो चमकती दीवारों और शौचालयों के साथ मैनेजर और बाकी स्टाफ़ भी बहुत खुश हुए। उनके काम को देखकर अब दूसरी संस्थाएँ भी उन्हें हाउसकीपिंग के लिए बुलाने लगीं।

धीरे-धीरे उन्होंने अपनी एक टीम बना ली जो उनके साथ लगन से काम करने के लिए तैयार थी। उनके बेहतरीन काम और वाज़िब दाम को देखकर उनके कस्टमर्स की संख्या बढ़ती गई। उन्होंने 10 वर्षों में कई उतार-चढ़ाव देखे पर कंपनी आगे बढ़ती रही।

आज उनकी कंपनी Express Housekeepers Pvt. Ltd. भारत की बड़ी हाउसकीपिंग कंपनियों में से एक है। उनकी कंपनी में 20000 कर्मचारी कार्यरत हैं। हाउसकीपिंग का कॉन्सेप्ट अपने देश में लाने वाली वे पहली व्यक्ति हैं।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- सरिता सर्वरिया के सामने कौन-कौन से विकल्प थे? उन्होंने कौन-सा विकल्प चुना और क्यों?
- आपके सामने यदि ऐसी स्थिति आ जाए तो आप कौन-सा विकल्प चुनना चाहेंगे? और क्यों?
- क्या आपके जीवन में ऐसी स्थिति है जिसमें एक विकल्प आसान है और दूसरा विकल्प रिस्क और अनिश्चितताओं से भरपूर है, पर उसमें कामयाबी की संभावनाएँ ज़्यादा हैं? विस्तार से बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

इस कहानी में हमने देखा कि सरिता सर्वरिया ने हाउसकीपिंग व्यवसाय में क़दम रखते हुए जान लिया था कि काम में रिस्क है। इस रिस्क का आकलन करते हुए उन्होंने समझ बनाई कि काम में अनिश्चितताएँ तो हैं पर लाभ भी है। इसलिए लोगों की बातों पर ध्यान न देकर उन्होंने अपने लिए रिस्क उठाने वाला रास्ता चुना जिसके बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए।

2.3 गतिविधि | रिस्क का आकलन

परिचय

आमतौर पर किसी कार्य को करने से पहले उसके साथ जुड़े रिस्क को संभावित लाभ के साथ तुलना करके देखा जाता है। रिस्क से हमारा मतलब है विपरीत परिणाम की संभावनाएँ। जब अनिश्चितताएँ ज़्यादा होती हैं तो परिणाम विपरीत आने की संभावना बढ़ जाती है। इस गतिविधि में हम रिस्क का आकलन करने का अभ्यास करेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

4-5 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अनिश्चितताओं तथा लाभ की तुलना करके रिस्क का आकलन करना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

चर्चा के दौरान विद्यार्थियों के हर समूह को कुछ समय दें और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मदद करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थी 5 से 6 के समूहों में बैठेंगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपने लिए एक पसंदीदा करियर चुनकर अपनी कॉपी में लिखेगा और फिर अपने समूह के साथ साझा करेगा।
- समूह में सभी सदस्यों के करियर शामिल करते हुए समूह की एक सूची बनाई जाएगी।
- सूची में से एक के बाद एक करियर लेकर समूह उसके निम्नलिखित पहलुओं पर चर्चा करेगा।
  - उस करियर में कौन-से फ़ायदे निश्चित हैं और कौन-से फ़ायदे संभावित हैं?
  - उस करियर को शुरू करने के लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं?
  - उस करियर के साथ क्या-क्या अनिश्चितताएँ जुड़ी हुई हैं?
  - उस करियर में कौन-से विपरीत परिणाम संभावित हैं?
- विद्यार्थी अपने पसंदीदा कैरियर से जुड़े फ़ायदे, आवश्यक शर्तें, अनिश्चितताएँ, और संभावित विपरीत परिणाम को अपनी कॉपी में नोट करेंगे।
- विद्यार्थी वर्तमान परिस्थितियों को समझकर अपने पसंदीदा करियर के फ़ायदे और विपरीत परिणाम की संभावना का आकलन करके समूह के साथ साझा करेंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- इन सवालों पर बात करके आपको अपने चुने हुए करियर में रिस्क लेने के बारे में क्या लग रहा है?
- रिस्क का आकलन करने की प्रक्रिया को आप और कहाँ इस्तेमाल कर सकते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

अपने समूहों में हुई चर्चा को हर समूह से एक विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ साझा करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

किसी भी कार्य में फ़ायदे के साथ-साथ थोड़ा-बहुत रिस्क तो होता ही है। रिस्क का आकलन करने की प्रक्रिया को अच्छी तरह से सीख जाने से और उसका इस्तेमाल करने से हमारी रिस्क लेने की क्षमता विकसित होती है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- यदि आपको लगने लगे कि किसी महत्त्वपूर्ण काम को करने में रिस्क ज़्यादा है तो आप क्या करेंगे? उदाहरण देकर बताएँ।
- अपनी ज़िंदगी में आपने या आपके आसपास किसी और ने कोई रिस्क लिया हो तो उसके बारे में बताएँ।
- फ़ील्ड प्रोजेक्ट करते हुए क्या आपने रिस्क का आकलन किया था? यदि आपको फ़ील्ड प्रोजेक्ट फिर से करने का मौका मिले तो आप रिस्क का आकलन कैसे करेंगे?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

रिस्क लेने का मतलब है अनिश्चितताओं से न डरना और फ़ायदे एवं नुकसान की संभावनाओं को समान भाव से तोलते हुए आगे बढ़ना। जो अनुमानित रिस्क उठाने के लिए तैयार होते हैं, उन्हें अच्छे परिणाम प्राप्त होने की संभावना होती है। जो बिल्कुल ही रिस्क नहीं लेते और सुरक्षित निर्णय लेते हैं, वे अच्छे अवसर खो सकते हैं। हम अनिश्चितताओं की लाभ के साथ तुलना करके रिस्क का सही तरह आकलन कर सकते हैं और इस तरह रिस्क लेने की क्षमता को विकसित कर सकते हैं।

यूनिट 3 प्रभाव तथा ज़िम्मेदारी
Impact and Responsibility

F9H3I5

फ़ैसिलिटेटर के लिए

क्या होता है जब:

1. घर का कोई सदस्य बीमार पड़ जाता है?
2. पढ़ाई के दिनों में आपको स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ती है?
3. घर के कमाने वाले सदस्यों की तनख़्वाह बढ़ जाती है?
4. हम प्लास्टिक के थैले कूड़े में या नाली में फेंक देते हैं?

इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सोचें :

क्या किसी घटना का उससे संबंधित व्यक्ति पर ही असर होता है? क्यों और कैसे?

हमारे द्वारा किए गए कार्य का प्रभाव केवल हम तक नहीं रहता। हमारे कार्यों का प्रभाव अन्य लोगों पर और अन्य लोगों के कार्यों का प्रभाव हम पर पड़ता है। प्रभाव सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी। अपने कार्यों के प्रभाव के नज़रिए से कार्यों का मूल्यांकन करने से विद्यार्थियों को सकारात्मक प्रभाव बनाने के लिए तैयार किया जा सकता है।

हम सबका अस्तित्व पृथ्वी पर अन्य मनुष्यों तथा विभिन्न प्राणियों तथा वनस्पति के साथ है। जैसे पृथ्वी पर होने वाली प्राकृतिक घटनाओं (जैसे बाढ़, सर्दी, गर्मी) का हम पर प्रभाव पड़ता है वैसे ही हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रभाव भी अन्य मनुष्यों, जीव-जंतुओं तथा वनस्पति पर पड़ते हैं। ये प्रभाव कई तरह के हो सकते हैं।

FSE मॉडल किसी भी कार्य के प्रभाव का तीन आयामों से मूल्यांकन करता है। ये तीन आयाम हैं - Financial-आर्थिक, Social-सामाजिक और Ecological-पर्यावरण संबंधी। विद्यार्थियों को उनके कार्यों के प्रभावों के प्रति सजग कराने के लिए उन्हें उनके द्वारा किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना सिखाने की आवश्यकता है। ऐसा करने से उन्हें उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करने के लिए तैयार किया जा सकता है। साथ ही प्रभावी विचारों का निर्माण करने और उसी के अनुरूप बदलाव लाने के लिए प्रेरित भी किया जा सकता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी कार्यों के प्रभाव तथा ज़िम्मेदारी के विभिन्न पक्षों को जानेंगे। ऐसा करते हुए निम्न क्षमताओं का विकसित होना अपेक्षित है:

1. किसी एक के कार्य का औरों पर प्रभाव बताना
2. कार्यों का FSE (आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी) के नज़रिए से मूल्यांकन करना
3. कार्यों से पड़ने वाले- सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताना
4. फ़ील्ड प्रोजेक्ट करते हुए FSE मॉडल का प्रयोग करना

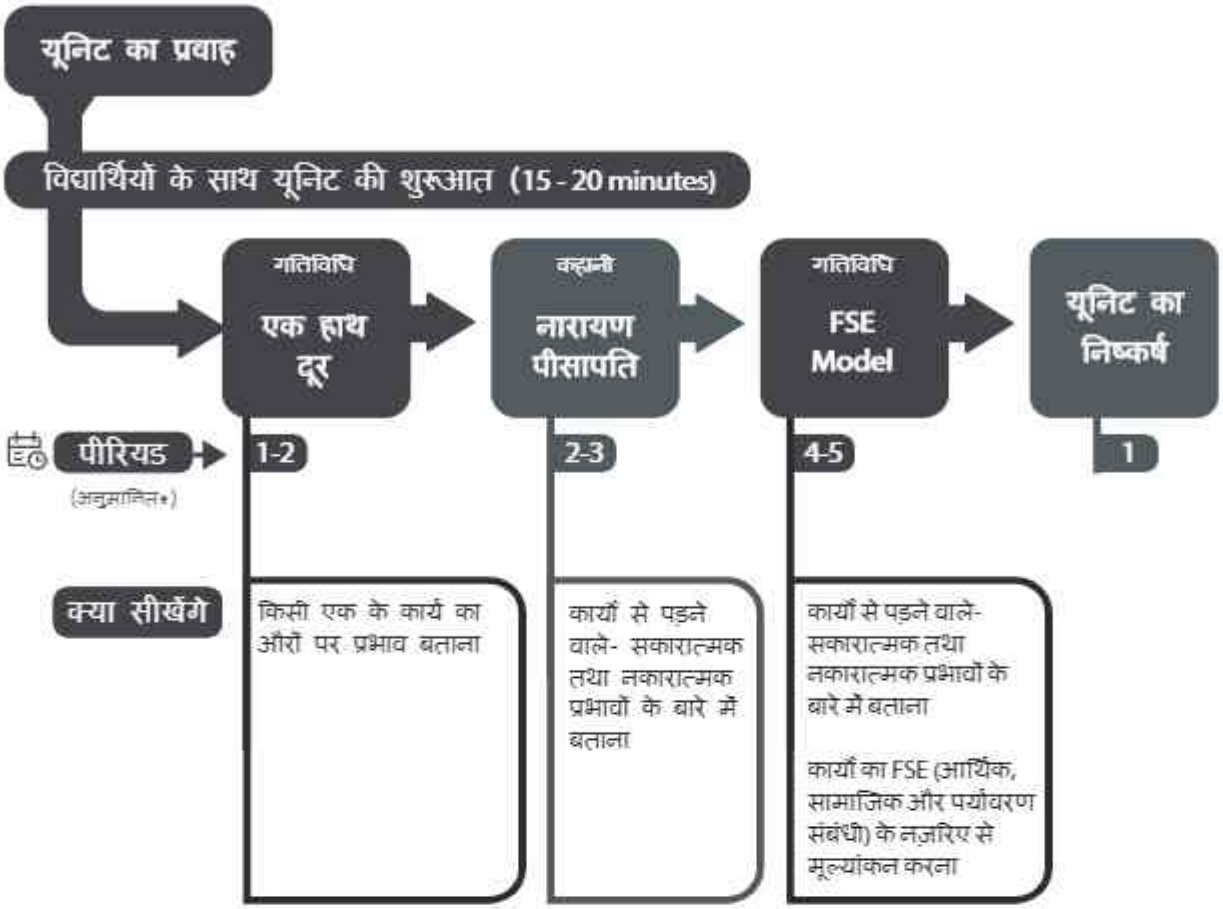

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

परिचय में दिए गए प्रश्नों का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों के साथ प्रभाव तथा ज़िम्मेदारी पर संवाद शुरू किया जा सकता है। इनके अलावा कुछ अन्य विषयों जैसे भोजन या पानी बेकार करना, सोशल मीडिया का ज़िम्मेदारी से प्रयोग करना, पौधे लगाना, समय से बिल न भरना आदि को भी यूनिट की शुरूआत करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस इकाई में विद्यार्थी अपने कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उनके प्रभावों को कई आयामों (aspects) से जाँचेंगे और अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी को समझेंगे। ऐसा करने पर विद्यार्थियों के मन में विरोधाभासी विचार आ सकते हैं। इस परिस्थिति में उन्हें संवेदनशील होकर समझने की आवश्यकता होगी।
- यह भी ध्यान रखें कि विद्यार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं पता लगाएँ और उनके सवालों का कोई जवाब देने से आप बचें। यदि उन्हें सवालों का जवाब देने में कठिनाई हो रही है तो उन्हें उत्तर तक ले जाने में मदद करें।

3.1 गतिविधि | एक हाथ दूर

परिचय

जैसे एक छोटा-सा पत्थर पानी में फेंकने से पूरे पानी में हल-चल हो जाती है वैसे ही एक छोटा-सा कार्य भी अपने आसपास बड़ा प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।

सामूहिक कार्य: पूरी कक्षा

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- किसी एक के कार्य का औरों पर प्रभाव बताना

फ़ैसिलिटेटर नोट

इस गतिविधि को करते हुए विद्यार्थियों को बिना एक-दूसरे से बातचीत किए खड़ा होने के लिए कहा जा सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- इस गतिविधि के लिए विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर खुले स्थान पर ले जाएँ।
- सभी विद्यार्थियों को अपने साथियों से एक हाथ की दूरी बनाते हुए खड़ा होने के लिए कहें। यह दूरी अपने चारों तरफ़ - आगे-पीछे और अगल-बगल सभी तरफ से एक हाथ दूर हो।
- दो विद्यार्थियों को (जो बीच में खड़े हों) अपना स्थान छोड़कर सामने आने के लिए कहें। अन्य विद्यार्थियों को उस रिक्त स्थान को इस प्रकार भरने के लिए कहें कि एक हाथ की दूरी की व्यवस्था बनी रहे।
- अब उन दोनों विद्यार्थियों को फिर से अन्य विद्यार्थियों के साथ आने के लिए कहें। वे इस तरह खड़े हों कि फिर से एक हाथ की दूरी की व्यवस्था बन जाए।
    - विद्यार्थियों को इस गतिविधि से उत्पन्न भ्रम की स्थिति का आनंद लेने दें। साथ ही इस प्रक्रिया में लगने वाले समय को भी नोट करते रहें।
- विद्यार्थियों से पूछें कि इस गतिविधि में उनका अनुभव कैसा रहा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थियों के 5-6 के समूह बनाएँ। हर समूह अपने समूह के साथियों के साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेगा:

- इस गतिविधि में आपका अनुभव कैसा रहा?
- दो विद्यार्थियों के बाहर जाने और वापस आने से अन्य विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
- क्या आपने अपने दैनिक जीवन में भी पाया है कि आपके या किसी अन्य के द्वारा किए गए छोटे-से कार्य का प्रभाव सभी पर पड़ा हो? उदाहरण देकर बताइए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

- हर समूह से विद्यार्थियों को अपने समूह में हुई चर्चा को पूरी कक्षा के साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।
- यदि विद्यार्थी एक-दूसरे से कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं तो उन्हें इसके लिए भी समय दें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमने इस गतिविधि में यह देखा कि केवल दो विद्यार्थियों के बाहर जाने से सभी विद्यार्थियों को अपनी जगह बदलनी पड़ती है। उनके लिए फिर से अपनी जगह बनाने के लिए भी सभी विद्यार्थियों को अपनी जगह बदलनी पड़ती है। इस तरह एक छोटे-से कार्य का भी प्रभाव अन्य लोगों पर पड़ता है।

3.2 कहानी | नारायण पीसापति

परिचय

नारायण पीसापति कुछ ऐसा कर रहे हैं जिसके प्रभाव के बारे में सोचकर वे बस जुट गए उसे सफल बनाने के लिए।

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कार्यों से पड़ने वाले- सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताना

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों को कहानी सुनाने से पहले नीचे दिया गया संवाद सुनाएँ। यदि संभव हो तो कुछ विद्यार्थी संवाद का अभिनय भी कर सकते हैं।

भूमिका

(सोनू, मोनू और रानी स्कूल में बात कर रहे हैं।)

सोनू: "एक चुटकुला सुनोगे?"

मोनू और अनु: "हाँ! हाँ! ज़रूर!"

सोनू: "एक बार एक आदमी दूर देश से भारत घूमने आता है। वह घूमते-घूमते एक गाँव में पहुँच जाता है। उसे भूख लगती है। गाँव की एक दादी उसे मक्के की रोटी पर सब्ज़ी रखकर दे देती है। वह सब्ज़ी खाकर रोटी लौटाते हुए कहता है, "सब्ज़ी बहुत अच्छी थी| ये लीजिए आपकी प्लेट।"

मोनू (हँसते हुए): "ओ हो! मक्के की रोटी कड़ी हो गई। और उसे लगा कि वह प्लेट है।"

सोनू: "अनु तुम्हें इस चुटकुले पर हँसी नहीं आई?"

अनु: "हँसी आती, अगर मुझे नारायण पीसापति के बारे में पता नहीं होता।"

सोनू और मोनू: "नारायण पीसापति! हमें भी उनके बारे में बताओ।"

अनु: "ठीक है! तो सुनो!"

नारायण पीसापति: पर्यावरण बचाने वाले चम्मच

नारायण पीसापति काफ़ी समय से प्लास्टिक की चम्मचों का विकल्प ढूँढ रहे थे। एक कारण तो यह था कि प्लास्टिक में कैंसर वाले ज़हरीले पदार्थ होते हैं जो खाने में भी जा सकते हैं। दूसरा यह कि प्लास्टिक को मिट्टी में घुलने-मिलने में 450 से 1000 साल तक लग जाते हैं। तीसरा कारण जानकर वे हैरान रह गए। उन्होंने देखा कि कई जगहों पर प्लास्टिक की प्रयोग की हुई चम्मचों को धोकर या गंदे कपड़े से साफ़ करके दोबारा प्रयोग कर लिया जाता है। चम्मच प्रयोग करने वाले समझते हैं कि सिंगल यूज़ है और साफ़ है पर उन्हें पता नहीं होता कि उन चम्मचों से बैक्टीरिया संक्रमण होने का ख़तरा भी है।

प्लास्टिक से जुड़ी ये बातें उन्हें लगातार परेशान कर रही थीं। फिर कुछ घटनाओं ने उनकी सोच को परेशानी से आगे जाकर उनके हल ढूँढने को एक दिशा दी। उस समय नारायण पीसापति हैदराबाद के CRISAT में वैज्ञानिक के तौर पर कार्य कर रहे थे। वहाँ काम करते हुए एक खोज के दौरान उन्होंने पाया कि चावल जैसी फ़सल के मुकाबले ज्वार और रागी जैसी फ़सलें उगाने में पानी कम लगता है और इससे सही जल-स्तर बनाए रखने में मदद मिलती है। वहीं फ़ील्ड वर्क करते हुए एक दिन ज्वार की रोटी ठंडी हो जाने पर कड़ी हो गई। उन्हें याद आया कि कुछ दिन पहले उन्होंने एक महिला को खाखरा को चम्मच की तरह प्रयोग करते देखा था। उन्हें लगा कि इस तरह तो ज्वार की रोटी भी चम्मच बन सकती है। ज्वार तो वैसे भी पानी बचाने वाली फ़सल है, साथ ही मिट्टी में भी कुछ ही दिनों में घुल-मिल जाती है। बस वहीं से शुरू हुए उनके प्रयोग - खाए जा सकने वाली चम्मच बनाने के लिए।

उन्होंने कई पदार्थों को मिला-जुलाकर कई प्रयोग किए। जब ज्वार, गेहूँ, चावल, अजवाइन और काली मिर्च मिलाकर एक बढ़िया चम्मच बनाने का प्रयोग सफ़ल हुआ तो चम्मचों को व्यावसायिक रूप से बनाने के लिए मशीन बनाने की जुगत लगाई। समय भी चाहिए था; इसलिए अच्छी-भली नौकरी भी छोड़ दी। फिर सवाल आया पैसे का। उसका इंतज़ाम किया - कभी उधार लेकर तो कभी घर गिरवी रखकर। फिर भी; एक किफ़ायती दाम के साथ भी चम्मचों की बिक्री नहीं हो रही थी। कर्ज़ भी बढ़ता जा रहा था। एक समय उन्हें लगा कि सब कुछ छोड़ना पड़ेगा। एक दिन जब बैंक के अधिकारी बैंक से लिए कर्ज़ की वसूली संबंधी छानबीन करने आए तो पीसापति ने उन्हें अपने चम्मचों तथा संघर्ष के बारे में बताया। वे पीसापति के कार्य से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उनसे 2000 रुपये के चम्मच खरीद लिए।

फिर कुछ समय बाद एक चमत्कार-सा हुआ - मीडिया में उनके बारे में छपा। उनके सकारात्मक कार्य ने सकारात्मकता को आकर्षित किया और 2016 के बाद उन्हें विभिन्न स्रोतों से 3,85,000 डालर की आर्थिक सहायता मिली। बस, फिर क्या था - विश्व के पहले खाए जा सकने वाले चम्मच तेज़ी से बिकने लगे। 2018 में उनका कारोबार 2 करोड़ रुपये का हो गया। अब वे अपनी वेब-साइट से तो खाए जा सकने वाली चम्मचें बेचते ही हैं, साथ ही कई रेस्टोरेंट तथा कैफ़े चेन भी उनसे ये चम्मच खरीदने लगे हैं।

आज इन चम्मचों की माँग इतनी बढ़ गई है कि नारायण पीसापति अपनी मशीनों को और उन्नत बनाना चाहते हैं ताकि एक दिन में 1,50,000 चम्मचें बनाई जा सकें। और क्यों न हो! ये चम्मच पर्यावरण तथा स्वास्थ्य के मित्र जो हैं- या तो खाने के साथ ही खाए जाते हैं या मिट्टी में केवल कुछ दिनों में घुल-मिल जाते हैं और इनका दोबारा प्रयोग भी नहीं हो सकता।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी निम्नलिखित प्रश्नों पर अपने समूहों में चर्चा करेंगे।

- नारायण पीसापति ने किस तरह की ज़िम्मेदारी ली? उसका क्या प्रभाव पड़ा?
- एक उदाहरण सोचकर बताइए कि हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों का क्या-क्या प्रभाव हो सकता है?
- छोटे समूहों में चर्चा के बाद इन प्रश्नों पर पूरी कक्षा के साथ चर्चा की जा सकती है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

उपरोक्त प्रश्नों पर चर्चा करने के बाद जो विद्यार्थी स्वेच्छा से बताना चाहें उनसे कहा जा सकता है:

- अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों को और अधिक ज़िम्मेदारी से कैसे कर सकते हैं? उदाहरण के साथ बताइए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

नारायण पीसापति ने काफ़ी मुश्किलें सहने के बाद भी वह काम चुना जिसका प्रभाव न केवल मनुष्यों के लिए सकारात्मक है बल्कि पूरे पर्यावरण के लिए भी।

3.3 गतिविधि | FSE Model

परिचय

हम जो भी कार्य या गतिविधि करते हैं उसका प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक क्रियाकलाप का आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभाव हो सकता है। विद्यार्थियों को यह बताया जाना ज़रूरी है कि ये प्रभाव सकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

4-5 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कार्यों से पड़ने वाले- सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताना
- कार्यों का FSE (आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी) के नज़रिए से मूल्यांकन करना

फ़ैसिलिटेटर नोट

इस गतिविधि के 2 भाग हैं। गतिविधि को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को पर्याप्त समय दें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

पहला भाग

किसी भी कार्य या गतिविधि का प्रभाव जानने के लिए FSE मॉडल की मदद ली जा सकती है। उदाहरण के लिए पेन के बजाए पैंसिल का प्रयोग करने को FSE की नज़र से देखते हैं।

★ सबसे पहले F से Financial यानी आर्थिक प्रभाव है। पेंसिल प्रयोग करने से पैसे कम लगेंगे। यह प्रभाव सकारात्मक है।

★ S से Social यानी सामाजिक प्रभाव है। पेंसिल का लिखा हुआ मिटाया जा सकता है। यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है।

★ E से Ecological यानी पर्यावरण संबंधी प्रभाव है। पेंसिल बनाने में पेड़ काटने पड़ते हैं। यह नकारात्मक प्रभाव है।

- अब विद्यार्थी 'प्लास्टिक बैन' की सोच को FSE की नज़र से देखेंगे और उसके सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को बताएँगे।
- उनके उत्तर ब्लैकबोर्ड पर एक ग्रिड (तालिका) बनाकर लिखते जाएँ।
- विद्यार्थियों के उत्तर निम्नलिखित हो सकते हैं। यह तालिका केवल संदर्भ के लिए है, विद्यार्थियों को ये उत्तर न बताएँ।

आर्थिक प्रभाव (Financial impact)		सामाजिक प्रभाव (Social impact)		पर्यावरण संबंधी प्रभाव (Ecological impact)	
सकारात्मक	**नकारात्मक**	**सकारात्मक**	**नकारात्मक**	**सकारात्मक**	**नकारात्मक**
पर्यावरण-अनुकूल	प्लास्टिक बैग बिक्रेता को नुकसान	पैकेजिंग से स्वास्थ्य को नुकसान नहीं	पर्याप्त विकल्प न होने के कारण लोगों को असुविधा	समुद्री जीव-जंतुओं तथा वनस्पति का संरक्षण	
री-साइकिल करने में कम संसाधनों का प्रयोग	री-साइकिल की हुई चीजों का व्यापार कम होना	लालियाँ/नाले ब्लॉक न होना	कूड़ा बीनने तथा छाँटने वालों की आजीविका पर असर	पर्यावरण में प्लास्टिक की मात्रा में कमी	
प्लास्टिक के विकल्पों की बिक्री में बढ़ोतरी	पैकेजिंग की कीमत में वृद्धि होने के कारण सामान की कीमतों में वृद्धि	खाने के भंडारण तथा खाने-ले-जाने के परंपरागत तरीकों को बढ़ावा	प्लास्टिक प्रयोग करने के गैर-कानूनी तरीकों में वृद्धि		

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- क्या आपने 'प्लास्टिक बैन' के कारण होने वाले इतने सारे अलग-अलग प्रभावों के बारे में कभी सोचा था? क्यों?
- किसी भी विषय या मुद्दे के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभावों को जानना क्यों आवश्यक है?
- अपने दैनिक जीवन से उदाहरण देकर बताइए कि उनमें FSE मॉडल का प्रयोग कैसे किया जा सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह के विद्यार्थी इस गतिविधि के अनुभव को अपने-अपने समूह में साझा करेंगे। फिर हर समूह से एक विद्यार्थी को पूरी कक्षा के साथ अपनी बात को साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

दूसरा भाग

इस गतिविधि के पहले भाग में विद्यार्थियों को FSE मॉडल के बारे में बताया गया था और इसे प्रयोग करने का उदाहरण दिया गया था। अब गतिविधि के दूसरे भाग में विद्यार्थी FSE मॉडल का प्रयोग करेंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों के 5-6 के समूह बनाएँ और प्रत्येक समूह अपने लिए किसी भी एक व्यक्ति का चयन करेगा जिसके बारे में उन्होंने EMC पाठ्यक्रम (करिकुलम) में जाना है।
- विद्यार्थी करियर एक्सप्लोरेशन से भी किसी एक व्यक्ति को चुन सकते हैं।
- प्रत्येक समूह चुनी गई कहानी के आर्थिक सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों, सामाजिक सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों और पर्यावरण संबंधी सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों के बारे में चर्चा और मूल्यांकन करेगा। विद्यार्थी ऐसा करने के लिए पिछली गतिविधि में प्रयोग की गई तालिका का भी प्रयोग कर सकते हैं।

- प्रत्येक समूह चर्चा किए गए उन्हीं बिंदुओं पर पूरी कक्षा के सामने एक प्रस्तुति देगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- क्या आपके द्वारा चयनित व्यक्ति के कार्य के आर्थिक (Financial), सामाजिक (Social) तथा पर्यावरण संबंधी (Ecological) प्रभावों का विश्लेषण करना आसान था? क्यों?
- आप इन प्रभावों को सकारात्मक तथा नकारात्मक वर्गों में कैसे बाँट पाए?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में हुई चर्चा के मुख्य बिंदु तथा इस गतिविधि में हुए अनुभव को पूरी कक्षा के साथ साझा करेंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

किसी भी कार्य का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव होता है जो पैसा, लोगों और पर्यावरण को प्रभावित करता है। एक बार जब हम इस प्रभाव को समझने और उसका विश्लेषण करने में सक्षम हो जाते हैं, तो हम अपने कार्यों को निर्धारित कर सकते हैं और जो उत्पाद हम बनाना चाहते हैं उसके प्रभाव की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं ।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- कार्यों का विश्लेषण करना क्यों ज़रूरी है? क्या हर कार्य का FSE की नज़र से विश्लेषण किया जा सकता है?
- किसी कार्य के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जानने के बाद अगला क़दम क्या होना चाहिए?
- अगर विश्लेषण करने के बाद आपको लगता है कि आपके किसी कार्य का प्रभाव नकारात्मक अधिक लग रहा है तो आप क्या करेंगे?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

इस गतिविधि तथा चर्चा के द्वारा हमने सीखा कि कोई भी कार्य करने से पहले; उसके कारण स्वयं पर, दूसरों पर तथा पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों के बारे में सोच लेना चाहिए। ऐसा करने से हम अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रति ज़िम्मेदार बनते हैं और कोई भी कार्य बस यूँ ही नहीं करते।

हमें यह भी सोचना है कि यदि हमारे किसी कार्य का किसी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तो हमें क्या करना चाहिए।

विद्यार्थियों के लिए:

आपके बिज़नेस ब्लास्टर (फ़ील्ड प्रोजेक्ट) का FSE मॉडल की नज़र से मूल्यांकन किया जा जाए तो किस प्रकार के प्रभाव दिखेंगे?

यूनिट 4 स्वयं की समझ
Understanding Self

A6R5C5

फ़ैसिलिटेटर के लिए

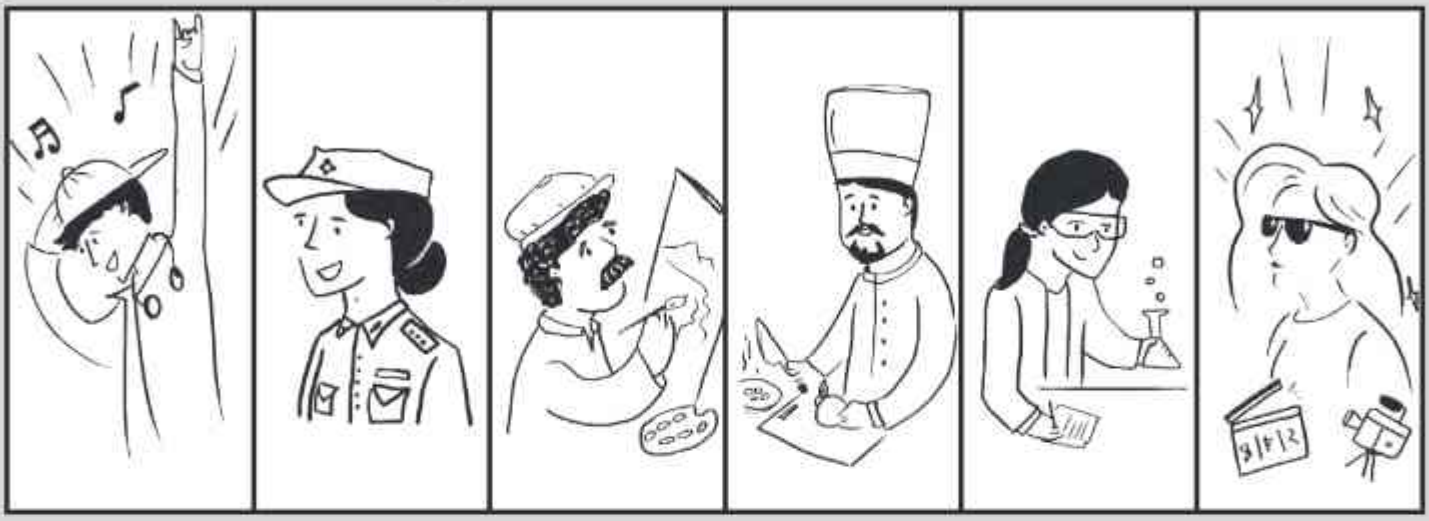

ऊपर दिए गए चित्र में विभिन्न करियर दर्शाए गए हैं। यदि हम सोचें कि अपना करियर चुनने के लिए क्या-क्या जानकारी होनी चाहिए तो कई बिंदु महत्त्वपूर्ण लग सकते हैं जैसे विभिन्न करियरों की जानकारी, हमारे जानने वाले लोगों द्वारा अपनाए गए करियर, करियर के बारे में हमसे जुड़े लोगों की राय, सही समय पर करियर के बारे में गंभीरता से सोचना आदि। इन सभी के साथ करियर चुनने के लिए स्वयं को जानना, पहचानना भी महत्त्वपूर्ण है जिससे कि हम अपनी रुचि, सपनों, क्षमताओं को बेहतर जान पाएँ।

एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी रुचियों, अपने सपनों तथा अपनी क्षमताओं को जानते, परखते रहे हैं। इस यूनिट में वे करियर चुनने के नज़रिए से अपनी क्षमताओं के बारे में सजगता से सोचेंगे और उन्हें प्रयोग करने का अभ्यास करेंगे।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

विद्यार्थी अपनी रुचि एवं क्षमतानुसार अपने भविष्य की दिशा निर्धारित कर पाएँ, इसके लिए उन्हें निम्न क्षमताओं को विकसित करना होगा

1. अपने करियर और उसकी दिशा में बढ़ने के लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सजग होना
2. कोई काम करने से पहले सक्रियता से अपनी क्षमताओं के बारे में सोचना

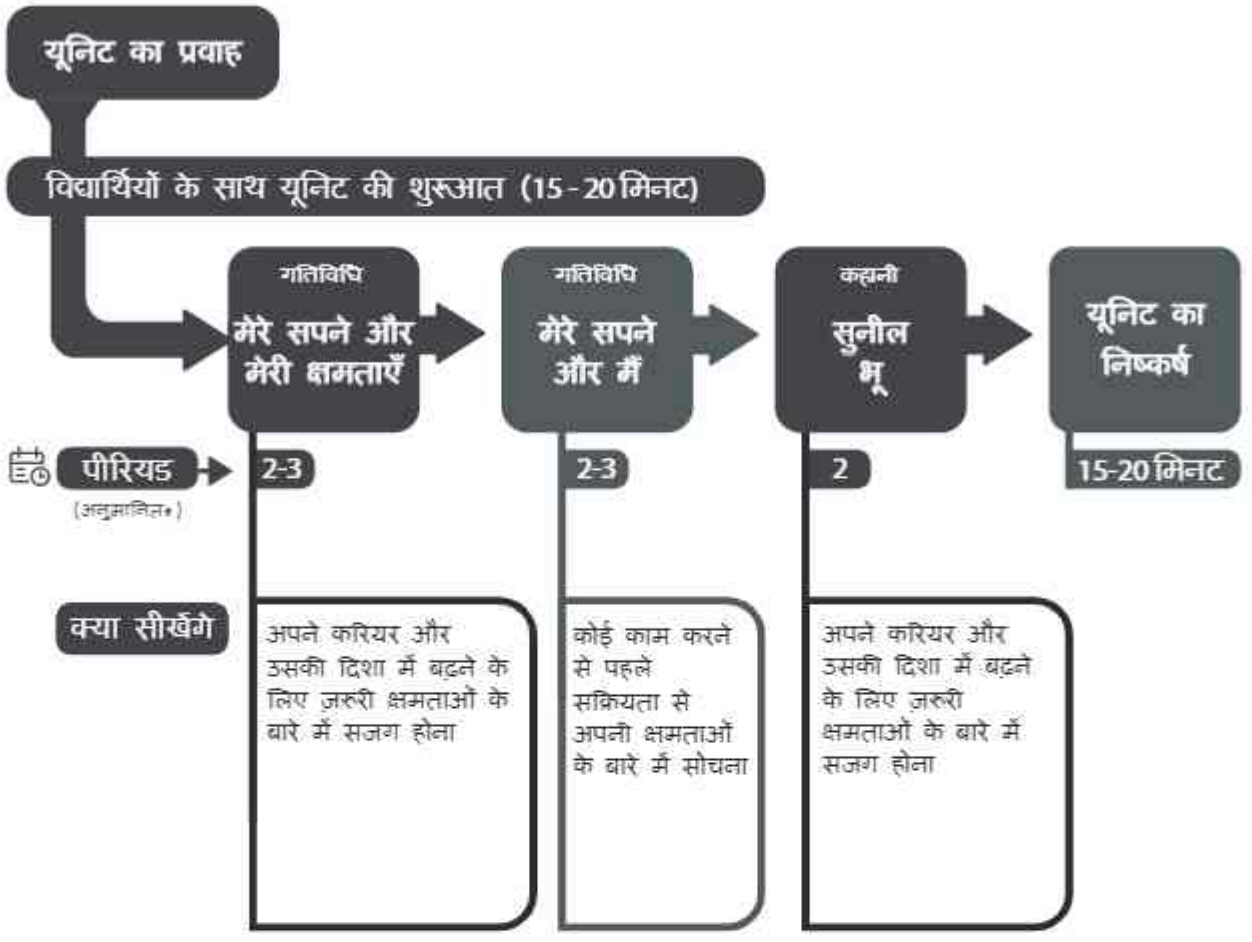

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ेसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

12वीं के विद्यार्थी कक्षा 9 और 10 से ही अपनी क्षमताओं के बारे में सोचते आ रहे हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं को याद करने के लिए कहें और पूछें -

- आपने 10वीं के बाद स्वयं में कौन-कौन सी क्षमताएँ विकसित की हैं? ये आपकी पढ़ाई, किसी भी अन्य रुचि, या इस पाठ्यक्रम में दी हुई क्षमताओं से संबंधित हो सकती हैं। सबके साथ साझा करें।
- क्या आप अपने आसपास ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्हें असल में कुछ और बनना था पर अब वे कुछ और कर रहे हैं?
- आपके हिसाब से जब हम अपने मन के अनुसार अपना व्यवसाय नहीं चुन पाते तो कैसा लगता है?

4.1 गतिविधि | मेरे सपने और मेरी क्षमताएँ

परिचय

क्षमताएँ 3 प्रकार की होती हैं - दिमागी, मूल्य आधारित और अन्य क्षमताएँ। अकसर किसी एक काम को करने के लिए एक से ज़्यादा प्रकार की क्षमताओं की ज़रूरत होती है। इस गतिविधि में हम अपने करियर के लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सोचेंगे।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अपने करियर और उसकी दिशा में बढ़ने के लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सजग होना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को अपनी विभिन्न क्षमताओं का संदर्भ लेते हुए सोचने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विद्यार्थियों से चर्चा करें कि सॉफ़्टवेयर इंजीनियर (software engineer) क्या होता है, क्या करता है इत्यादि। कोडिंग (coding) और एप (app) बनाना क्या होता है, यह भी बताएँ।

कैसे करें → चिंतन एवं चर्चा → सीखें साथियों के साथ → साझा करें

- विद्यार्थी 5-6 के समूह बनाएँ।
- अब उन्हें नीचे दी गई परिस्थिति पढ़कर सुनाएँ-

लता एक कंपनी में HR मैनेजर है। उसका काम है जॉब/नौकरी के पदों के लिए सही लोगों को चुनना। अभी कंपनी में 2 सॉफ़्टवेयर इंजीनियरों की ज़रूरत है जो निम्न काम में शामिल होंगे-

- आम जनता को डॉक्टर के साथ जोड़ने के लिए एक मोबाईल एप (mobile app) बनानी होगी।
- 5 लोगों के साथ मिलकर काम करना होगा।
- डॉक्टर से प्रत्यक्ष (direct) जाकर मिलना होगा।
- अपने नए साथियों का प्रशिक्षण (training) भी करना होगा।

लता ने इस काम के लिए 2 लोगों का चयन किया है जिनका बायो-डाटा (bio-data) नीचे दिया गया है।

Name : Savika Prasad
Age : 22 years
Marks:
10th Grade = 85%
12th Grade = 90%
College:
B. Tech (Software engineer)

Extra curriculars:

- Two online courses on new ways of coding completed with 70% marks.
- Mentored two students in Math. Both students increased their marks by 30%.

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

Name : Aslam Khan
Age : 23 years
Marks:
10th Grade = 90%
12th Grade = 85%
College: B. Tech (Software engineer)

Extra curriculars:
- Organized the college fest
- Volunteer for animal rescuing

- इन दोनों बायो-डाटा (bio-data) में दी गई जानकारी को बोर्ड पर लिख दें या पढ़कर सुनाएँ।
- विद्यार्थियों को काम की ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए इनका विश्लेषण करने को कहें। वे दोनों की 2 क्षमताएँ और 2 "सुधारने योग्य बातें" निकालें जो उन्हें इस काम में मदद करेंगी।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से निम्न पर सोचने और लिखने को कहें-

- ऊपर दिए गए उदाहरणों में कौन-कौन सी अलग-अलग प्रकार की क्षमताओं की ज़रूरत है? क्यों? क्या सिर्फ़ कोडिंग/एप बनाने की क्षमता से यह काम हो सकता है?
- आप अपने संभावित करियर के बारे में सोचें। इसमें सफल होने के लिए अभी आपके पास कौन-सी 2 क्षमताएँ हैं और कौन-सी 2 क्षमताएँ आपको विकसित करनी होंगी?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ भविष्य के लिए ज़रूरी अपनी क्षमताओं के बारे में साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

दिए गए बायो-डाटा (bio-data) में हमने देखा कि असलम और सविका दोनों ने सिर्फ़ एक जैसी पढ़ाई की है और दोनों के अंक भी एक जैसे ही हैं। असलम ने अपने कॉलेज का जलसा (festival) आयोजित किया है जिससे उसे टीम के साथ काम करने का अनुभव (मूल्य आधारित क्षमता) होगा। दूसरी तरफ सविका कोडिंग और गणित में दक्ष (दिमागी क्षमता) है। ऐसी स्थिति में क्या कोई एक व्यक्ति, दूसरे से नौकरी के लिए बेहतर उम्मीदवार है? यह कह पाना बहुत मुश्किल है क्योंकि इस रोल के लिए आपसी सहयोग से काम करना और कोडिंग में दक्षता, दोनों की ही ज़रूरत है। इसी तरह हमें भी भविष्य में कई तरह की क्षमताओं की एक साथ ज़रूरत पड़ेगी और हमें उन सभी को विकसित करना होगा।

4.2 गतिविधि | मेरे सपने और मैं

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने अपने करियर के लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सोचना शुरू किया है। इसके अलावा भी अब तक इस पाठ्यक्रम के द्वारा हमें अपनी क्षमताओं और अपने सपनों के बारे में सोचने का काफ़ी समय मिल चुका है। हमने अनेक उद्यमियों की यात्रा को समझा है और विभिन्न प्रकार के कार्य-क्षेत्रों के बारे में जानकारी भी हासिल की है। इस गतिविधि में हम अपनी इस समझ को अपने भविष्य के बारे में ठोस रूप से सोचने के लिए इस्तेमाल करेंगे।

एकल कार्य

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कोई काम करने से पहले सक्रियता से अपनी क्षमताओं के बारे में सोचना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि को आराम से समयानुसार करें। यदि विद्यार्थियों को निर्धारित से ज़्यादा समय चाहिए तो आप समय बढ़ा सकते हैं।
- इस गतिविधि के दूसरे चरण का आशय यह नहीं है कि विद्यार्थी अपने चेहरे से मिलता हुआ या सुंदर चित्र बनाने का प्रयास करें। उनका ध्यान उन संकेतों पर केंद्रित करने को कहें जो उनके भविष्य की कल्पना को दर्शाता हो।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

इस गतिविधि में 3 चरण हैं।

पहला चरण (10 मिनट)- Visualization

इस गतिविधि की शुरूआत एक visualization से होगी। इसके लिए विद्यार्थियों को निम्न निर्देश दें-

- सभी अपनी आँखें बंद करके भविष्य में जो बनना/करना चाहते हैं, उसकी कल्पना करें। इसके लिए आप उन्हें निम्न निर्देश दे सकते हैं -
    - अपनी पसंद का काम करते हुए आपको कैसा लग रहा होगा?
    - आपकी वहाँ पहुँचने की यात्रा कैसी रही होगी?
    - आप किन नए लोगों से मिले होंगे?
    - आपने क्या नया सीखा होगा?
    - आपके आसपास के लोग आपको कैसे देख रहे होंगे?
    - यह काम करने के लिए आपकी किन क्षमताओं का विकास हुआ होगा?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

दूसरा चरण (15 मिनट) - मेरे भविष्य का पोर्ट्रेट (portrait)

- Visualization कर लेने के बाद विद्यार्थियों को स्वयं का चित्र बनाने को कहें और उसमें पहले चरण में अपने भविष्य के लिए की गई कल्पना के अनुसार नोट्स लिखें।
- चित्र का उद्देश्य यह नहीं है कि उन्हें अपना सुंदर चित्र बनाना है, पर संकेतों का उपयोग करते हुए अपने सपने, क्षमताएँ आदि दर्शाने हैं।
- जैसे कि यदि आपको लोगों से जुड़ना बहुत पसंद है तो आप अपनी इस बात को एक कड़ी के संकेत से दिखा सकते हैं। आप यदि बहुत आत्मविश्वासी हैं तो आप स्वयं को एक पेड़ के रूप में भी दर्शा सकते हैं।
- उन्हें अपनी कल्पना के अनुसार अपने लिए चिह्न चुनने के लिए प्रोत्साहित करें।

तीसरा चरण (20 मिनट)- मेरे भविष्य के लिए चिट्ठी

- उनसे अगले 5 साल बाद के बारे में (2026 के) स्वयं की कल्पना करने को कहें ।
- इसके बाद भविष्य वाले स्वयं की तरफ़ से आज वाले स्वयं को चिठ्ठी लिखने को कहें।
- यह चिठ्ठी वे पहले 2 चरणों के आधार पर लिख सकते हैं और वे निम्न बिंदुओं का ध्यान रख सकते हैं-
    - भविष्य में वे कहाँ पहुँच गए हैं और क्या कर रहे हैं?
    - वे वहाँ तक कैसे पहुँचे ?
    - वहाँ पहुँचने के लिए उन्हें अभी क्या करना होगा?
- आप उन्हें उदाहरण के रूप में एक ऐसी ही चिठ्ठी का अंश पढ़कर सुना सकते हैं। यह चिठ्ठी खान अकादेमी (Khan Academy) के संस्थापक, सलमान खान ने स्वयं को लिखी थी। उन्होंने 2019 में यह चिठ्ठी 2009 वाले सलमान को लिखी थी।

2009 के प्रिय सलमान

मैं यह चिठ्ठी तुम्हें भविष्य से लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे पता है कि तुम एक बहुत दिलचस्प मोड़ पर खड़े हो। तुम्हारे पास अपना खान अकादेमी का शौक है जो तुम्हें घंटों खुशी से व्यस्त रखता है। तुम्हें अपने गणित और विज्ञान को बच्चों तक सरलता से और बिना किसी राशि के पहुँचाने वाले सपने पर पूरा विश्वास है।

ऐसे में यह ज़रूरी है कि तुम अपनी क्षमताओं और अपेक्षित सुधारों के प्रति ईमानदार रहो। ऐसा करने से ही तुम्हें अपनी कमियों के बारे में पता चलेगा और तुम और लोगों से मदद ले पाओगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

तुम कभी-कभी कुछ बातों में जुनूनी (obsessive) हो जाते हो जिससे कि वर्तमान में रहने की क्षमता पर तुम्हें समझौता करना पड़ता है। माइंडफुलनेस (mindfulness) का अभ्यास तुम्हें इसमें मदद कर सकता है।

तुम यह भी जानते हो कि तुम्हें 2-3 से ज़्यादा लोगों की टीम में काम करना अच्छा नहीं लगता। एक ओर जहाँ इसकी वजह से तुम अपना काम जल्दी कर लेते हो वहीं दूसरी ओर यह भी समझना ज़रूरी है कि दुनिया बदलने के लिए तुम्हें बहुत सारे लोगों को अपने मिशन से जोड़ना पड़ेगा।

जैसे अपनी "सुधारने योग्य बातें" हम जल्दी पहचान नहीं पाते, वैसे ही हम अपनी क्षमताओं का भी पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाते। तुम्हें बोलना कम पसंद है पर तुम बहुत अच्छे से कहानियाँ सुना सकते हो। जब तुम किसी चीज़ में विश्वास करते हो तो तुम दूसरों को भी उसके प्रति उत्साहित कर देते हो। तुम अपनी तरफ़ ध्यान आकर्षित करने से बचना चाहते हो पर यह ज़रूरी है कि तुम खुलकर अपनी क्षमताओं को प्रयोग करो, खासकर वहाँ, जहाँ उनसे सकारात्मक बदलाव आ सकता है।

मैं 2019 से लिख रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे अब सब आ गया है। Funds इकठ्ठा करना मेरे लिए अभी भी एक बड़ी समस्या है। पर मैं अब भी इस दुनिया पर एक बहुत अच्छी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव की संभावना से उतना ही उत्साहित हूँ जितना 2009 में था।

2019 का सलमान

- चिठ्ठी शुरू करने के लिए आप उन्हें यह वाक्य बोर्ड पर लिखकर दे सकते हैं-

  मेरे/मेरी प्रिय 12वीं कक्षा के (अपना नाम).....

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ निम्न प्रश्नों पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करें-

- भविष्य के स्वयं की कल्पना करने का अनुभव कैसा था? क्या आप स्वयं को अपने मनपसंद काम करते हुए देख पा रहे थे?
- अपने सपने की दिशा में बढ़ने के लिए आपको किन-किन क्षमताओं को विकसित करने पर काम करना होगा?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

अपने भविष्य को अपने सपनों के अनुरूप ढालने के लिए यह ज़रूरी है कि हम सक्रिय होकर अपनी आने वाली यात्रा के बारे में सोचें। उस दिशा में बढ़ने के लिए ज़रूरी क्षमताओं, संसाधनों और सहायक लोगों से संपर्क करें जिससे कि हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा और मनोबल, दोनों ही मिलता रहे।

4.3 कहानी | सुनील भू

परिचय

जब हमें अपनी रुचियों के बारे में पता होता है और उनके आधार पर जब हम अपना करियर चुनते हैं तो उसके लिए अपनी क्षमताओं को विकसित करना हमारे लिए सहज हो जाता है। क्योंकि हम अपनी मर्ज़ी से कोई काम करना चुनते हैं, तो हमें स्वयं ही उसके बारे में ज़्यादा सीखने की प्रेरणा मिलती है। ऐसा ही इस कहानी में भी हुआ है। आइए जानते हैं सुनील भू की यात्रा के बारे में जिन्होंने अपने पशुओं के प्रेम को अपने व्यवसाय में बदला और उसके लिए ज़रूरी प्रशिक्षण भी हासिल किया।

2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अपने करियर और उसकी दिशा में बढ़ने के लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सजग होना

फ़ैसिलिटेटर नोट

यह कहानी चीज़ (cheese) बनाने की रुचि से जुड़ी हुई है। यदि विद्यार्थियों को "चीज़" के बारे में न पता हो तो, उन्हें पहले उसका अर्थ बताएँ।

भूमिका

विद्यार्थियों से निम्न सवालों पर चर्चा करें-

- क्या आपकी कोई ऐसी रुचि है जिसे आप अपना कैरियर बनाने के बारे में सोचते हैं?
- क्या आपको लगता है यह संभव है?

कहानी

यह कहानी एक शहरी लड़के, सुनील की है जो दिल्ली की एक कॉलोनी में रहता था। वह पढ़ने में ठीक-ठाक था पर पशुओं से उसे बहुत प्यार था, ख़ासकर गाय से।

सुनील भू के पिता एक पायलट थे जो रिटायरमेंट के बाद उनकी माँ के साथ एक रेस्टोरेंट चलाते थे। सुनील भी स्कूल के बाद वहीं मिलता था। सुनील की दो बहनें थी और दोनों ने ही होटल मैनेजमेंट का कोर्स किया था। उनकी तरह सुनील ने भी उसी कोर्स में दाखिला ले लिया पर दिलचस्पी न होने के कारण इंटर्नशिप पूरी नहीं की।

सुनील को अपने हाथ से काम करना और कुछ बनाना बहुत अच्छा लगता था और पशु-प्रेम तो था ही। वे फ़ार्म पर गाय का दूध निकालकर चीज़ (cheese) बनाने लगे। इस काम में उन्हें मज़ा आता था। परन्तु उनके परिवार के हिसाब से यह सब बहुत ही अजीब था। लेकिन सुनील यह भी जानते थे कि जो दिल को पसंद है वही करना है। इसके साथ ही उन्हें व्यावसायिक स्तर पर चीज़ (cheese) बनाने का विचार आया।

यह बात 1985 की है जब भारत में चीज़ (cheese) के बारे में बहुत ही कम लोग जानते थे और वह आसानी से मिलता भी नहीं था। सुनील एक दोस्त की मदद से बेल्जियम (Belgium) में एक फ़ार्म पर चीज़ (cheese) बनाने की तकनीक सीखने पहुँच गए। बहनों ने टिकट और आने-जाने के दूसरे इंतज़ाम कर दिए। परिवार के अन्य लोग कुछ ज़्यादा खुश तो नहीं थे पर उन्होंने रोका भी नहीं। वे

बेल्जियम में एक किसान मार्क के पास पहुँच गए। मार्क फ्रेंच बोलने वाले थे परन्तु सुनील का जुनून देखते हुए उन्होंने इंग्लिश सीखी और दोनों में संवाद होने लगा। मार्क के साथ ही वे हॉलैंड और फ्रांस भी गए। वहाँ उन्होंने कुछ ख़ास क़िस्म का चीज़, जो बॉल के आकार में आता है, बनाने की अलग-अलग विधियों को सीखा।

सुनील ने भारत आकर चीज़ बनाना शुरू किया। माँ के पास ज़मीन का एक टुकड़ा था और माँ ने ही एक गाय भी खरीदकर दी। यही पूँजी थी जिससे शुरूआत हुई। शुरू में तो घर के पिछवाड़े में ही गाय को रखा और उसका दूध निकालकर एक "बॉल चीज़" शौक़ की तरह बनाना शुरू किया। पतीले में ही प्रयोग चलते रहे और एक बॉल चीज़ रोज़ बनता रहा। दोस्त मज़ाक भी उड़ाते थे पर सुनील ने किसी की परवाह नहीं की। निर्वाह के लिए वे पिता के रेस्टोरेंट भी जाते रहे।

सुनील ने भारत और पश्चिमी देशों के मौसम, दूध की क्वालिटी और उसके स्वाद में भी अंतर पाया। परन्तु उन्हें इटली और भारत में बहुत-सी समानताएँ दिखाई दीं इसलिए उन्होंने इटली जाकर भी चीज़ बनाने की कला को समझा। एक बार दिल्ली में उनका बनाया चीज़ एक बहुत बड़े रेस्टोरेंट के मालिक को काफ़ी पसंद आया तो उन्होंने सुनील को प्रतिदिन एक बड़ी मात्रा में चीज़ बनाकर देने का ऑर्डर दिया। सुनील ने उनके लिए चीज़ बनाकर देना शुरू किया और इस तरह फ़्लैंडर्स डेयरी का जन्म हुआ। धीरे-धीरे वे और गाय खरीदते गए और चीज़ उत्पादन भी बढ़ता गया।

1988 में पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने रेस्टोरेंट बंद करके चीज़ बनाने के काम को बढ़ाना शुरू कर दिया। आज फ़्लैंडर्स डेयरी चीज़ एक जाना-माना नाम है और रेस्टोरेंट व होटलों में इनका चीज़ खूब चलता है। सुनील भू की आय 5 करोड़ वार्षिक से भी अधिक है परन्तु सुनील जी के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि वे अपनी रुचि का कार्य कर रहे हैं।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- सुनील को अपने मन का व्यवसाय चुनने में कैसे मदद मिली?
- सुनील की कौन-सी ऐसी क्षमताएँ/गुण थे जिनके आधार पर वे अपने मन का काम कर पाए?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

सुनील भू की कहानी से हमें अपने गुणों को पहचानने और उनके आधार पर अपने लिए काम चुनने और करने की प्रेरणा मिली। हमने समझा कि किस तरह अपनी पसंद का काम करते हुए क्षमताओं का भरपूर उपयोग कर सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

इस यूनिट में आपने अपने करियर और उसके लिए ज़रूरी क्षमताओं के बारे में सोचा। इन क्षमताओं को स्वयं में विकसित करने के लिए आप क्या कर सकते हैं? आपके लिए सहायक लोग या अन्य संसाधन क्या हो सकते हैं जो आपकी मदद कर सकते हैं।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

खुद को समझना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जीवन के हर पड़ाव में हम अपने बारे में नई बातें जानते रहते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि न सिर्फ़ इस यूनिट, बल्कि इस पूरे पाठ्यक्रम से खुद को समझने के बारे में हमने जो रणनीतियाँ या तरीके सीखे हैं, उनका अभ्यास हम अपनी वास्तविक ज़िंदगी में अपनी पसंद का काम करते हुए करें।

यूनिट 5 योजना बनाकर काम करना
Plan and Execute

Y4X4N9

फ़ैसिलिटेटर के लिए

पिछली कक्षाओं में विद्यार्थियों ने कार्य को प्रभावशाली ढंग से करने के लिए योजना बनाने का महत्त्व समझा और योजना बनाते हुए कार्य को छोटे चरणों में बाँटने का अभ्यास किया। योजना बनाते हुए कुछ अन्य बातों का भी ध्यान विद्यार्थियों को दिलाना आवश्यक है जो कि ऊपर दिए गए उदाहरण में झलकता है।

कार्य के लक्ष्य निर्धारित करना, प्राथमिकताएँ तय करना और कार्य की प्रगति को जाँचते रहना - किसी भी कार्य को सुनियोजित ढंग से करने में सहायता करते हैं। योजना बनाते समय कार्य का आकलन करके आवश्यकता पड़ने पर कभी-कभी योजना में बदलाव करने के लिए तैयार रहना भी कार्य अच्छी तरह कर पाने में सहायक होता है।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट के माध्यम से विद्यार्थी किसी कार्य को करने के लिए योजना बनाने तथा योजना बनाने के लिए आवश्यक क्षमताओं को सीखेंगे। ये क्षमताएँ हैं:

1. योजना के छोटे चरणों की प्राथमिकता (priority) निर्धारित करना
2. कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करने के तरीके योजना में शामिल करना
3. समय सीमा को योजना में शामिल करना
4. योजना के अनुसार कार्य का आकलन करना और आवश्यकता पड़ने पर बदलाव करना

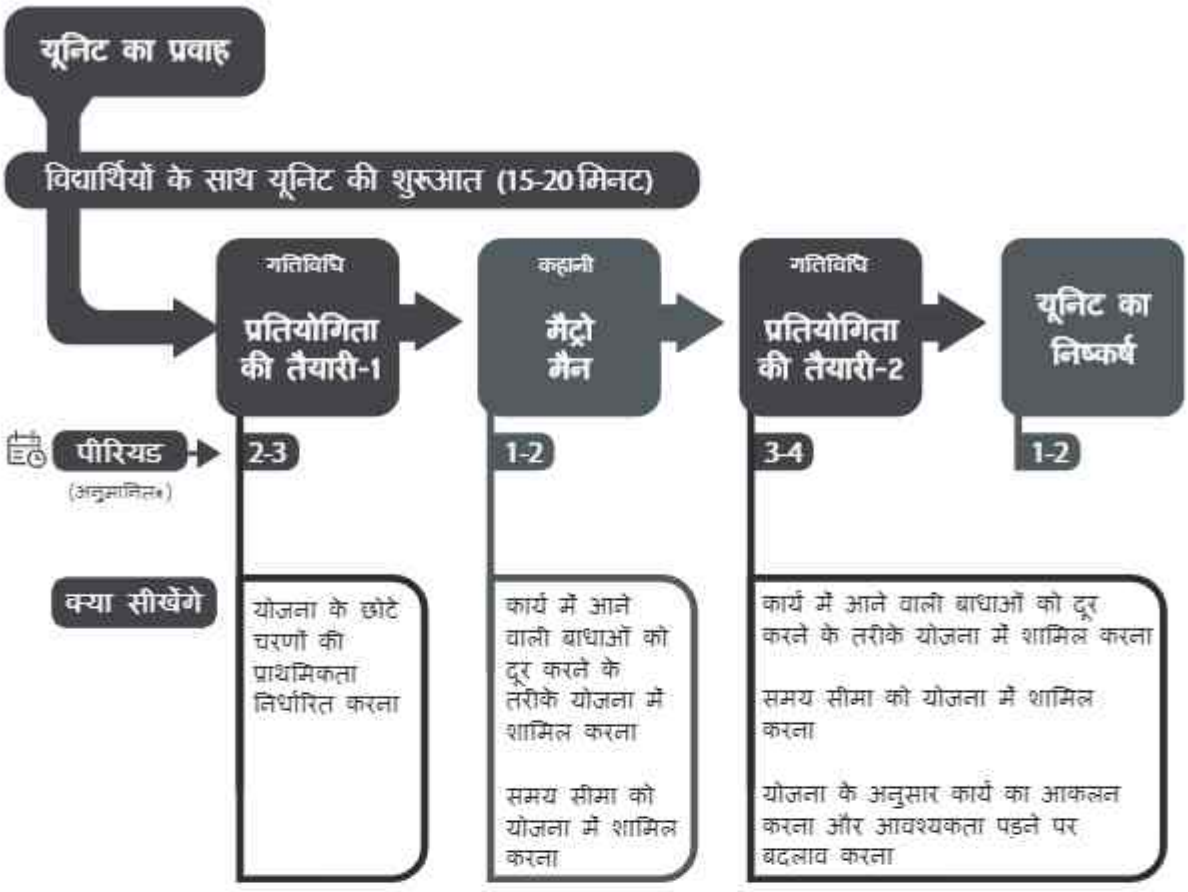

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ेसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों को निम्नलिखित संवाद पढ़कर सुनाएँ:

सोनू: मोनू, कल प्रोजेक्ट जमा कराना है। याद है न!

मोनू: कराना तो है। पर..

सोनू: पर...! फिर तुम्हारा काम पूरा नहीं हुआ। क्या हुआ?

मोनू: बहुत सारे काम थे। सभी विषयों के प्रोजेक्ट एक साथ मिले थे। सबको मैंने शुरू तो किया था पर एक भी पूरा नहीं हो पाया। और जिस प्रोजेक्ट को सबसे ज़्यादा समय दिया था, अब लग रहा है कि उसे पूरा बदलना पड़ेगा।

सोनू: परेशान मत हो। टीचर के पास चलते हैं, उनसे पूछते हैं कि काम करते हुए किन चीज़ों का ध्यान रखना ज़रूरी है।

फिर विद्यार्थियों से पूछें कि क्या उनका भी कोई अनुभव ऊपर लिखी परिस्थिति जैसा है?

कुछ विद्यार्थियों के अनुभव जानने के बाद उन्हें याद दिलाएँ कि पिछली कक्षा में उन्होंने कार्य को अच्छी तरह करने के लिए योजना को छोटे चरणों में बाँटकर करने का अभ्यास किया था। इस यूनिट में वे सीखेंगे कि योजना बनाकर कार्य करने के लिए और क्या करना चाहिए।

5.1 गतिविधि | प्रतियोगिता की तैयारी-1

परिचय

योजनानुसार कार्य को छोटे चरणों में बाँटने के बाद क्या कार्य का अच्छी तरह से होना सुनिश्चित हो जाता है? क्या और करें जिससे समय खराब न हो और कार्य योजना के अनुसार हो - इस गतिविधि में अभ्यास करते हैं।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- योजना के छोटे चरणों की प्राथमिकता निर्धारित करना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

इस गतिविधि में विद्यार्थियों को योजना बनाते हुए कार्यों को प्राथमिकता के क्रम में लिखना है। उन्हें ऐसा स्वयं करने दें, आवश्यकता पड़ने पर ही सहायता करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- 5-6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ।
- उनसे कहें कि तीन दिन बाद 'बेकार वस्तु से उपहार' नाम की एक प्रतियोगिता होने वाली है। जिसमें हर समूह को बेकार सामान से कुछ ऐसी उपयोगी वस्तु बनानी है, जो इतनी अच्छी हो कि उपहार में भी दी जा सके।
- हर समूह को इस प्रतियोगिता की तैयारी के लिए योजना बनानी है। योजना बनाते हुए ध्यान रखना है कि कार्य को छोटे चरणों में बाँटना है।
- योजना बन जाने के बाद निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर विद्यार्थियों को अपनी योजना में बदलाव करके फिर से लिखने के लिए कहें:
    - कौन-सा कार्य सबसे अधिक ज़रूरी है और सबसे पहले किया जाना चाहिए?
    - कौन-सा कार्य न भी करें तो भी कार्य अच्छी तरह हो सकता है?
- हर समूह चर्चा करके कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर क्रम देगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्न प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- योजना बनाते हुए आपने अपने कार्य को किन छोटे चरणों में बाँटा? कैसे निर्णय लिया कि क्या आवश्यक है और क्या नहीं?
- कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर बाँटने के क्या कारण थे और योजना पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?
- पहले बनाई योजना और बदलाव करने के बाद बनी योजना में क्या अंतर था?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी समूह बारी-बारी से योजना में बदलाव करने का अपना अनुभव पूरी कक्षा के साथ साझा करेंगे। ऐसा करने के लिए निम्न बिंदु सहायक होंगे:

- पहली योजना
- बदलाव के बाद बनी योजना
- कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर बाँटने का योजना पर प्रभाव

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

हमने इस गतिविधि में दो बार योजना बनाई। दूसरी बार योजना बनाते हुए हमने छोटे-छोटे कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर क्रम से रखा। ऐसा करने से पता चला कि कौन-सा कार्य अधिक ज़रूरी है और कौन-सा कम ज़रूरी; कौन-सा कार्य पहले करना है और कौन-सा बाद में। प्राथमिकता निर्धारित करने से योजना बेहतर बनती है और कार्य करते हुए समय तथा साधनों का सही उपयोग हो पाता है।

5.2 कहानी | मेट्रो मैन

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने योजना बनाते समय प्राथमिकता निर्धारित करना सीखा। इस कहानी में हम जानेंगे कि एक बड़े प्रोजेक्ट के लिए योजना कैसे बनाई जाती है। दिल्ली के मेट्रो मैन ई० श्रीधरन की इस कहानी में देखेंगे कि योजना बनाते हुए उसमें किस तरह की बाधाएँ आती हैं और उन पर काबू पाने के तरीकों को योजना में कैसे शामिल किया जाता है। साथ ही यह भी जानेंगे कि कार्य को निर्धारित समय में कैसे पूरा किया जा सकता है।

1-2 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करने के तरीके योजना में शामिल करना
- समय सीमा को योजना में शामिल करना

भूमिका

शाइस्ता के घर में गाँव से उसके भाई-बहन आए हैं। वह उन्हें ख़रीददारी कराने चाँदनी चौक ले जा रही है। वे सब ख़रीददारी से अधिक मेट्रो में सफ़र करने को लेकर उत्साहित हैं। जबसे वे मैट्रो में बैठे हैं तबसे मेट्रो के रास्ते देखकर हैरान हो रहे हैं - कोई रास्ता सड़क के भी ऊपर है तो कोई सड़क के नीचे। और चावड़ी बाज़ार तथा चाँदनी चौक मेट्रो स्टेशन देखकर तो वे चकरा ही गए। उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि इतनी भीड़-भाड़ वाली जगहों में मेट्रो स्टेशन बनाने का किसी ने कैसे सोच लिया और सोच भी लिया तो बनाया कैसे।

जब आपने पहली बार मेट्रो में सफ़र किया था तो आपके मन में भी ऐसे ही विचार आए होंगे।

कहानी

दिल्ली की मुश्किल से मुश्किल जगह में भी मेट्रो ले जा पाना संभव हो पाया 'मेट्रो मैन' ई. श्रीधरन की कुशलता से योजना बनाने की क्षमता से।

उन्होंने अपने नेतृत्व में कोंकण रेलवे और दिल्ली मेट्रो रेल का निर्माण करके भारत में जन-यातायात के स्वरूप को बदल दिया। आज दिल्ली मेट्रो दिल्लीवासियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। आइए, ई. श्रीधरन के बारे में और जानते हैं।

ई. श्रीधरन का जन्म 12 जून 1932 को केरल के पलक्कड़ ज़िले में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा पलक्कड़ से पूरी करने के बाद 'गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज' से उन्होंने 'सिविल इंजीनियरिंग' में डिग्री प्राप्त की। उनकी पहली नियुक्ति दक्षिण रेलवे में 'प्रोबेशनरी असिस्टेंट इंजीनियर' के तौर पर हुई। इस नौकरी में आने के क़रीब 9 साल बाद एक भयंकर तूफ़ान आया, जिसके कारण रामेश्वरम को तमिलनाडु से जोड़ने वाला पंबन सेतु टूट गया। उसे ठीक करने के लिए रेलवे ने छह महीने का समय तय किया, लेकिन श्रीधरन ने इसे सिर्फ़ 46 दिनों में बनाकर तैयार कर दिया। यह कैसे संभव हो पाया? श्रीधरन योजना बनाने और उसे लागू करने में माहिर थे। श्रीधरन को इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए रेलवे ने पुरस्कृत भी किया। श्रीधरन का मानना था कि किसी भी परियोजना को उसके निर्धारित समय-सीमा और बजट में पूरा किया जाना चाहिए। ऐसा न होने से दोहरा नुकसान होता है। एक तो परियोजना की लागत बढ़ती है और लोगों को समय से जो लाभ मिलना चाहिए था, वह भी नहीं मिलता। इसी सोच के चलते इस सरकारी इंजीनियर ने हर काम को बढ़िया अंजाम दिया।

इसके बाद उन्होंने कोलकाता मेट्रो, कोचीन शिपयार्ड और कोंकण रेलवे जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं में बेहतरीन काम किया और उनका एक के बाद एक, हर अभियान समय की कसौटी पर खरा उतरता गया। उनकी योजना और योजना को लागू करने की क्षमता ने उन्हें हमेशा सफलता दिलाई।

इन सभी खूबियों और काम के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें दिल्ली मेट्रो का मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया गया। प्रथम चरण से ही दिल्ली मेट्रो का कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण था क्योंकि इसका रास्ता बहुत ही भीड़-भाड़ वाले व्यापारिक क्षेत्र से होकर गुज़र रहा था। इसके साथ ही उन्हें बहुत-सी तकनीकी बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था, जैसे कि मेट्रो के लिए ज़मीन का अधिग्रहण, मेट्रो के काम के दौरान लोगों को कम से कम बाधित करना, उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना, दिल्ली के यातायात को अवरुद्ध न करना। श्रीधरन जानते थे कि हर दिन की देरी दिल्ली मेट्रो को 1.5 करोड़ रुपये का नुकसान पहुँचा सकती थी, इसलिए उन्होंने कॉन्ट्रैक्टर्स को भी जल्द से जल्द भुगतान कराने का प्रबंध किया जिससे कि सामान भी समय से पहुँचे और काम में भी तेज़ी बनी रहे।

श्रीधरन के काम में योजना के क्रियान्वयन का महत्त्व तब अच्छे से देखा जा सकता है जब उन्होंने अपने सभी कर्मचारियों को समय का महत्त्व दर्शाने के लिए अनोखी 'रिवर्स क्लॉक' प्रणाली अपनाई| परियोजना खत्म होने की उलटी गिनती दिखाती हुई घड़ियाँ मेट्रो के सभी दफ़्तरों और वर्कशॉप्स पर लगवाईं। इससे सभी कर्मचारियों के लिए लक्ष्य हमेशा उनके सामने था और काम की तेज़ी भी बनी रहती थी।

सन् 1997 के मध्य तक परियोजना के हर पहलू को समय सीमा के अंतर्गत ही पूरा कर लिया गया। दिल्ली मेट्रो की इस परियोजना ने भारत में आधुनिक तकनीक की आधारशिला रखी और पूरी टीम के अथक प्रयास ने दिल्ली में यातायात के क्षेत्र में क्रांति ला दी। यह श्रीधरन द्वारा योजना बनाने और उसे अच्छी तरह लागू करने की वजह से ही संभव हो पाया।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- दिल्ली में मेट्रो का कार्य करने में योजना बनाने की किन क्षमताओं का प्रयोग हुआ? ऐसा कहानी की किस बात से पता चलता है?
- क्या आपने कभी 'रिवर्स क्लॉक' प्रणाली का प्रयोग किया है या देखा है? विस्तार से बताइए।
- योजना बनाते हुए कार्य में आ सकने वाली बाधाओं को दूर करने के तरीके तथा समय-सीमा निर्धारित करने से योजना तथा कार्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? दैनिक जीवन से कोई उदाहरण देते हुए बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

इस कहानी में हमने देखा कि यदि योजना बनाते समय ही कार्य में आ सकने वाली बाधाओं को सोच लिया जाए और उन्हें दूर करने के तरीके योजना में शामिल कर लिए जाएँ तो कार्य करते हुए परेशानी नहीं होती। साथ ही योजना बनाते हुए हर कार्य को पूरा करने के लिए समय निश्चित कर लिया जाए तो कार्य की प्राथमिकता निर्धारित करना आसान हो जाता है।

5.3 गतिविधि | प्रतियोगिता की तैयारी-2

परिचय

मेट्रो मैन की कहानी से हमने जाना था कि कार्य से संबंधित बाधाओं को दूर करने के तरीके तथा समय-सीमा तय करके योजना को बेहतर बनाया जा सकता है। इस गतिविधि में हम इन क्षमताओं का उपयोग 'बेकार वस्तु से उपहार' की प्रतियोगिता में करेंगे। साथ ही यह भी जानेंगे कि कार्य करते हुए योजना में बदलाव किया जा सकता है या नहीं।

सामूहिक कार्य: 5-6 विद्यार्थी

3-4 पीरियड

क्या सीखेंगे

- कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर करने के तरीके योजना में शामिल करना
- समय सीमा को योजना में शामिल करना
- योजना के अनुसार कार्य का आकलन करना और आवश्यकता पड़ने पर बदलाव करना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि में विद्यार्थियों की चर्चा गतिविधि पर ही केंद्रित रहे।
- गतिविधि के पहले पाँच चरण योजना बनाने के हैं और उसके बाद कार्य करने के लिए- कक्षा में प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- यह गतिविधि शुरू करने से पहले विद्यार्थियों को याद दिलाएँ कि इस गतिविधि के पहले चरण में 'बेकार वस्तु से उपहार' प्रतियोगिता की योजना बनाई थी, कार्य को छोटे चरणों में बाँटा था और फिर कार्यों को प्राथमिकता देकर क्रमित किया था।
- इस गतिविधि में अब उस योजना को और अच्छा बनाने के लिए कुछ बदलाव करने हैं।
- अपने पिछले समूह के सदस्यों के साथ मिलकर हर कार्य के लिए समय-सीमा तय करनी है।
- फिर सोचना है कि प्रतियोगिता की तैयारी में किस तरह की बाधाएँ आ सकती हैं। उन बाधाओं की एक सूची बनाकर उन्हें दूर करने के तरीके लिखने हैं।
- अब 'समय' तथा 'बाधा' दोनों पक्षों को अपनी योजना में शामिल करना है।
- अब हर समूह अपनी योजनानुसार 'बेकार वस्तु से उपहार' प्रतियोगिता के लिए उपहार बनाएगा। उपहार EMC के पीरियड में ही बनाना है और इसे बनाने के लिए हर समूह को 2 पीरियड का ही समय मिलेगा।
- विद्यार्थियों को ध्यान दिलाएँ कि उन्हें अपने द्वारा बनाई गई योजना के अनुसार कार्य का क्रियान्वयन करना है और यदि ज़रूरी लगे तो योजना में बदलाव भी किए जा सकते हैं।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

निम्नलिखित प्रश्नों पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करें:

- आपकी योजना में किस कार्य को कितना समय दिया गया? क्यों?
- आपके समूह ने कार्य में आने वाली क्या बाधाएँ पहचानीं? उन्हें दूर करने के क्या तरीके निकाले?
- इस तरह योजना के अनुसार कार्य करने का आपका अनुभव कैसा रहा?
- क्या आपको इस गतिविधि में कार्य करते हुए योजना में बदलाव करने पड़े? उदाहरण के साथ बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से एक विद्यार्थी पूरी कक्षा को अपने समूह की चर्चा को संक्षेप में बताएगा। चर्चा के बाद हर समूह अपने द्वारा बनाए गए उपहार को पूरी कक्षा को दिखाएगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि से हमने सीखा कि कार्यों की समय-सीमा निर्धारित करने से तथा कार्य में आ सकने वाली बाधाओं के हल सोचकर एक योजना को बेहतर बनाया जा सकता है। कार्य करते समय योजना के अनुसार चलना और आवश्यकता पड़ने पर योजना में बदलाव कर लेना भी कार्य को अच्छी तरह पूरा करने में सहायक होता है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

- कार्य करने से पहले और कार्य करते समय योजना बनाना किस तरह मदद करता है?
- किसी भी कार्य को करने के लिए योजना बनाते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे?
- आपने फ़ील्ड प्रोजेक्ट करते हुए योजना बनाकर कार्य किया होगा। आपका योजना बनाने और उसके अनुसार कार्य करने का अनुभव कैसा रहा? इस यूनिट को करने के बाद क्या आप अपने फ़ील्ड प्रोजेक्ट में कुछ बदलाव करना चाहेंगे?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

कार्य कितना भी बड़ा या मुश्किल क्यों न हो, यदि उसकी योजना बना ली जाए और योजना के अनुसार कार्य किया जाए तो कार्य के परिणाम उम्मीद के अनुरूप आते हैं। योजना बनाते हुए कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करने से अनावश्यक तनाव नहीं होता और समय-सीमा निर्धारित करने से कार्य समय पर पूरे हो जाते हैं।

कार्य में आ सकने वाली बाधाओं के बारे में पहले से सोच लेने से कार्य अच्छी तरह पूरा हो जाने की संभावना बढ़ जाती है। योजना अच्छी बनने के बाद भी कार्य करते हुए आवश्यकता पड़ने पर योजना में बदलाव करना भी एक ऐसा कौशल है जो कार्य को अपेक्षित परिणाम तक ले जाने में मदद करता है।

यूनिट 6 विश्लेषण करके सीखना
Analyze and Learn

M5G2F7

फ़ैसिलिटेटर के लिए

ऊपर दिए गए संवाद को अगर देखें तो पाएँगे कि सोनिया को मोनिका की बात शायद अच्छी नहीं लगी। और अकसर ऐसा होता भी होता है। जब कोई हमारे काम का विश्लेषण करके उस पर अपना मत साझा करता है तो उससे सीख पाने के लिए यह ज़रूरी है कि कही गई बात के लिए ठोस प्रमाण भी हों। नहीं तो यह किसी के व्यक्तिगत मत जैसा भी लग सकता है। अपने और दूसरों के काम का विश्लेषण सीखने का एक बहुत महत्त्वपूर्ण स्रोत है, जैसा कि अभी हमने देखा कि विश्लेषण करने के लिए अवलोकन के साथ प्रमाण भी होने चाहिए। इस यूनिट में हम इन्हीं क्षमताओं का अभ्यास करते हुए विश्लेषण करना सीखेंगे।

क्या सीखेंगे (Learning Outcomes)

इस यूनिट में विद्यार्थी फ़ील्ड प्रोजेक्ट (field project) के दौरान अपने व्यवहार और योगदान का विश्लेषण करते हुए अपनी क्षमताओं को विकसित करने के तरीके सीखेंगे। इसके लिए वे निम्न का अभ्यास करेंगे

1. अपने और दूसरों के व्यवहार का अवलोकन (observation) करना
2. अवलोकन के लिए प्रमाण (evidence) देना

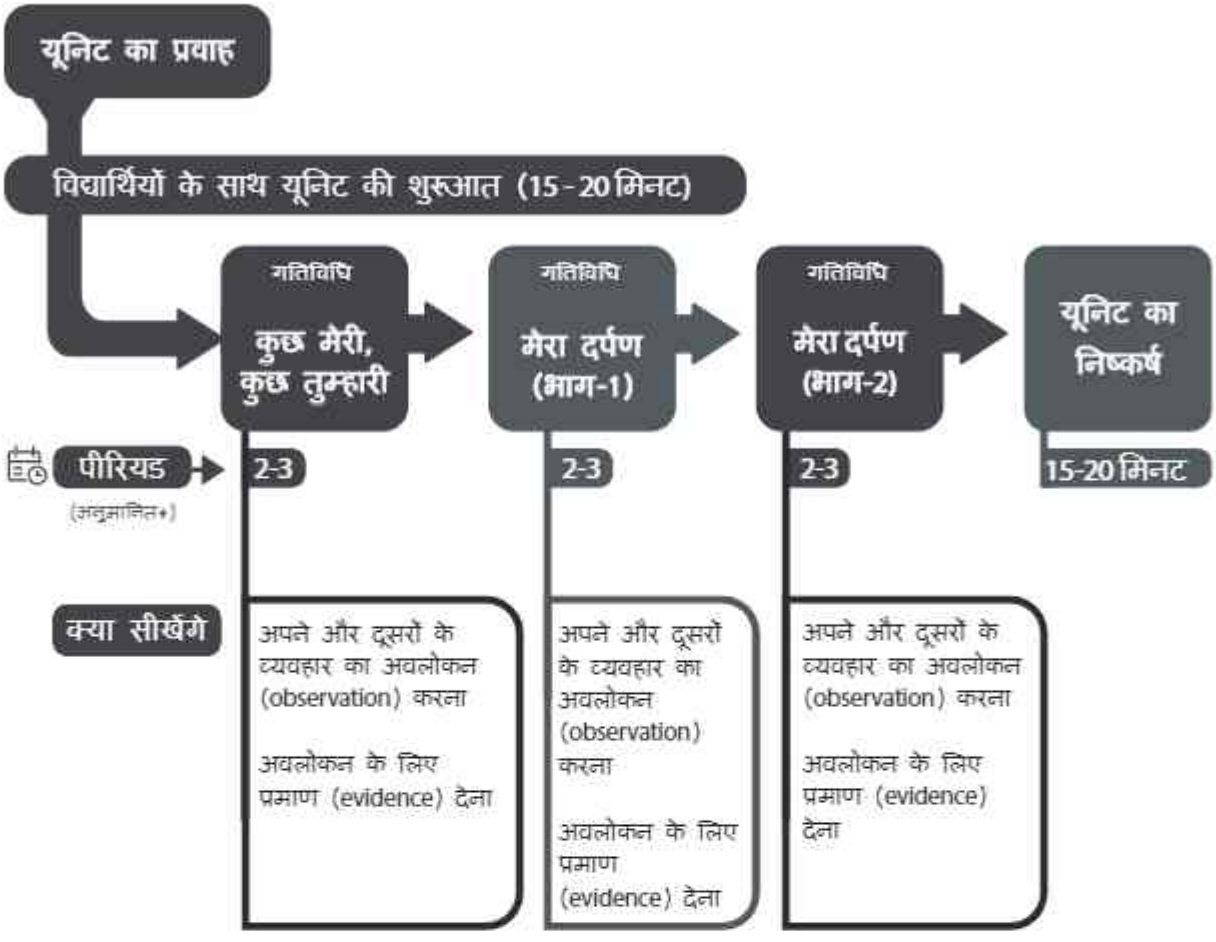

*विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

ऊपर दिए गए संवाद का संदर्भ लेते हुए विद्यार्थियों के साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा करें -

- क्या आपके साथ भी ऐसा होता है कि आपके दोस्त और आसपास के अन्य लोग आपके काम पर अपने सुझाव आपको देते हैं? इसे फ़ीडबैक भी कहते हैं, जब कोई हमारे काम की अच्छी और सुधारने योग्य बातें हमें बताते हैं। क्या आप ऐसा कोई अनुभव साझा करना चाहते हैं? आपको किस बारे में और क्या फ़ीडबैक मिला था?
- कोई आपको फ़ीडबैक देता/देती है तो आपको कैसा लगता है? आप किससे फ़ीडबैक सहजता से (comfortably) ले पाते हैं?

सुनिश्चित करें कि कम से कम 5-6 विद्यार्थी अपने विचार साझा करें। उन्हें बताएँ कि किसी से मिला फ़ीडबैक भी सीखने का महत्त्वपूर्ण माध्यम होता है, अगर हम ध्यान से किसी काम/प्रक्रिया का अवलोकन करें और उसकी अच्छी और सुधारने योग्य बातों को ठोस रूप से समझ पाएँ।

6.1 गतिविधि | कुछ मेरी, कुछ तुम्हारी

नोट- इस गतिविधि में यदि विद्यार्थियों को सामग्री इकट्ठा करने के लिए समय चाहिए तो गतिविधि का परिचय देते हुए उन्हें तैयारी करने के लिए 1 दिन का समय दें।

परिचय

विद्यार्थियों से पूछें कि ऐसे कौन-कौन से काम/कौशल (skill) हैं जो वे बहुत बढ़िया तरीके से कर सकते हैं? पढ़ाई के अलावा अपनी और भी रुचियों और क्षमताओं से जुड़े उत्तरों को बढ़ावा दें। शिक्षक स्वयं अपना उदाहरण देते हुए अपने काम/कौशल बता सकते हैं, जैसे कि ऑरेगैमी(origami- कागज़ को फ़ोल्ड करते हुए आकृतियाँ बनाना), डांस, कोई नई भाषा बोलना आदि।

इस चर्चा के बाद विद्यार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि में हम एक-दूसरे को वह कौशल(skill) सिखाएँगे जो हमें अच्छे से आता है। वह कुछ भी हो सकता है - हेयरस्टाइल, डांस स्टेप, वॉलीबाल खेलने की कोई ट्रिक, अचार बनाने की विधि, ऑरेगैमी (origami) आदि। यह काम ऐसा हो जिससे सीखने और सिखाने वाले, दोनों को मज़ा आए और उसे कुछ नया सीखने की ख़ुशी महसूस हो।

आप आज सोच लीजिए कि एक-दूसरे को क्या सिखाएँगे और इसके लिए क्या कोई सामग्री चाहिए? वह सामान लेकर आप अगले EMC पीरियड में आएँ, हम यह गतिविधि तब करेंगे।

सामूहिक कार्य: 2-2 के जोड़े

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अपने और दूसरों के व्यवहार का अवलोकन (observation) करना
- अवलोकन के लिए प्रमाण (evidence) देना

सामग्री

विद्यार्थियों को अपना कौशल सिखाने के लिए जो भी सामग्री चाहिए, वे इकट्ठा कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें किसी प्रकार का खर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। वे अपने स्कूल में या घर में मौजूद चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए यह गतिविधि कर सकते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- सुनिश्चित करें कि पूरी गतिविधि के दौरान विद्यार्थी एक-दूसरे से खुलकर बात करें।
- विद्यार्थियों के किसी कौशल की कठोर आलोचना न की जाए। निर्णायक न हों। उन्हें अपना कौशल चुनने की पूरी आज़ादी दी जाए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों को गतिविधि का नाम बताएँ।
- सभी विद्यार्थी 2-2 के जोड़े बनाएँ।
- विद्यार्थियों ने जो कार्य एक-दूसरे को सिखाने का सोचा है, वह एक-दूसरे को सिखाना शुरू करें।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अपने साथी को सिखाने के लिए 15 मिनट का समय (कुल 30 मिनट) मिलेगा।
- इसके बाद विद्यार्थियों से निम्न प्रश्नों पर सोचकर नोट्स बनाने को कहें-
    - आपको अपने साथी के समझाने के तरीके में कौन-सी 2 बातें अच्छी लगीं?
    - आपके साथी अपने निर्देश में कौन-सी 2 चीज़ें सुधार सकते हैं?
    - इन दोनों बिंदुओं के लिए प्रमाण दें।
- अब अपना फ़ीडबैक अपने साथी को साझा करने को कहें।
- इस दौरान कोई फ़ीडबैक न समझ आने पर विद्यार्थियों को एक-दूसरे से प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

अपने अनुभव का विश्लेषण कर लेने के बाद विद्यार्थी निम्न प्रश्नों के उत्तर सोचें -

- सीखने वाले और सिखाने वाले में से आपको कौन-सी भूमिका निभाने में ज़्यादा मज़ा आया और क्यों?
- किसी अनुभव के अच्छे और सुधारने योग्य पहलुओं के लिए प्रमाण ढूँढने की अपनी प्रक्रिया सबके साथ साझा करें।
- क्या सिखाते समय आप अपने आप भी अपने निर्देशों को लगातार सुधार पा रहे थे? अगर हाँ, तो यह आप किस आधार पर कर पा रहे थे?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

विद्यार्थियों को अपने साथी के साथ हुई चर्चा को पूरी कक्षा के साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने एक-दूसरे से न केवल एक नया कौशल सीखा बल्कि अनुभव का विश्लेषण करने के बारे में भी बहुत कुछ समझा। कुछ सीखने के लिए यह ज़रूरी है कि हम दूसरों द्वारा साझा किए हुए अवलोकनों पर ध्यान दें और बात समझ न आने पर उससे सवाल भी पूछें। सम्मानपूर्ण तरीके से प्रमाण के साथ अपनी बात रखने से सामने वाला व्यक्ति भी हमारे विश्लेषण को महत्व देगा।

6.2 गतिविधि | मेरा दर्पण (भाग 1)

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने अपनी बात को प्रमाण के साथ रखने का अभ्यास किया जो विश्लेषण करके सीखने और फ़ीडबैक देने-लेने के लिए महत्त्वपूर्ण क्षमता है। इसी अभ्यास को आगे ले जाते हुए अब हम एक वास्तविक अनुभव - फ़ील्ड प्रोजेक्ट के संदर्भ में सोचेंगे। चूँकि हम सबने मिलकर प्रोजेक्ट पर काम किया है तो हमारे पास अपने और अपने साथियों के लिए कई सारे अवलोकन होंगे। उन्हीं के आधार पर हम अपने और अपने साथियों के लिए फ़ीडबैक लिखेंगे। यह अभ्यास हमें असल ज़िंदगी में भी फ़ीडबैक की प्रक्रिया को दक्षता(skillfully) से इस्तेमाल करने का आत्मविश्वास देगा।

एकल कार्य

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे
- अपने और दूसरों के व्यवहार का अवलोकन(observation) करना
- अवलोकन के लिए प्रमाण (evidence) देना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट
- विद्यार्थियों के साथ "कैसे करें" में दिए गए सकारात्मक व सुधार योग्य बातों के उदाहरण साझा करें।
- सुनिश्चित करें कि चिंतन और चर्चा के दौरान विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ खुलकर बात कर पाएँ।
- हर विद्यार्थी तालिका में अपना भी नाम लिखे, यह सुनिश्चित करें।
- तालिका में सभी साथियों का नाम हो, यह सुनिश्चित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों को निम्न तालिका बनाकर दिए गए प्रश्न के अनुसार विश्लेषण करके लिखने को कहें।
  - फ़ील्ड प्रोजेक्ट करते हुए मुझे अपनी और अपने साथियों की क्षमताओं के बारे में क्या सकारात्मक व सुधार योग्य बातें पता चलीं? मेरे पास इनके क्या प्रमाण हैं?

    (इस तालिका का एक उदाहरण आगे दिया गया है जिसमें सकारात्मक बातों, सुधार योग्य बातों और उनके प्रमाण को समझाया गया है। गतिविधि शुरू करने से पहले इसे विद्यार्थियों से ज़रूर साझा करें)।

टीम के सदस्यों के नाम	उनकी सकारात्मक बातें और उनके प्रमाण	उनकी सुधार योग्य बातें और उनके प्रमाण

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विश्लेषण करने के लिए विद्यार्थियों को
  - प्रोजेक्ट के दौरान काम में आने वाली विभिन्न उद्यमशील क्षमताओं की सूची बनाने को कहें जैसे कि संचार, योजना बनाना, रचनात्मकता, आपसी सहयोग आदि।
  - फिर उन्हें प्रोजेक्ट के विभिन्न चरणों में क्षमताओं के उपयोग के बारे में अपने अवलोकन और प्रमाण सोचने को कहें।
- विद्यार्थियों की सुविधा के लिए उनसे निम्न उदाहरण साझा करें-

सकारात्मक बातों के उदाहरण एवं प्रमाण	सुधार योग्य बातों के उदाहरण एवं प्रमाण
मैं टीम के सभी सदस्यों की राय सुनता/सुनती हूँ। प्रोजेक्ट के लिए 1 -2 विचार सबको पसंद आने के बावजूद मैंने सबके विचार सुनने का आग्रह रखा था।	मेरी planning की क्षमता पर मुझे और काम करने की ज़रूरत है। कई बार मैं प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे चरणों में बाँटकर नहीं देख पा रहा/रही थी।
मतभेद होने पर मैं निष्पक्षता से सोच पाता/पाती हूँ। मुझे फाइनैन्स सँभालना था, पर जब मेरे साथियों ने मेरा ध्यान इस बात पर दिलाया कि मुझे गणित पसंद नहीं, तो मैंने उनकी बात पर ध्यान दिया था।	जब तक मेरे साथियों ने मुझसे पूछा नहीं, मुझे प्रोजेक्ट के विचार साझा करने में झिझक महसूस हो रही थी।
मेरा/मेरी साथी A बहुत कुशलता से अपनी बात दूसरों तक पहुँचा पाता/पाती है। सभी लोगों को उसके द्वारा दी गई जानकारी एक ही बार में समझ आ रही थी।	मेरा/ मेरी साथी A थोड़ी आक्रामकता से अपने विचार पर ज़ोर देता/देती है। प्रोजेक्ट के डाटा का संकलन करते वक़्त वह अपने ही तरीके को प्राथमिकता दे रहा/रही थी।

- अपने और टीम के अन्य साथियों के बारे में लिख लेने के बाद विद्यार्थियों से निम्न पर सोचने को कहें -
  - क्या आपके पास अपने साथियों की क्षमताओं और सुधार योग्य बातों के लिए ठोस प्रमाण हैं?

- इस प्रश्न के आधार पर अगर विद्यार्थियों को अपने फ़ीडबैक में कुछ सुधार करने हैं तो उन्हें 10 मिनट का समय दें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थी अपने पास बैठे साथी के साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा करें -

- अपने बारे में और अपने साथियों के बारे में फ़ीडबैक सोचकर आपको कैसा लगा? इससे आपको अपने बारे में क्या पता चला?
- अपने या दूसरों के काम/व्यवहार का विश्लेषण करने में अवलोकन और प्रमाणों की क्या भूमिका है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद कम से कम 10 विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ फ़ीडबैक देने और लेने के प्रति अपनी भावनाएँ और रणनीतियाँ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि में आपने खुद के बारे में और साथियों के बारे में फ़ीडबैक सोचा व लिखा। किसी को फ़ीडबैक देते समय यह बहुत ज़रूरी है कि हम अपने फ़ीडबैक में सहायक प्रमाणों का प्रयोग करें। साथ ही साथ हमें अपने अनुभवों का निरंतर विश्लेषण करते हुए खुद को फ़ीडबैक देते रहना चाहिए जिससे कि हम अपने हर अनुभव से सीखते हुए आगे बढ़ सकते हैं। हम हर दिन या हर हफ़्ते अपने बारे में या अपने आसपास की स्थितियों के बारे में आ रहे विचार एक डायरी में लिख सकते हैं या इसके बारे में बातचीत कर सकते हैं जिससे कि हम ठोस रूप से खुद के बारे में सोच सकें।

6.3 गतिविधि | मेरा दर्पण (भाग 2)

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने खुद के बारे में और अपने साथियों के बारे में फ़ीडबैक लिखा और यह सोचा कि हम कैसे प्रमाणों की मदद से उसे और ठोस बना सकते हैं। इसी अभ्यास को आगे ले जाते हुए अब हम फ़ील्ड प्रोजेक्ट के अनुभव के विश्लेषण को एक-दूसरे के साथ साझा करेंगे। साथ ही साथ अपनी पूरी टीम के साथ बनी समझ से अपने बारे में कुछ नई बातें जानेंगे और कुछ पुरानी बातों की पुष्टि(validate) करेंगे।

सामूहिक कार्य - फ़ील्ड प्रोजेक्ट के समूह

2-3 पीरियड

क्या सीखेंगे

- अपने और दूसरों के व्यवहार का बारीकी से अवलोकन (observation) करना
- अपने अवलोकनों के लिए प्रमाण (evidence) देना

सामग्री | कागज़ पेन

फ़ैसिलिटेटर नोट

- अलग-अलग समूहों में जाकर गहराई से सोचने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें व ज़रूरत के अनुसार मदद करें।
- इस गतिविधि में इस्तेमाल की गई तालिका जोहारी विंडो (Johari Window) कहलाती है जिसे अकसर खुद को बेहतर समझने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
    - इसके चार डिब्बे हमारी विभिन्न क्षमताओं को दर्शाते हैं जो इस तालिका में लिखे हुए हैं।
    - तालिका का "न खुद को पता है, न ही दूसरों को पता है" वाला डिब्बा खाली रह सकता है। इसका अर्थ यह है कि हमें एक बार में अपने बारे में सब कुछ नहीं पता होता। हमेशा कुछ न कुछ ऐसा होता है जो समय के साथ-साथ पता चलता है, यह बात विद्यार्थियों को बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थी अपने-अपने फ़ील्ड प्रोजेक्ट के समूहों में फ़ीडबैक के नोट्स लेकर बैठ जाएँ जो उन्होंने पिछली गतिविधि में लिखे थे।
- इसके बाद अगले 20 मिनट में टीम के सभी साथी एक-एक करके अपने साथियों को उनके बारे में फ़ीडबैक देंगे। (सकारात्मक व सुधार योग्य)
- जिसको फ़ीडबैक मिल रहा है वह ध्यान से सुने और नोट्स बनाए।
- जब सभी साथियों को फ़ीडबैक मिल जाए, तब फ़ैसिलिटेटर नीचे दी गई तालिका को ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ और चारों डिब्बों का अर्थ विद्यार्थियों को समझाएँ। अब तक की गतिविधि के आधार पर विद्यार्थी कुछ उदाहरण भी दे सकते हैं।
- विद्यार्थी अपनी कॉपी में दूसरों द्वारा मिले फ़ीडबैक को व अपने खुद के विचारों को तालिका के उचित डिब्बों में लिखें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

हमारी विभिन्न क्षमताएँ

हमारी वे क्षमताएँ जिनके बारे में हमें खुद भी पता है और दूसरों को भी पता है	हमारी वे क्षमताएँ जिनके बारे में हमें खुद को नहीं पता लेकिन दूसरों को पता है
हमारी वे क्षमताएँ जिनके बारे में हमें खुद को पता है लेकिन दूसरों को नहीं पता है	हमारी वे क्षमताएँ जिनके बारे में न खुद को पता है, न ही दूसरों को पता है

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

तालिका भरने के बाद पूरी कक्षा में विद्यार्थियों के साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा करें -

- आपने खुद के बारे में क्या-क्या नया जाना? आपको कैसा महसूस हो रहा है?
- जब आप अपने साथियों को कोई फ़ीडबैक दे रहे थे तब आपको क्या आसान और मुश्किल लगा और क्यों?
- अपनी क्षमताओं (सकारात्मक व सुधार योग्य) को आप आगे कैसे प्रयोग करना चाहेंगे?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

जो विद्यार्थी अपनी तालिका को पूरी कक्षा के साथ साझा करना चाहते हैं, उन्हें एक प्रदर्शनी की तरह अपनी तालिका साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

इस गतिविधि में हमने फ़ील्ड प्रोजेक्ट के बारे में विश्लेषण करके अपनी क्षमताओं के बारे में काफ़ी महत्वपूर्ण बातें जानीं। जिस प्रकार हमारे विचार दूसरों की क्षमताओं के विकास में सहायक होते हैं, उसी प्रकार दूसरों के विचार भी हमारी क्षमताओं को प्रभावित करते हैं। हम जाने-अनजाने अकसर ऐसा ही करते हैं। अगर हम सोच-समझकर प्रमाण के साथ अपने विचार साझा करें और खुले दिमाग से दूसरों की बातों को सुनें तो हर अनुभव से कुछ न कुछ सीखने की संभावना बढ़ जाती है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- सामूहिक/साझा अनुभवों के दौरान या बाद में अपने साथियों से फ़ीडबैक लेना कैसे सहायक है?
- इस यूनिट में आपने किसी अनुभव का अवलोकन करने के क्या-क्या तरीके जाने? विस्तार से बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

इस यूनिट की गतिविधियों द्वारा हमने यह जाना कि हर अनुभव का विश्लेषण करने से न केवल खुद के बारे में बल्कि अपने साथ काम कर रहे साथियों के बारे में भी बहुत-कुछ पता चलता है। इसके लिए यह ज़रूरी है कि हम अपने कार्यों का अवलोकन करें ताकि हमारे पास अपनी क्षमताओं व व्यवहार के लिए प्रमाण हों। इससे न सिर्फ़ हम अनुभवों का विश्लेषण करके अपने बारे में सीख पाएँगे बल्कि उपयोगी फ़ीडबैक देकर अपने साथियों के विकास में भी मदद कर पाएँगे।

C-1 माइंडफुलनेस
Mindfulness

E5V8T8

माइंडफुलनेस (Mindfulness) का अर्थ है पूरा ध्यान देते हुए वर्तमान के प्रति सजग बने रहने की अवस्था। माइंडफुलनेस की प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों को अपने वातावरण, संवेदनाओं, विचारों एवं भावनाओं के प्रति सजग करना है जिससे वे अपने सामान्य व्यवहार में सोच-विचार करके बेहतर प्रतिक्रिया (response) देने में सक्षम हो जाएँ। यह एक सरल प्रक्रिया है जो कोई भी, कहीं भी और कभी भी कर सकता है। माइंडफुलनेस के अभ्यास से कई फ़ायदे हैं:

ध्यान बनाए रखना - पढ़ाई या अन्य काम, स्कूल में या घर पर

काम के प्रति सजग रहना - काम या बात, सही है या गलत

ध्यान रखने की बातें

करें

- स्वयं की सक्रिय भागीदारी और सजगता
- प्यार, सौहार्द, विनम्रता, शांत वातावरण
- सहजता और भागीदारी

न करें

- शब्द या मंत्र का उच्चारण
- तनावपूर्ण अभिव्यक्ति, जैसे- डाँट, सख्त शब्द, दबाव
- विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार से टोकना

माइंडफुलनेस का कार्यक्रम

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस Everyday Mindfulness	हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस Monthly Mindfulness
शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)	**शुरुआत :** माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)
साधारण EMC क्लास प्रत्येक दिन की EMC क्लास में केवल चेक-इन और चेक-आउट की प्रक्रिया होगी।	**माइंडफुलनेस का विस्तृत सत्र (कोई भी एक) -** • माइंडफुलनेस का परिचय • Mindful Listening • Mindful Silence • Mindful Breathing
अंत : साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)	**अंत :** साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस (Everyday Mindfulness)

शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

निर्देश

- माइंडफुल चेक-इन के द्वारा हम अपना ध्यान पहले से कर रहे कार्य से हटाकर, वर्तमान में लेकर आते हैं। इसका अभ्यास कभी भी, कहीं भी हो सकता है।
- चेक-इन शुरू करने से पहले अपनी जगह पर आराम से बैठ जाइए।
    - आरामदायक स्थिति में बैठकर, चाहें तो कमर सीधी करके आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में मुश्किल महसूस हो रही हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
    - अपने हाथ डेस्क पर या अपनी सुविधानुसार रख सकते हैं।
- अपना ध्यान पहले अपने आसपास के वातावरण में उत्पन्न हो रही आवाज़ों पर ले जाएँ और उसके बाद अपनी साँसों की प्रक्रिया पर ले जाएँगे।
    - ये आवाज़ें धीमी हो सकती हैं...या तेज़, रुक-रुककर आ सकती हैं...या लगातार।

      (20 सेकंड रुकें)
    - जैसी भी हों, इन आवाज़ों के प्रति सजग हो जाएँ। ध्यान दें कि ये आवाज़ें दूर से या रही हैं या पास से।

      (30 सेकंड रुकें)
    - अब अपना ध्यान अपनी साँसों पर लेकर जाएँ। साँसों के आने और जाने पर ध्यान दें।
    - साँसों को किसी प्रकार बदलने की कोशिश न करें। केवल अपनी साँसों के प्रति सजग हो जाएँ।

      (10 सेकंड रुकें)
    - ध्यान दें कि साँस कब अंदर आ रही है और कब बाहर जा रही है। अंदर आने और बाहर जाने वाली साँस में कोई अंतर है या नहीं। क्या ये साँसें ठंडी हैं या गरम...तेज़ी से आ रही हैं या आराम से....हल्की हैं या गहरी।
    - अपनी हर साँस के प्रति सजग हो जाएँ।

      (20 सेकंड रुकें)
    - धीरे-धीरे अपना ध्यान अपने बैठने की स्थिति पर ले आएँ और जब भी ठीक लगे, अपनी आँखें खोल सकते हैं।

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

फ़ैसिलिटेटर नोट

- साइलेंट चेक आउट के बाद कोई भी प्रश्न न पूछें।
- अगर कोई विद्यार्थी अपना अनुभव साझा करना चाहता है तो उसे मौका दे सकते हैं।

निर्देश

- कक्षा का अंत हम साइलेंट चेक आउट से करेंगे।
- अपनी इच्छा अनुसार आँखें बंद रखें या खुली रखकर नीचे की ओर देखें।
- आज की गई गतिविधियों से उत्पन्न विचारों और भावनाओं पर मनन (reflection) करें।
- साइलेंट चेकआउट के लिए 1-2 मिनट देने हैं और कोई निर्देश नहीं दिया जाएगा।

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 1 माइंडफुलनेस का परिचय

शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: माइंडफुलनेस का परिचय: 20-30 मिनट

फ़ैसिलिटेटर नोट

- हर महीने के पहले सोमवार को दिए गए 4 सत्र में से कोई भी एक चुनकर, उस सत्र में दी गई माइंडफुलनेस गतिविधि विद्यार्थियों को करवाएँ।
- नीचे दिए गए बिंदुओं पर विद्यार्थियों से उनके स्तर के अनुसार, उनके जीवन से संबंधित उदाहरणों पर चर्चा करें।
- सभी विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए प्रेरित करें और सभी उत्तरों को ध्यान से सुनें।

निर्देश

"EMC क्लास में हर महीने के पहले सोमवार को आप माइंडफुलनेस की अलग-अलग गतिविधियाँ करेंगे।"

प्रश्न

- क्या कोई बताना चाहेगा कि आपके अनुसार माइंडफुलनेस क्या है?
- पिछले साल माइंडफुलनेस के अभ्यास से आपको क्या मदद मिली?

निर्देश

- "शांत बैठकर, आँखें बंद रखकर मन में जो भी विचार आते हैं, उन्हें आने दें।"
  (1 मिनट रुकें)
- अब आँखें खोलें।

प्रश्न

- कितने विद्यार्थियों के विचार बीते हुए पल/घटना के बारे में थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार आने वाले पल की प्लानिंग/चिंता के बारे थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार इस पल या वर्तमान के बारे में थे?

साझा करें

- ज़्यादातर यह पाया जाता है कि अधिकतर विचार भूतकाल या भविष्य में रहते हैं, जबकि हम कार्य वर्तमान में करते हैं।
- Mind full का अर्थ है कि दिमाग पहले से ही तमाम तरह की बातों से भरा हुआ है, उलझन में है।
- Mindful का अर्थ है पूरे ध्यान के साथ कोई भी क्रिया करना। इस अभ्यास को माइंडफुलनेस कहते हैं। वर्तमान में बने रहना, अभी के प्रति सजग तथा सचेत रहना ही माइंडफुलनेस है।
  माइंडफुलनेस के अभ्यास से-
  - पढ़ाई के दौरान ध्यान कक्षा में बनाए रखने में मदद होती है। स्कूल में या घर पर पढ़ाई करते वक़्त फ़ोकस बनाए रखने में मदद मिलती है।
  - ध्यान देने के अभ्यास से तनाव, उदासी, चिंता, अकेलापन जैसी परेशानियाँ कम होती हैं।
  - यदि हर क्षण हमारा ध्यान जो कार्य कर रहे हैं, उस पर होगा तो कार्य जल्दी, बेहतर तरीके से और बिना तनाव के कर पाएँगे।

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 2 Mindful Listening

शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Listening: 5 मिनट

चरण - 1

- आज आप शांत बैठकर अपने आसपास की आवाज़ों पर ध्यान देने वाले हैं। इसी को Mindful Listening कहते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफ़िक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने इत्यादि की हो सकती हैं।
- अपना ध्यान अपने आसपास के वातावरण से आती हुई आवाज़ों पर ले जाएँ। आवाज़ अच्छी है या बुरी ऐसा सोचे बिना, उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करे।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।
आँखें खोलकर कक्षा से सामूहिक रूप में पूछें - कौन-कौन सी आवाज़ें सुनीं?

चरण - 2

- दोबारा से आरामदायक स्थिति में बैठें, कमर सीधी करें और धीरे-धीरे आँखें बंद करें।
- वातावरण में उपस्थित आवाज़ों को फिर से सुनें। हो सकता है कुछ आवाज़ों पर पहले ध्यान न गया हो।
- ध्यान दें - कौन-कौन सी आवाज़ें वातावरण में हैं? कौन-कौन सी ऐसी आवाज़ें हैं जो आपको लगातार सुनाई दे रही हैं?
- आवाज़ें अच्छी हैं या बुरी, ऐसा सोचे बिना उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वे इस बारे में सजग होकर अपना ध्यान वापस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करें।

यह 2-3 मिनट तक करवाएँ।

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- इस गतिविधि के दौरान आपको कैसा अनुभव हुआ?
- क्या पहली और दूसरी बार के ध्यान से सुनने के अनुभव में कोई अंतर था?
- किनका ध्यान आवाज़ों से भटका? (हाथ उठवाया जा सकता है।)
- यदि आपका ध्यान भटका तो क्या आप उसे वापस आवाज़ों पर ला पाए?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 3 Mindful Silence

शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Silence: 5 मिनट

चरण - 1

- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफ़िक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने इत्यादि की हो सकती हैं।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।

चरण - 2

- धीरे-धीरे अपना ध्यान इन आवाज़ों के बीच की ख़ामोशी पर लाएँ। इस ख़ामोशी को सुनने/ महसूस करने का प्रयास करें तथा अपना ध्यान इस ख़ामोशी पर केंद्रित करें।
- अगर किसी को लगे कि उनका ध्यान ख़ामोशी से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापस ख़ामोशी पर लाने का प्रयास करे।

यह गतिविधि 2-3 मिनट तक करवाएँ।

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- आपका अनुभव कैसा रहा?
- पहले आवाज़ों पर और उसके बाद ख़ामोशी पर ध्यान देने के अनुभव किस तरह अलग थे?
- क्या ख़ामोशी को सुनना मुश्किल था? इसका क्या कारण रहा होगा?
- क्या आपने पहले भी कभी वातावरण में ख़ामोशी को महसूस किया था?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस (Monthly Mindfulness)

सत्र 4 Mindful Breathing

शुरुआत : माइंडफुल चेक-इन (Mindful Check In): 3-5 मिनट

गतिविधि: Mindful Listening

A | ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय लेकर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फ़र्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न हैं?

B | Mindful Breathing: 5 मिनट

चरण - 1

- Mindful Breathing में हम अपना ध्यान अपनी साँस पर लेकर आते हैं और हर अंदर-बाहर आती जाती साँस पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठकर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- अपने शरीर के अंदर आती तथा बाहर जाती प्रत्येक साँस पर ध्यान दें।
- अपने पेट पर एक हाथ रखें।
- श्वास के साथ-साथ इस बात पर ध्यान दें कि साँस लेते और छोड़ते समय पेट कब अंदर की तरफ़ जाता है और कब बाहर की ओर फूलता है।

यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।

प्रश्न:

- क्या आपने अपने पेट को फूलते और अंदर जाते हुए महसूस किया?
- आपका पेट कब अंदर गया और कब बाहर की ओर फूला?

चरण - 2

- गतिविधि को दोबारा 1-2 मिनट के लिए करवाएँ।
- एक बार फिर विद्यार्थियों को ध्यान से जाँचने के लिए बोलें कि साँस लेने तथा छोड़ने और पेट के अंदर और बाहर होने में क्या संबंध है?

C | गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- सामान्यतः साँस लेते समय क्या आपका ध्यान पेट के अंदर-बाहर होने पर जाता है?
- पेट और श्वास पर ध्यान देने से क्या साँस की गति में बदलाव आता है?
- साँस गहरी व ध्यानपूर्वक लेने का अनुभव कैसा था?

अंत : साइलेंट चेक आउट (Silent Check Out): 1- 2 मिनट

C-2 स्टूडेंट स्पेशल
Student Special

M8J2B5

इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन (GD) के प्रोफ़ेशनल करियर में महत्त्व से हम सुपरिचित हैं। जॉब एप्लीकेशन, एम्प्लाइज या बिज़नेस पार्टनर्स का सिलेक्शन, या सह-कर्मचारियों के साथ मिलकर कोई भी निर्णय लेते समय, इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन (GD) जैसी परिस्थितियाँ मिलती ही हैं। विद्यार्थियों को इन परिस्थितियों में प्रैक्टिस और फ़ीडबैक, दोनों मिले; इसलिए स्टूडेंट स्पेशल में इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन (GD) को शामिल किया गया है। इसमें विद्यार्थी ही स्टूडेंट स्पेशल गतिविधियों के संचालन की ज़िम्मेदारी लेते हैं, वे योजना बनाकर काम करना भी साथ-साथ सीखते हैं।

स्टूडेंट स्पेशल

- इंटरव्यू
- ग्रुप डिस्कशन (GD)

प्रभावी संचार के लिए फ़ीडबैक के बिंदु:

- Eye Contact
- हाथ और चेहरे के हावभाव
- आवाज़ का उतार चढ़ाव
- समय का उपयोग

गतिविधि से संबंधित फ़ीडबैक के बिंदु:

इंटरव्यू:

- सवाल के हिसाब से योग्य उत्तर देना

ग्रुप डिस्कशन (GD):

- बात का उदाहरण के साथ समर्थन करना
- स्पष्टीकरण के लिए प्रश्न पूछना
- दूसरों को बात ख़त्म करने देना

क्षमताएँ

प्रभावी संचार | आत्मविश्वास | योजना बनाकर काम करना

गतिविधियों का परिचय

इंटरव्यू	• एक उम्मीदवार और 2 इंटरव्यूअर। • इंटरव्यूअर 3 प्रश्न पूछेंगे; उम्मीदवार हर प्रश्न का 1 मिनट में उत्तर देंगे।
ग्रुप डिस्कशन (GD)	• 8-10 के समूहों में विद्यार्थी एक विषय पर चर्चा करेंगे। • सभी के विचारों को जानते हुए और उनका आदर करते हुए समूह के विद्यार्थी एक सहमति बनाने की कोशिश करेंगे।

स्टूडेंट स्पेशल क्लास की संरचना

समय सारणी	• साप्ताहिक : प्रत्येक शनिवार का EMC पीरियड • अतिरिक्त : कोई भी खाली पीरियड
संचालन टीम	• 5 विद्यार्थियों की टीम गतिविधि चुनेगी और गतिविधि का संचालन करेगी। • क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम चुनी जाएगी। • हर बार नए विद्यार्थियों को मौका मिलेगा।
फ़ैसिलिटेटर की भूमिका	• पहली बार संचालन टीम का चयन करने और गतिविधि शुरू करने के लिए मदद करेंगे। • गतिविधि के संचालन में कोई कठिनाई होती है तो सहायता के लिए उपलब्ध रहेंगे।

एंकर

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करेगा।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय देगा।
- सेशन प्लान के मुताबिक संचालन टीम के सदस्यों को स्टेज पर आमंत्रित करेगा।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

जोक मास्टर

क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाएगा। (1 मिनट में)

इंटरव्यू मास्टर

- गतिविधि का संचालन करेगा।
- उन विद्यार्थियों को मौका देगा जिन्होंने पहले नहीं बोला है।
- इंटरव्यू के लिए प्रश्न सूची पहले से तैयार करके रखेगा, जिसमें 3 प्रकार के प्रश्न होंगे।

उदाहरण के लिए प्रश्न यूनिट के अंत में दिए गए हैं।

मास्टर ऑब्ज़र्वर

- एंकर और इंटरव्यू मास्टर को रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन (अवलोकन) नोट करेगा।
- इंटरव्यू देने वाले उम्मीदवार के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी, उम्मीदवार के ऑब्ज़र्वर रहेंगे जो उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।

क्या अवलोकन करें ?

- क्या वे प्रश्न के हिसाब से उचित उत्तर दे पाते हैं?
- क्या वे इंटरव्यूअर के साथ Eye Contact रख पाते हैं?
- क्या वे हावभाव तथा आवाज़ के उतार-चढ़ाव से अपनी बात को प्रभावी बना पाते हैं?

फ़ीडबैक देते हुए क्या साझा करें?

- दो चीज़ें जो उन्होंने अच्छी कीं।
- एक चीज़ जो वे अगली बार बेहतर सकते हैं।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

टाइमकीपर

- वहाँ बैठेगा जहाँ से उम्मीदवार उसे देख पाएँ।
- बचा हुआ समय दर्शाने के लिए हरा, पीला और लाल कार्ड रखेगा।
- 30 सेकंड बचे - **हरा** कार्ड, 15 सेकंड बचे - **पीला** कार्ड, समय समाप्त - **लाल** कार्ड

गतिविधि के बाद : टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा -

- क्या कक्षा समय अनुसार चली?
- किन उम्मीदवारों ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

5-7 मिनट

एंकर करे:

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करे।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय दे।
- टाइमकीपर को कार्ड के साथ अपना स्थान लेने के लिए कहे।

⇄ जोक मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

जोक मास्टर करे:

- क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाए। (1 मिनट)

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- सूचना दे: इंटरव्यू देने वाले उम्मीदवार के आसपास बैठे 3 विद्यार्थी, उम्मीदवार के ऑब्ज़र्वर रहेंगे जो उसे रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।
- ऑब्ज़रवेशन के मुद्दे साझा करे: क्या ऑब्ज़र्व करना है और फ़ीडबैक कैसे देना है।

⇄ इंटरव्यू मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

12-15 मिनट

इंटरव्यू मास्टर करे:

- 3 विद्यार्थियों को आमंत्रित करे: 1 उम्मीदवार, 2 इंटरव्यूअर
- इंटरव्यू इस प्रकार होगा-
  - इंटरव्यू मास्टर इंटरव्यूअर को प्रश्नों की सूची देगा जिसमें प्रश्नों के 3 विभाग हैं - उम्मीदवार का परिचय, उनकी रुचि और अनुभव, उनके विचार और महत्त्वाकांक्षाएँ।
  - इंटरव्यूअर 1 मिनट का समय लेकर 3 प्रश्न (तीनों विभाग से एक-एक) चुने।
  - इन 3 प्रश्नों के साथ इंटरव्यू होगा, और हर प्रश्न का उत्तर देने के लिए 1 मिनट का समय मिलेगा।
  - उत्तर देने से पहले उम्मीदवार कुछ सेकंड सोचने के लिए ले सकते हैं।
  - 3 अलग विद्यार्थियों के साथ (1 उम्मीदवार, 2 इंटरव्यूअर) इंटरव्यू की प्रक्रिया को दोहराएँ।

(नोट: इंटरव्यू मास्टर उन विद्यार्थियों को आमंत्रण दे जिन्होंने पहले नहीं बोला है।)

⇄ मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

7-9 मिनट

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- एंकर और इंटरव्यू मास्टर के लिए फ़ीडबैक साझा करे। (1-2 मिनट)
- हर उम्मीदवार के 3 ऑब्ज़र्वर को उम्मीदवार के साथ बैठकर फ़ीडबैक देने के लिए कहे। (2-3 मिनट)
- बचे हुए समय के मुताबिक 2 से 5 ऑब्ज़र्वर कक्षा के सामने फ़ीडबैक साझा करें। (3-4 मिनट)

⇄ टाइमकीपर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

टाइमकीपर करे:

- टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करे - **(1-2 मिनट)**
  - क्या कक्षा समय अनुसार चली?
  - उम्मीदवारों ने किसी उत्तर के लिए 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से ज़्यादा समय लिया?

1-2 मिनट

एंकर + मास्टर ऑब्ज़र्वर करें:

- तालियों के साथ क्लास समाप्त करें।
- अगली क्लास के लिए संचालन टीम चुनें।

एंकर

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करेगा।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय देगा।
- सेशन प्लान के मुताबिक संचालन टीम के सदस्यों को स्टेज पर आमंत्रित करेगा।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

जोक मास्टर

क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाएगा। (1 मिनट में)

GD मास्टर

- गतिविधि का संचालन करेगा।
- विद्यार्थियों को 8-10 के समूहों में बाँटेगा और हर समूह में विद्यार्थियों से भूमिकाओं का चयन कराएगा। (2 ऑब्ज़र्वर और 1 टाइमकीपर प्रति समूह)
- ग्रुप डिस्कशन का विषय पहले से तैयार करके रखेगा।

उदाहरण के लिए विषय यूनिट के अंत में दिए गए हैं।

मास्टर ऑब्ज़र्वर

- एंकर और GD मास्टर को रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन (अवलोकन) नोट करेगा।
- हर समूह में 2 ऑब्ज़र्वर रहेंगे, दोनों ऑब्ज़र्वर 3-4 विद्यार्थियों को ऑब्ज़र्व करेंगे और उन्हें रचनात्मक फ़ीडबैक देने के लिए ऑब्ज़रवेशन नोट करेंगे।

क्या ऑब्ज़र्व करें?

- **सटीकता से कहना:** क्या वे अपने मुद्दे को उदाहरण के साथ बता पाते हैं?
- **ध्यान से सुनना:** क्या वे किसी की बात समझ न आने पर स्पष्टीकरण (clarity) के लिए प्रश्न पूछ पाते हैं?
- **सम्मान की भावना:** क्या एक विद्यार्थी ने अन्य विद्यार्थी की बात ख़त्म होने से पहले उसे रोका?
- **प्रभावी संचार:** क्या वे हावभाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव से अपनी बात को प्रभावी बना पाते हैं?

फ़ीडबैक देते हुए क्या साझा करें ?

- दो चीज़ें जो उन्होंने अच्छी कीं।
- एक चीज़ जो वे अगली बार बेहतर सकते हैं।

एंकर और मास्टर ऑब्ज़र्वर: क्लास के अंत में अगली क्लास की संचालन टीम का चयन करेंगे।

टाइमकीपर

- प्रत्येक समूह में 1 टाइमकीपर, वहाँ बैठेगा जहाँ से प्रतिभागी उसे देख पाएँ।
- अपनी बात रख रहे साथियों को बचा हुआ समय दर्शाने के लिए हरा, पीला और लाल कार्ड रखेगा।
- 30 सेकंड बचे - **हरा** कार्ड, 15 सेकंड बचे - **पीला** कार्ड, समय समाप्त - **लाल** कार्ड

गतिविधि के बाद : अपने-अपने समूह में टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा -

- किन साथियों ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

5-7 मिनट

एंकर करे:

- माइंडफुलनेस के साथ क्लास शुरू करे।
- संचालन टीम के सदस्यों का परिचय दे।
- जोक मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

जोक मास्टर करे:

- क्लास को एक मज़ेदार चुटकुला सुनाए। (1 मिनट)

- मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- सूचना दे: हर समूह में 2 ऑब्ज़र्वर रहेंगे। दोनों ऑब्ज़र्वर 3-4 विद्यार्थियों को ऑब्ज़र्व करेंगे और गतिविधि के बाद रचनात्मक फ़ीडबैक साझा करेंगे।
- ऑब्ज़रवेशन के मुद्दे साझा करे: क्या ऑब्ज़र्व करना है और फ़ीडबैक कैसे देना है।

- GD मास्टर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

12-15 मिनट

GD मास्टर करे:

- विद्यार्थियों के 8-10 के समूह बनाए।
- हर समूह में विद्यार्थियों से भूमिकाओं का चयन कराए। (2 ऑब्ज़र्वर और 1 टाइमकीपर प्रति समूह)
- ग्रुप डिस्कशन के बारे में बताए:
  - ग्रुप डिस्कशन और डिबेट अलग-अलग होते हैं।
  - ग्रुप डिस्कशन में हमें एक-दूसरे के विचार जानने हैं, वाद-विवाद नहीं करना है।
  - सभी साथी दूसरों के विचारों का सम्मान करते हुए अपनी बात रखें और एक सहमति बनाने की कोशिश करें।
  - एक समय पर एक ही साथी अपनी बात रखे। प्रत्येक साथी को अपनी बात रखने के लिए 1 मिनट का समय मिलेगा।
- ग्रुप डिस्कशन के विषय की घोषणा करे।
  - सभी साथियों को सोचने के लिए 1 मिनट का समय दे।
  - 10 मिनट तक सभी समूहों में ग्रुप डिस्कशन होगा।
- समय समाप्त होने पर सभी समूहों से एक-एक प्रतिनिधि बताएँ - उनका समूह सहमति बना पाया या नहीं।
- सभी विद्यार्थी तालियों से अपने प्रयासों की सराहना करें।

- मास्टर ऑब्ज़र्वर को स्टेज पर आमंत्रित करे। तालियाँ...

7-9 मिनट

मास्टर ऑब्ज़र्वर करे:

- एंकर और GD मास्टर के लिए फ़ीडबैक साझा करे। (1-2 मिनट)
- हर समूह में ऑब्ज़र्वर को साथियों के साथ बैठकर फ़ीडबैक साझा करने के लिए कहे। (2-3 मिनट)
- बचे हुए समय के मुताबिक 2 से 5 ऑब्ज़र्वर कक्षा के सामने फ़ीडबैक साझा करें। (3-4 मिनट)

- प्रत्येक समूह में टाइमकीपर को रिपोर्ट साझा करने के लिए कहे।

हर समूह के टाइमकीपर करे:

- अपने समूह में टाइम रिपोर्ट प्रस्तुत करे - **(1-2 मिनट)**
  - किन साथियों ने 30 सेकंड से कम या 1 मिनट से अधिक समय लिया?

1-2 मिनट

एंकर + मास्टर ऑब्ज़र्वर करें:

- तालियों के साथ क्लास समाप्त करें।
- अगली क्लास के लिए संचालन टीम चुनें।

उदाहरण के लिए

इंटरव्यू

इंटरव्यू के लिए प्रश्न:

मेरा परिचय

- अपने परिवार के साथ कौन-से कार्य करने में आपको सबसे ज़्यादा मज़ा आता है? क्यों?
- आपके परिवार के कौन-से सदस्य एकदम आपके जैसे हैं? किस तरह से?
- अपने बारे में कौन-सी एक चीज़ आपको सबसे अच्छी लगती है? क्यों?
- अपने बारे में आप कौन-सी एक चीज़ बदलना चाहेंगे? क्यों?
- आप सबसे ज़्यादा खुश कब होते हैं? क्यों?

रुचि और अनुभव

- आपके कौन-से शौक़ हैं? आप इनका अभ्यास या practice कैसे करते हैं?
- आपका अभी तक किया हुआ सबसे कठिन काम कौन-सा था? क्यों?
- आप आखिरी बार कब गुस्सा हुए थे? आपको किस वजह से गुस्सा आया था?
- जीवन में कौन-सी चीज़ आपने मुश्किल से सीखी है?
- आपने किसी की मदद की हो, ऐसा एक किस्सा बताइए।
- इस साल के स्कूल के सबसे यादगार अनुभव का वर्णन कीजिए।

मेरे विचार और महत्त्वाकांक्षाएँ

- अगर आपका जीवन एक किताब होता, तो उसका नाम क्या होता, और उसका अंत आप कैसा चाहते?
- ऐसी कौन-सी बात आप मानते हैं, जिसे ज़्यादातर लोग नहीं मानते?
- अगर आप एक थैले में समा जाने वाला सामान ही अपने पास रख पाते, तो क्या-क्या रखते?
- क्या हाई स्कूल में समाज सेवा का काम अनिवार्य होना चाहिए? क्यों और किस तरह?
- विद्यालय का अगर एक नियम आप बदल सकते, तो कौन-सा नियम बदलते? क्यों?
- आप अपने आपको 10 साल बाद क्या करते हुए देखना चाहते हैं?

GD

ग्रुप डिस्कशन के विषय

- भारत में अन्य खेलों की तुलना में क्रिकेट का प्रचलन।
- सोशल मीडिया का आम जीवन पर प्रभाव।
- भ्रष्टाचार कभी ख़त्म नहीं होगा।
- WhatsApp न्यूज़ चैनल का स्थान ले रहा है।
- ऑनलाइन शॉपिंग अच्छी चीज़ है।

ये कुछ उदाहरण हैं। ज़रूरत के हिसाब से आप इनसे अलग कुछ और विषय भी ले सकते हैं।

C-3 करियर एक्सप्लोरेशन
Career Exploration

Q7P9H4

विद्यार्थियों की क्षमताओं के बारे में बनी समझ और विभिन्न करियर्स (careers) में इन क्षमताओं के महत्त्व को जोड़ती हुई एक कड़ी है करियर एक्सप्लोरेशन। यह विद्यार्थियों के लिए मौका है अपनी रुचि, क्षमता, जिज्ञासा या महत्त्वाकांक्षा के आधार पर नौकरी, बिज़नेस या कोई और काम करने वाले व्यक्तियों का इंटरव्यू करके, उनके काम करने की जीवन शैली को गहराई से जानने का। करियर के अलग-अलग अवसरों की जानकारी पाकर विद्यार्थी पढ़ाई के बाद करियर चुनने के लिए ज़्यादा सक्षम बनेंगे।

इंटरव्यू से पहले*	
करियर्स का माइंड मैप	2 - 3 पीरियड
किन लोगों का करेंगे इंटरव्यू	1 - 2 पीरियड
इंटरव्यू के प्रश्न	2 पीरियड
इंटरव्यू का अभ्यास	1 - 2 पीरियड

इंटरव्यू के दौरान*	
ध्यान रखने योग्य बातें	1 पीरियड
विभिन्न करियर्स में कार्यरत लोगों का इंटरव्यू	हर महीने

इंटरव्यू के बाद	
अनुभव साझा करना	हर महीने के आखिरी सोमवार/मंगलवार का EMC पीरियड

* विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

विद्यार्थियों के साथ करियर एक्सप्लोरेशन की शुरूआत:

विद्यार्थियों से निम्न प्रश्न पर चर्चा करते हुए **करियर एक्सप्लोरेशन** की शुरूआत करें-

12वीं कक्षा के बाद आपने अपने करियर के क्या-क्या विकल्प सोचे हैं? ये आप कैसे सोच पाए?

विद्यार्थियों के उत्तरों की सराहना करते हुए उन्हें बताएँ कि करियर एक्सप्लोरेशन में हम विभिन्न नौकरियों और उद्यमों में कार्यरत लोगों से मिलेंगे और करियर के आयामों को समझेंगे। इस प्रक्रिया की शुरूआत हम कुछ गतिविधियों से करेंगे जो हमें अलग-अलग करियर्स के बारे में सोचने में मदद करेंगी और इंटरव्यू लेने के लिए हमें तैयार करेंगी।

इंटरव्यू से पहले | करियर्स का माइंड-मैप (2-3 पीरियड)

परिचय

करियर एक्सप्लोरेशन की शुरुआत करने के लिए हमें अलग-अलग करियर्स और उनके आपसी संबंध समझने होंगे। अपनी और अपने साथियों की इस समझ को अपने समक्ष एक साथ लाने के लिए हम माइंड-मैप की मदद लेंगे। माइंड-मैप का एक उदाहरण बगल के चित्र में दिया गया है। अपनी समझ बढ़ाने के लिए हम अपने परिवार और घर के आसपास अलग-अलग करियर्स से जुड़े लोगों की मदद भी ले सकते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पूरी कक्षा के साथ 2 अलग-अलग करियर्स के बारे में चर्चा करके दोनों के माइंड मैप ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ।

कैसे करें

फ़ैसिलिटेटर करें

Round 1:

- बोर्ड पर 2 कॉलम बनाएँ - नौकरियाँ और उद्यम (बिज़िनस)
- विद्यार्थियों से पूछें कि वे करियर एक्सप्लोरेशन में कौन-सी नौकरियों और उद्यमों के बारे में जानना चाहेंगे? यह ऐसे करियर्स हो सकते हैं जो वे खुद करने की इच्छा रखते हों या जिनके बारे में वे जानना चाहते हों।
- विद्यार्थियों के उत्तर बोर्ड पर लिखकर 10-10 नौकरियों और उद्यमों की सूची बनाएँ।

Round 2:

- बोर्ड पर बनी सूची में से एक नौकरी और एक उद्यम चुनें।
- दोनों करियर्स के बारे में चर्चा करके माइंड-मैप ब्लैक बोर्ड पर बनाएँ।
- माइंड मैप बनाने के लिए निम्न प्रश्नों के बारे में सोचें:
  - इस व्यक्ति के कार्य स्थल में कर्मचारी कौन-से अलग-अलग प्रकार के काम करते हैं ?
  - इस करियर से संबंधित और काम कौन-से होते हैं? (जैसे - कौन-से उत्पाद या सेवा इस करियर के लिए उपयोगी या ज़रूरी हैं? इस व्यक्ति के ग्राहक कौन-कौन हो सकते हैं?)
  - याद रहे: हो सकता है कि किसी करियर के बारे में सोचते समय नौकरी और उद्यम; दोनों की संभावनाएँ दिखें। ऐसे में उन सभी संभावनाओं को अपने माइंड-मैप में लिखें।

कैसे करें

विद्यार्थी करें

- विद्यार्थी 5-6 के समूह बनाएँ।
- हर समूह बोर्ड पर बनी सूची में से एक नौकरी और एक उद्यम चुने।
- दोनों करियर्स के बारे में चर्चा करके माइंड-मैप एक-एक कागज़ पर बनाएँ। (10 मिनट)
- हर समूह अपने माइंड-मैप बगल के समूह को देगा।
- यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी, जब तक हर समूह अन्य सभी समूहों के माइंड-मैप देख न ले।
- सभी माइंड-मैप क्लास की दीवारों पर लगाएँ जिससे विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकें और उनमें अपने विचार जोड़ सकें।
- सभी माइंड-मैप देखने के बाद विद्यार्थी अपनी-अपनी पसंद के ऐसे करियर्स की सूची बनाएँ जिनको वे गहराई से समझना चाहते हों। इनमें 10 नौकरियाँ और 10 उद्यम होने चाहिए।

इंटरव्यू से पहले | किन लोगों का करेंगे इंटरव्यू? (1-2 पीरियड)

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने विभिन्न करियर्स के बारे में सोचा और अलग-अलग करियर्स के आपसी संबंधों को माइंड-मैप के ज़रिए समझा। इसके बाद हमने ऐसे करियर्स की सूची बनाई जिनके बारे में हम गहराई से जानना चाहते हैं। अब हम सोचेंगे कि उन करियर्स से जुड़े लोगों से कहाँ मिला जा सकता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को अलग-अलग करियर्स, संस्थानों और लोगों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करें।
- जिन लोगों से मिलना होगा, ज़रूरी नहीं कि विद्यार्थी उन्हें पहले से जानते हों।
- यदि विद्यार्थियों को कम लोग मिलते हैं तो उन पर दबाव न डाला जाए बल्कि उन्हें तब भी प्रोत्साहित करें।

कैसे करें

- सभी विद्यार्थी अपनी पसंद की 10 नौकरियों और 10 उद्यमों की सूची बना लें, तब विद्यार्थी फिर से 5-6 के समूह बनाएँ।
- समूह में चर्चा करके विद्यार्थी सोचें कि अपनी सूची के हर करियर से जुड़े व्यक्तियों से वे कैसे संपर्क करेंगे-
    - क्या इस करियर से जुड़े किसी व्यक्ति को आप जानते हैं?
    - क्या इस करियर से जुड़े किसी व्यक्ति को, जिसे शायद आप जानते न हों, अपने घर के आसपास ढूँढ सकते हैं? उदाहरण- नर्स, फ़िटनेस ट्रेनर आदि।
- इस प्रक्रिया के बाद विद्यार्थी ऐसे 10 व्यक्तियों की सूची बनाएँगे जिनका वे इंटरव्यू करना चाहते हों।
    - इस सूची में 5 ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो कोई नौकरी करते हों, और 5 ऐसे जो उद्यम करते हों।
    - यह सूची विद्यार्थी अपनी रुचि और इंटरव्यू लेने में सुगमता के आधार पर बनाएँ।

नौकरी	व्यक्ति का नाम एवं मिलने का स्थान	उद्यम	व्यक्ति का नाम एवं मिलने का स्थान

इंटरव्यू से पहले | इंटरव्यू के प्रश्न (1 पीरियड)

परिचय

अलग-अलग करियर्स में काम कर रहे लोगों की सूची बनाने के बाद समय आता है उनके साथ बातचीत करने का। इस बातचीत को सार्थक बनाने के लिए हमें पूरी तैयारी के साथ उन लोगों के पास जाना होगा। उनके करियर के वास्तविक अनुभव के बारे में जानने के लिए हम उनसे कौन-से प्रश्न पूछेंगे? आइए सोचते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों को ऐसे प्रश्न सोचने के लिए प्रेरित करें जिससे इंटरव्यू देने वाले व्यक्ति अपने करियर के लाभ व कमियाँ - दोनों बता पाएँ।

कैसे करें

फ़ैसिलिटेटर करें

Round 1:

- विद्यार्थियों को प्रश्नों की सूची दें जो वे इंटरव्यू में पूछ सकते हैं। इस सूची को पढ़ने के लिए उन्हें 5 मिनट का समय दें। (यह सूची गतिविधि के अंत में दी गई है।)
- विद्यार्थियों द्वारा चुने गए किसी एक करियर को बोर्ड पर लिखें।
- विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें कि इस करियर के बारे में और जानने के लिए इस सूची में और कौन-से प्रश्न जोड़ सकते हैं?
- विद्यार्थियों से सूची के हर विभाग (परिचय, शुरुआत, संघर्ष आदि) के लिए कुछ अतिरिक्त प्रश्नों के सुझाव लें।

विद्यार्थी करें

Round 2:

- विद्यार्थी अपनी सूची के व्यक्तियों से पूछे जाने वाले और प्रश्न सोचें।
- सोचे हुए प्रश्न जोड़कर हर विद्यार्थी इंटरव्यू के लिए अपने प्रश्नों की सूची बनाएँ।
- जोड़े हुए प्रश्न बगल में बैठे विद्यार्थी के साथ साझा करें।

प्रश्नों की सूची

परिचय

- आप कौन-सी कक्षा तक स्कूल में पढ़े? कौन-से स्कूल में?
- स्कूल के दौरान आपकी किन विषयों में अधिक रुचि थी? पढ़ाई के साथ-साथ आपको किन गतिविधियों में भाग लेना अच्छा लगता था?
- मेरी उम्र में, क्या अपने भविष्य के लिए आपके कुछ सपने थे?
- _____
- _____

शुरुआत

- आपने सबसे पहले कौन-सा काम शुरू किया? उस समय आपके परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति कैसी थी? (परिवार, पैसा, संपत्ति, दोस्त आदि)
- आपको अपने पहले कार्य की कौन-सी बातें पसंद हैं और कौन-सी नहीं?
- _____
- _____

संघर्ष

- शुरू से लेकर आज तक की अपनी जीवन-यात्रा के विषय में हमें कुछ और बताएँ।
- आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियाँ और समस्याएँ क्या थीं जिनका आपने सामना किया? इन सबके बावजूद किस चीज़ के कारण आप आगे बढ़ते रहे?
- आपके अपने काम में कौन-सी बातें तनाव देती हैं?
- _____
- _____

सफलता

- आपकी जीवन-यात्रा की कुछ बड़ी और छोटी सफलताएँ क्या हैं?
- आपके किन गुणों एवं क्षमताओं ने सफलता को हासिल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई?
- अपने काम में आज आपको कौन-सी चीज़ सबसे ज़्यादा संतोष देती है?
- _____
- _____

सीख

- जब आप पीछे मुड़कर अपने जीवन में लिए हुए निर्णयों को देखते हैं, तब आप उनमें क्या बदलाव करना चाहेंगे?
- अपने काम को आप किस तरह आगे ले जाना चाहते हैं?
- आप अपने काम के शुरुआती दौर और आज की चुनौतियों में क्या बदलाव देखते हैं?
- _____

इंटरव्यू से पहले | इंटरव्यू का अभ्यास (1-2 पीरियड)

परिचय

हमने इंटरव्यू लेते समय पूछे जाने वाले प्रश्नों की सूची बना ली है। लेकिन क्या हम ये सारे प्रश्न सीधे पूछने लगेंगे? हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि सामने वाले व्यक्ति इंटरव्यू के उद्देश्य को अच्छे से समझें, जिससे वे सहजता से हमारे प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ। आइए, थोड़ी प्रैक्टिस कर लेते हैं उन्हें बताने की - कि हम उनका ही इंटरव्यू क्यों ले रहे हैं, और उनसे हमें क्या जानना है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

सुनिश्चित करें कि प्रत्येक जोड़ी के दोनों विद्यार्थियों को अभ्यास करने का बराबर समय मिले।

कैसे करें

- विद्यार्थी 2-2 की जोड़ी में एक-दूसरे को अपना और करियर एक्सप्लोरेशन का परिचय देंगे। (5 मिनट)
  - परिचय में क्या शामिल होना चाहिए?
    - विद्यार्थी का परिचय
    - करियर एक्सप्लोरेशन का परिचय
    - इस व्यक्ति के साथ क्यों बात करना चाहते हैं और उनका कितना समय लेंगे
  - परिचय देते समय क्या ध्यान में रखेंगे?
    - Eye Contact
    - सम्मानपूर्ण व्यवहार
- उदाहरण के लिए निम्न परिचय विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ:

> "हमारे स्कूल में एक नया पाठ्यक्रम आया है, जिसका नाम है EMC (एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम)। इसके माध्यम से हम अपने करियर के लिए विभिन्न अवसरों के बारे में जानकारी हासिल करेंगे और अपना आत्मविश्वास बढ़ाना, नई चीज़ें सीखना, समस्याएँ सुलझाना, अपनी असफलताओं से सीख लेकर आगे बढ़ना और इसी प्रकार के अन्य गुणों और क्षमताओं को सीखेंगे।
>
> इसका एक हिस्सा है करियर एक्सप्लोरेशन, जिसमें हम ऐसे अनुभवी लोगों से मिलेंगे जिनकी जीवन-यात्रा के बारे में जानने की हमें उत्सुकता है। आपके जैसे 10 लोगों का इंटरव्यू लेकर मुझे आपके कार्य-जीवन (Work-life) को समझना है और आपके संघर्ष, सफलताओं और सीख के बारे में आपके विचार जानने हैं।
>
> यदि आप मुझे आधे घंटे का समय इंटरव्यू के लिए दे सकें तो मुझे बहुत-कुछ सीखने का अवसर मिलेगा। क्या आप मेरी सहायता करेंगे?"

- परिचय देने वाले विद्यार्थी को जोड़े का दूसरा विद्यार्थी रचनात्मक फ़ीडबैक देगा। (2-3 मिनट)
- दोनों विद्यार्थी आपस में भूमिकाएँ बदलेंगे और यह प्रक्रिया दोहराएँगे।
- सभी जोड़े जब इस प्रक्रिया को पूरी कर लेंगे, तब कुछ जोड़े कक्षा के सामने आकर रोल-प्ले कर सकते हैं और बाकी विद्यार्थी उन्हें रचनात्मक फ़ीडबैक दे सकते हैं।

इंटरव्यू के दौरान | ध्यान रखने योग्य बातें (1 पीरियड)

परिचय

अब इंटरव्यू लेने की हमारी पूरी तैयारी हो चुकी है। इंटरव्यू के लिए हम अलग-अलग लोगों से मिलेंगे। ऐसे में अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना भी बहुत ज़रूरी है। आइए, कुछ ध्यान रखने योग्य बातों को जानें जिससे हम अपने अनुभव को सफल बना सकें।

फ़ैसिलिटेटर नोट

ध्यान देने योग्य बातों की चर्चा करते समय विद्यार्थियों के मन में आ रहे सभी प्रश्नों को सुनें।

कैसे करें

परिचय के रोल-प्ले के बाद शिक्षक विद्यार्थियों को करियर एक्सप्लोरेशन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें बताएँ:

- इंटरव्यू की तैयारी:
  - जोड़ी बनाकर इंटरव्यू के लिए जाएँ।
  - इंटरव्यू ऑफिस/संस्थान या अन्य सार्वजनिक स्थान में ही करें।
  - इंटरव्यू का स्थल घर या स्कूल से ज़्यादा दूर नहीं होना चाहिए।
  - शाम को 6 बजे के बाद इंटरव्यू न करें।

- इंटरव्यू के दौरान:
  - इंटरव्यू के लिए जाते समय स्कूल का ID साथ लेकर जाएँ।
  - स्कूल यूनिफार्म में इंटरव्यू करने के लिए जाएँ।
  - बातचीत करते हुए सावधानी बरतें।

- इंटरव्यू के बाद:
  - अपना अनुभव शिक्षक को बताएँ।

साझा करें

अब हम करियर एक्सप्लोरेशन करने के लिए तैयार हैं। सभी विद्यार्थियों ने तय कर लिया है कि वे किन लोगों का इंटरव्यू लेंगे, उनको अपना परिचय कैसे देंगे और इंटरव्यू लेने के समय किन बातों का ध्यान रखेंगे। अब हर महीने, जिनका इंटरव्यू लेना है, उनकी सुविधा को ध्यान में रखकर एक-एक इंटरव्यू करेंगे। महीने के आखिरी सोमवार या मंगलवार की EMC क्लास में अपने अनुभव साझा करेंगे।

- अब विद्यार्थी हर महीने विभिन्न करियर्स से जुड़े लोगों के इंटरव्यू करेंगे।
- हर महीने के आखिरी सोमवार/मंगलवार की EMC क्लास में विद्यार्थी इंटरव्यू के अनुभव कक्षा के साथ साझा करेंगे।

इंटरव्यू के बाद | अनुभव साझा करना (हर महीने)

परिचय

करियर एक्सप्लोरेशन के लिए विद्यार्थियों ने अलग-अलग लोगों का इंटरव्यू किया और उनके अनुभवों को सुनकर अपनी समझ बढ़ाई। अब विद्यार्थी अपने अनुभवों पर चिंतन करके जानेंगे कि उन्हें अपने करियर की दिशा से संबंधित क्या-क्या जानकारी मिली।

फ़ैसिलिटेटर नोट

ज़्यादा से ज़्यादा विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें

- हर महीने के आखिरी सोमवार और मंगलवार को EMC पीरियड में विद्यार्थी करियर एक्सप्लोरेशन के अनुभवों पर चिंतन करेंगे और अपने अनुभव क्लास से साथ साझा करेंगे।
- नीचे दिए गए प्रश्नों के अलावा अनुभव साझा करने के और तरीके भी फैसिलिटेटर आज़मा सकते हैं - जैसे, इंटरव्यू को रोल-प्ले द्वारा कक्षा में पुनर्निर्मित (Recreate) करना।

- विद्यार्थी 5-6 के समूहों में निम्न बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं:
    - इस महीने के इंटरव्यू का एक मज़ेदार अनुभव।
    - इस महीने के इंटरव्यू का सबसे बेहतरीन जवाब।
    - जिनका इंटरव्यू लिया, उनके करियर में उपयोगी हों, ऐसी मेरी कौन-सी क्षमताएँ हैं?
    - उनके जैसा काम करने के लिए मुझे कौन-सी क्षमताओं पर काम करना पड़ेगा?

- हर समूह से एक विद्यार्थी क्लास के साथ निम्न बिंदुओं पर अपने समूह के अनुभव साझा करेगा:
    - उनके समूह में विद्यार्थियों ने लिए हुए इंटरव्यू की संख्या।
    - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताया हुआ मज़ेदार अनुभव।
    - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताई हुई नई सीख।
    - किसी एक विद्यार्थी को मिला हुआ प्रेरणादायक जवाब।

C-4 उद्यमियों के साथ संवाद
Live Entrepreneur Interactions

T5A6D7

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों ने अलग-अलग एन्त्रप्रेन्योर (Entrepreneur) की कहानियों से प्रेरणा ली। "उद्यमियों के साथ संवाद" खंड में विद्यार्थियों को अपनी कक्षा में विभिन्न उद्यमियों से रूबरू होने का और उनके अनुभवों के बारे में सवाल पूछने का मौका मिलेगा। उनके साथ सीधी बातचीत करके विद्यार्थी उनकी कहानियों से प्रेरणा लेंगे। वे बड़ा सोचना, अवसरों को पहचानना, निर्णय लेना और गिरकर सँभलना आदि एन्त्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के वास्तविक उदाहरण जानेंगे। साथ ही साथ विद्यार्थी उद्यमियों की कहानियों के बारे में अच्छे से सोचकर, अलग-अलग सवाल पूछने का अभ्यास करेंगे। इससे उनके भीतर लोगों से खुलकर सवाल पूछने का डर और हिचकिचाहट कम होगी।

उद्यमियों के साथ संवाद

- एन्त्रप्रेन्योरशिप के अलग-अलग क्षेत्रों और मौकों की जानकारी
- उद्यमी की यात्रा की समझ - शुरूआत, संघर्ष व सफलता
- सीधी बात के माध्यम से जिज्ञासाओं को शांत करने का मौका

सेशन प्लान

1. भूमिका

3-4 मिनट*

शिक्षक

- उद्यमी का परिचय (1 मिनट)
- माइंडफुलनेस (2-3 मिनट)

2. यात्रा

10 मिनट*

उद्यमी

अपनी प्रोफ़ेशनल यात्रा को साझा करेंगे।

यात्रा के पहलू:

शुरूआत : प्रेरणा और पहले कदम

संघर्ष : समस्याएँ और उनके हल

सफलता : उनके द्वारा प्राप्त सफलताएँ

क्या नहीं साझा करना है?

- अपने उत्पाद/सेवा का विवरण या विज्ञापन
- धर्म, जाति, लिंग, अध्यात्म व राजनीति के के बारे में राय/विचार (opinions)
- विद्यार्थियों के साथ Personal Information (फ़ोन नं., पता इत्यादि।) की लेन-देन।

3. प्रश्नोत्तर

15-20 मिनट*

विद्यार्थी व उद्यमी

- 5-6 विद्यार्थियों का समूह बनाएँ।
- हर समूह आपस में चर्चा करके प्रश्नों की सूची बनाएँ।
- प्रश्नोत्तर - प्रत्येक समूह से एक प्रश्न, उद्यमी के द्वारा 1-2 मिनट में उत्तर।

4. समापन

5 मिनट*

विद्यार्थी

- 2-3 विद्यार्थी इस संवाद से मिली सीख साझा करेंगे।
- सभी विद्यार्थी संवाद के लिए उद्यमी को धन्यवाद देंगे।

* विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर अपनी कक्षा के अनुसार कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

C-5 बिज़नेस ब्लास्टर्स (Business Blasters)

T5A6D7

बिज़नेस ब्लास्टर्स ब्लास्टर्स कक्षा 11 और 12 के पाठ्यक्रम का एक व्यावहारिक घटक (practical component) है। इससे छात्रों को EMC कक्षाओं में सीखी गई बातों का, और अपनी उद्यमशील क्षमताओं का अपने वास्तविक जीवन में अभ्यास करने और लागू करने का अवसर मिलेगा। इसका उद्देश्य उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करना है जिसके द्वारा उन्हें अवसरों को पहचानकर, योजना बनाकर उस पर काम करने का और साथ ही साथ असफलता का विश्लेषण कर उससे सीखने का अवसर मिलेगा।

छात्र टीमों में काम करेंगे और आपसी सहमति से एक उद्यमी विचार (entrepreneurial idea) का चयन करेंगे जिस पर वे अपने विद्यालय के बाहर, आस-पड़ोस के समुदायों में काम करेंगे। छात्रों को ऐसे प्रोजेक्ट विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें जिसमें वित्तीय (Financial), सामाजिक (Social) या पर्यावरणीय (environmental) हित हो। छात्रों के बिज़नेस ब्लास्टर्स के उद्देश्य की खोज में उनका समर्थन करने के लिए उन्हें seed money प्रदान किया जाएगा।

प्रोजेक्ट के दौरान छात्र विचार करके स्वयं विषय का चुनाव करना, प्राथमिकता तय करना, हितधारकों की आवश्यकताओं को समझने के लिए उनके साथ काम करना, बजट और समय-सीमा तैयार करना, चुनौतियों और बाधाओं का सामना करने की योजना बनाकर उस पर काम करना सीखेंगे। अपने प्रोजेक्ट पर काम करते समय विद्यार्थी दिए गए वास्तविक फ़ीडबैक से भी सीखेंगे और सीख के आधार पर अपने काम को बेहतर करेंगे।

बिज़नेस ब्लास्टर्स के लिए दिशा-निर्देश इस प्रकार हैं -

1. विद्यार्थी समूहों में काम करेंगे।
2. विद्यार्थी आपस में विचार मंथन करते हुए दिए गए निर्देशों के अनुरूप अपने विषय का चयन करेंगे।
3. बिज़नेस ब्लास्टर्स को विद्यालय के निर्धारित समय के बाद किया जाएगा।
4. बिज़नेस ब्लास्टर्स विद्यालय या विद्यार्थियों के अपने आसपास के समुदायों में किया जाएगा।
5. विद्यार्थी फ़ैसिलिटेटर के निरीक्षण में Seed Money का प्रबंधन स्वयं करेंगे।
6. प्रोजेक्ट समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाना चाहिए।
7. बिज़नेस ब्लास्टर्स से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ और निर्देश, फ़ील्ड प्रोजेक्ट शुरू होने से पहले बताए जाएँगे।

References

Unit 1

- In conversation with the team behind UrbanClap
  https://youtu.be/WaqSHqgoWp8
- UrbanClap Business CaseStudy |Success Study | How Urbanclap earns | Startuphila
  https://youtu.be/GA4RKwt2gtg
- Meet UrbanClap | The Founders
  https://youtu.be/aEBPdaABZB4
- The Urbanclap Story: Your Go-To Platform For Services
  https://youtu.be/9Amv1IZ3xrg

Unit 4

- Activity: My Breakthrough Moment- Writing a letter to my younger self
  https://www.goalcast.com/2019/08/30/write-letter-to-your-younger-self/
- Activity: A Letter to my past self
  https://www.theodysseyonline.com/letter-to-myself-from-the-past
- Story of Sunil Bhu from the book- Stay Hungry Stay Foolish by Rashmi Bansal

Unit 6

- Johari Window: A tool referred in Activity 3
  https://en.wikipedia.org/wiki/Johari_window

आभार

सलाहकार

श्री मनीष सिसोदिया, माननीय उप मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री, दिल्ली सरकार
श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा), दिल्ली
श्री हिमांशु गुप्ता, निदेशक (शिक्षा), दिल्ली सरकार
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, शैक्षिक, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली

संपादकीय

डॉ सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. तारक गोराडिया, कोच, युवा नेतृत्व कार्यक्रम

समन्वयक

डॉ सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली
श्री विक्रम भट्ट, शिक्षाविद और शिक्षकों के प्रशिक्षण के विशेषज्ञ
सुश्री अंकिता दुबे, दिल्ली असेंबली रिसर्च सेंटर फेलो
डॉ अशोक तिवारी, एसबीवी विवेक विहार, नई दिल्ली
सुश्री कपिला पाराशर, सहायक प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन
सुश्री सुनीला भाटिया, एसकेवी चिराग दिल्ली
सुश्री मोनिका जगोटा, एसकेवी, विकासपुरी

व्यक्ति और संस्थान / गैर सरकारी संगठन

डॉ. तारक गोराडिया, कोच, युवा नेतृत्व कार्यक्रम
श्री मेकिन माहेश्वरी, संस्थापक, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
सुश्री पायल अग्रवाल, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
श्री सहज पारिख, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
सुश्री मानसी जोशी, उद्यम लर्निंग फाउंडेशन, बैंगलोर
श्री राहुल ऑगस्टीन, द ग्लोबल एजुकेशन एंड लीडरशिप फाउंडेशन (टीजीईएलएफ), नई दिल्ली
सुश्री खुशबू कुमारी, अलोहोमोरा एजुकेशन फाउंडेशन, नई दिल्ली

विज्वल डिज़ाइन

श्री सौरदीप घोष, जीएआईए स्टूडियो, नई दिल्ली

हिंदी भाषा संपादन

सुश्री रश्मि सिंह, ब्लूबेल्स इंटरनेशनल स्कूल, नई दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी
डॉ मुकेश यादव, एस. सी. ई. आर. टी., दिल्ली

अस्वीकरण:

इस पाठ्यक्रम में दी गई कहानियाँ वास्तविक लोगों के जीवन से सम्बंधित हैं। कुछ उदाहरणो मेंए कहानी के कुछ भाग उद्यमियों के वास्तविक अनुभवों से थोड़ा भिन्न हो सकते हैं। इन कहानियों का उद्देश्य उनकी जीवन यात्रा के विशिष्ट पहलुओं को उजागर करना है जिससे विद्यार्थी प्रोत्साहित और प्रेरित हो सकें।

सभी कहानियों को केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए चुना गया है। इसलिएए किसी भी व्यक्ति या उनकी कंपनी से जुड़े किसी भी कानूनी मुद्देए चूक या नकारात्मक कार्य के लिए SCERT को उनके समर्थक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

कक्षा 12

Entrepreneurship Mindset | शिक्षक निर्देशिका

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्